श्री अभिराम झा

संवादकला

बिहार सरकार के शिक्षा विभाग
द्वारा स्वीकृत

लेखक

अभिराम झा

आर्यावर्त-उपसम्पादक

प्रकाशक

अभिरामा प्रकाशन, पटना ३

मूल्य १।।।)

अनुक्रमणिका

दो शब्द

समाचार-समितियों और समाचार-पत्रोंमें अधिकृत या अनधिकृत संवाददाताओंकी ओरसे जो भी विवरण मिलते हैं, उनमें अधिकांश वैज्ञानिक ढंगसे लिखित नहीं पाये जाते, जिससे संपादकोंके समयका अपव्यय होता है। कभी-कभी समयापव्यय के भयसे संवाद फेंक दिये जानेपर कई महत्त्वपूर्ण समाचारभी अप्रकाशित रह जाते हैं जिससे पाठकोंकी समुचित सेवामें बाधा पहुँचती है। हिन्दी समाचार-पत्रों और समाचार-समितियोंके लिए तो यह विषय विकट प्रश्नके रूपमें बहुत दिनोंसे उपस्थित है। बहुतसी संस्थाओंके नेता, प्रवक्ता और प्रचारमंत्री भी इस अवैज्ञानिक ढंगसे लिखकर वृत्त-विवरण भेजते हैं कि उप-संपादक उसे देखते ही झुँझला उठता है। इन सबकी प्रारम्भिक कठिनाई दूर करनेमें यदि यह प्रयास कुछ भी उपयोगी सिद्ध हुआ तो सफल समझा जायगा। आशा है, इस सेवाको पत्रकार-जगत् स्वीकार करेगा।

प्रथम संस्करण—
तिथि—१५-१-५५

विनीत
लेखक

संवाद-संकलन

किसी वृत्तान्त-वर्णनात्मक विवरणको वृत्त या समाचार कहा जाता है। 'वह व्यक्ति सड़कोंपर घूमता रहा।'—यह अंश वृत्तान्त-वर्णनात्मक है किन्तु समाचार नहीं है। इसमें समाचारत्व तब होता जब वह व्यक्ति बहुत विशिष्ट होता या कुछ विशिष्ट बात करता। वह मोटरके नीचे आया होता या छेड़खानी आदि में पकड़ा गया होता तो उसके सड़कपर घूमनेमें समाचारत्व आ पाता। उदाहरणार्थ यह भी कह सकते हैं कि उक्त व्यक्ति लन्दनमें पुराने समयमें केलेके छिलके पर फिसल कर मरा होता तथा पुलिस आदि की जाँचसे यह बात सिद्ध होती तो उसके घूमनेमें समाचारत्व आ सकता था। इसमें स्थान और समय भी समाचारत्व प्रदान करनेकेलिए बहुत महत्त्व रखते हैं। केलेके छिलकेपर फिसलकर प्राण गँवा देना उन विदेशोंके लिए तथा उन समयोंमें समाचार बना होगा जिन विदेशोंमें या जिस समय केलेके छिलकेका सड़कपर पड़ा होना असाधारण विषय रहा होगा। पहले लन्दन आदिके लिए यह समाचार होता था। अब वहाँभी वैसी बात नहीं रही। यत्र-तत्र केलेका आयात-निर्यात होनेसे सड़कोंपर केलेके छिलकेका पड़ा होना वहाँभी साधारण विषय बन गया है। हमारे यहाँ तो ऐसी बात कभी नहीं थी और न होनेकी आशा ही है। यहाँ उत्तम सड़कोंके अभावमें केलेके छिलकेपर फिसलकर प्राण निकलनेकी घटनाकी संभावना क्योंकर हो ! इस प्रकार यह स्पष्ट है कि घटनाविशेषमें समाचारत्व स्थान और समयानुसार होता है। अन्नके अभाववाले

क्षेत्रसे अन्नका निर्यात हो, प्रतिबन्धके अन्तर्गत पड़ी वस्तुओंका निर्यात हो तथा असंभावित कोई घटना घटे तो वह समाचार है। 'ब्राह्मणने पूजा की'—इसमें समाचारत्व नहीं है। 'ब्राह्मण ने पूजा नहीं की'—इसमें समाचारत्व है। वेश्याका परपुरुषके साथ पाया जाना समाचार नहीं है, किन्तु कुलीनाका परपुरुषके साथ सम्पर्क भी चर्चाका विषय बन समाचार बन जाता है।

समाचारको जाँचकी कसौटीपर ठीक उतरना चाहिये। आप संवाददाता हैं। आपको घटना-विशेषका वृत्त या संवाद लिखकर समाचार-पत्र कार्यालयमें भेजनेका भार है। आप बहुत लम्बा-चौड़ा विवरण देनेपर धन्यवाद-पात्र नहीं हो सकते। आपको देखना है कि विवरण पूर्ण हो और पाठकोंको कुछ और जाननेकी अपेक्षा नहीं रह जाय।

प्रारम्भमें आपको समाचार-विशेषका कहींसे आभास मिला। आपका कर्त्तव्य हो जाता है कि आप उस सूत्रके निकट पहुंचें जहाँ से आपको कुछ विवरण मिलनेकी आशा हो। सूत्रविशेषके पास पहुँचकर चातुरीके साथ विवरण प्राप्त करना और उसे आकर्षक तथा सुव्यवस्थित रूपमें उपस्थित करना ही संवाददाता का कर्त्तव्य है।

जन-जीवनका क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है तथा उसके नये-नये आकर्षक अंग बढ़ रहे हैं। समाचार-संग्रहका क्षेत्र भी जन-जीवनके क्षेत्रके साथ ही बढ़ रहा है। इस प्रकार संगृहीत विवरण कच्चे मालकी भांति है और उससे उत्पादित वस्तु, अर्थात् विवरण जितना ही रोचक होगा उतना ही प्रतियोगितामें आगे स्थान पायगा। साथही यह प्रश्न भी है कि समाचारके क्षेत्रोंके बढ़ जानेके कारण चुने समाचारोंका ही वितरण वांछनीय तथा उपादेय है।

स्थूल रूपमें समाचारोंके विवरण दो प्रकारसे तैयार किये जाते हैं—(१) सादा विवरण (२) दृष्टिकोण-विशेषपर आधारित विवरण। यहाँ यह भी बता देना प्रासंगिक है कि समाचार-पत्र जन-जीवनका दर्पण है। इसमें घटनाओंके विकासका प्रतिबिम्ब रहता है। दिन-प्रतिदिनकी घटनाओंका यह दिन-प्रतिदिन अभिलेख तैयार करता है। इसमें घटनाओं, जनताके विचारों और कार्योंका चित्रण होता है।

देहाती क्षेत्रके एक साधारण गाँवमें साधारण नाटक-मंडली द्वारा भी नाटकका अभिनय उस क्षेत्रसे निकट सम्बन्ध रखनेवाले समाचार-पत्रके लिए महत्त्वपूर्ण समाचार हो सकता है यदि उस नाटक-मंडलीसे आयी आयसे किसी अस्पताल या विद्यालय-भवन का निर्माण होनेवाला हो। ग्रामीण क्षेत्रोंमें वहाँसे सम्बन्ध रखनेवाला साधारण समाचार, जैसे बांध बांधने या नहर खोदने के सम्बन्धमें प्रकाशित समाचार-अधिक रुचिके साथ पढ़ा जा सकता है। गाँववालोंके लिए लोक-सभामें नागरिकता-बिल पर हुई बहसके समाचारसे उनके क्षेत्रके उत्थान आदिसे सम्बन्ध रखनेवाला समाचार कहीं अधिक रोचक सिद्ध होता है। रुचियां विभिन्न प्रकारकी होती हैं और उन्हीं पर समाचारोंका स्थानीय या साधारण (व्यापक) आकर्षण निर्भर करता है। जनताके हितोंकी बातोंको संवादमें स्थान देना बहुत आवश्यक है, इसमें तो दो मत हो ही नहीं सकते। साथही उसके अहितकी बातोंको प्रकाशमें लाकर उसके विरुद्ध उसे सावधान करना संवादका लक्ष्य होना चाहिए। यह अभी तक नहीं देखा जा रहा है क्योंकि हम अपनी प्रारम्भिक अवस्थासे ही गुजर रहे हैं। उदाहरणार्थ—आप देखते हैं कि अमुक स्थानपर साँप मारकर सड़कपर फेंक दिया गया, किन्तु उसकी उपेक्षा कर आगे बढ़ जाते हैं। आप

यह नहीं सोचते कि इसके काटे (अस्थि) से किसीका जीवनान्त हो सकता है।

इस प्रकारका भी समाचार होता है जो सबके लिए समरूप से आकर्षक हो सकता है। यह है वह जो मानव मात्रसे संबन्ध रखता है। कुछ विशिष्ट पत्रकारोंने ठीक ही कहा है-'मानव भावके बारेमें लिखो, वस्तुओंके बारेमें नहीं'। प्रेम, घृणा और उत्तेजना आदि—ऐसे मानव भाव हैं जो सबके लिए आकर्षक होते हैं। ऐसे समाचारोंमें व्यक्तिविशेष विषय या पात्र रहते हैं।

इस कोटिके समाचारको उपस्थित करनेका श्रेय संवाददाता का होना चाहिये। वह साधारण घटनाको भी रोचक ढंगसे उपस्थित कर उसे राष्ट्रिय महत्त्वका समाचार बना सकता है। कोई समाचार ऐसा भी होता है जो प्रथमतः तुच्छ मालूम होता है, किन्तु अनुसंधान तथा संबद्ध सूत्रोंसे संपर्क स्थापित कर प्रश्नोत्तर के बाद उसमें कुछ ऐसी संभाव्यता आ जाती है कि वह राष्ट्रिय रुचि पैदा करनेमें क्षम सिद्ध हो जाता है।

संवाददाताकी योग्यता

परम्परागत ढंगसे संवाददाताकी जो योग्यता मानी गयी है उसका किसी भी संवाददातामें होना आवश्यक है। (१) संवाद-दातामें समाचारकी महँक लेनेकी क्षमता, (२) यथार्थ लिखनेकी प्रवृत्ति और (३) मितशब्दता अपेक्षित है।

समाचारकी महँक लेनेकी क्षमता—यह किसी संवाददातामें जन्मके साथ ही नहीं आती। अनुभव और जानकारीसे लोग यह क्षमता प्राप्त करते हैं। संवाददाता प्रतिदिन संवादका पता

लगाता, संग्रह करता और लिखकर संपादकके पास भेजता है। समाचार-पत्र प्रकाशित होते ही संवाददाताको यह समझनेका अवसर मिल जाता है कि संपादकका निर्णय किस समाचार-विवरणके प्रति कैसा हुआ। सपादककी स्वीकृति, अस्वीकृति या संशोधन संवाददाताको समाचारविशेषका महत्त्व बता देनेमें पर्याप्त हो सकता है। इस प्रकार संवाददाता किस घटनामें समाचारत्व है, यह समझनेमें सफलता पा सकता है।

व्यावहारिक दृष्टिसे समाचारत्वका ज्ञान प्राप्त करनेके लिए कुछ और भी तत्त्व हैं जो इसी पुस्तकमें आगे चलकर बताये गये हैं।

<u>यथार्थ लिखनेकी क्षमता</u>—सही सही नाम, स्थान और वर्ण-विन्यास यथार्थ ज्ञान करानेके लिए आवश्यक हैं। इसमें संवाददाताको विशेष ध्यान देना चाहिये। घटना-विशेषमें कुछ भी संदेह हो जानेपर विभिन्न सूत्रोंसे उसकी जांच कर लेना सबसे अधिक आवश्यक है। किसी समाचारके किसी अंशकी जानकारी न मिलनेपर उसके स्थानपर स्वयं कुछ गढ़कर रख देनेका अभ्यास कभी नहीं लगाना चाहिये।

विवरणविशेषके लिए आंकड़ा संग्रह करनेके समय स्पष्ट लिखनेका अभ्यास लगाना त्रुटिसे रक्षाका पहला मोर्चा है। घटना या समाचारविशेषके सम्बन्धमें किसीसे भेंट करनेके समय जल्दीबाजीमें अस्पष्ट नोट लिखनेका अभ्यास तथा अधूरे प्रश्नोत्तर संवाद-विवरणको त्रुटिपूर्ण बना देते हैं।

नौसिखुए संवाददाताको छोटी त्रुटियोंका परिणाम भयावह भले ही न लगे, किन्तु संपादकके लिए वह बहुत ही भयावह प्रतीत होता है। संपादक इस प्रकार सोचता है—'अमुक समा-

चारमें एक व्यक्तिके नाममें गलत वर्ण लिख दिया गया जिससे पत्रका एक हितेच्छु सर्वदाके लिए इसके पाठकोंकी सूचीसे हट गया। पाठक प्रतिपाद्य विषयमें एक भी त्रुटि पाकर यह समझ सकता है कि अमुक समाचारका समूचा विवरण गलत है। यदि ऐसी त्रुटियां अधिक हुईं तो लोग समाचार-पत्रकी खिल्लियां उड़ायंगे तथा उसके अस्तित्वको हिला देंगे।'

मितशब्दता—समाचार, वृत्त या संवादमें मितशब्दता बहुत ही उपादेय सिद्ध होती है, और यही वह वस्तु है जो पत्रकार-संवाददाताको साधारण लेखकोंसे पृथक रखती है।

परीक्षणोंके आधार पर यह पता लग चुका है कि आधुनिक बृहत् समाचार-पत्रोंको अक्षरशः पढ़नेमें लगभग चौदह घंटे लगते हैं। वैज्ञानिक ढंगसे गवेषणा करनेपर यह भी ज्ञात हो चुका है कि अधिक पाठक ऐसे होते हैं जो दैनिक-पत्रोंको पढ़नेमें आध घंटेसे अधिक समय नहीं लगाते। आधुनिक जन-जीवनकी व्यस्तताको दृष्टिमें रखते हुए संवाददाताका कर्त्तव्य हो जाता है कि वह खास ढंगसे सीधी भाषामें व्यस्त पाठकके सामने संवाद रखे जिससे बेचारा पाठक अपने विभिन्न कार्य-कलापोंमें व्यस्त रहनेपर भी यथासंभव शीघ्रताके साथ संवादके विषयको समझ ले। इसको दृष्टिमें रखकर ही संवाददाताके लिए मित-शब्दता आवश्यक समझी गयी है।

यथासंभव कम शब्दोंसे अधिक शब्दोंका काम लेनेका अभ्यास इस लक्ष्यकी पूर्त्तिमें सहायक सिद्ध हो सकता है। संवाद तैयार करनेके बाद वह पुनः अपने विवरणपत्रकी ओर दृष्टिपात करे और सभी अनावश्यक शब्दोंको हटाकर शब्दोंका इस प्रकार पुनः संघटन कर दे जिससे अभिप्रेत अर्थकी पूर्ति होनेके साथ शब्दों

की कमी हो जाय। उदाहरणार्थ एक संवाद नीचे उद्धृत किया जाता है जो मितशब्दताको दृष्टिमें रखे विनाही तैयार किया गया है :—

"श्रममंत्रीका विचार है कि नये वेतन-स्तरमें इतनी वृद्धि हो, जिससे वह पुराने वेतन-स्तरसे डेढ़गुना हो जाय।"

मितशब्दताको ध्यानमें रखनेपर उक्त संवाद इस प्रकार हो सकता है :—

"श्रममंत्रीका पुराने वेतन-स्तरमें ५० प्रतिशत वृद्धिका विचार है।"

देखिये, उद्देश्य सिद्ध हो गया किन्तु शब्दों और अक्षरोंकी संख्या घट गयी।
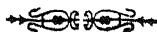
संवाददाताका कार्य

समाचारपत्र-उद्योगों तथा समाचार-समिति-संस्थाओंके विकासमें, या यों कहिये कि पत्रकार-कलाके अभ्युत्थानमें संवाद-दाताओंका स्थान सर्वोत्कृष्ट कहा जा सकता है। स्थूल दृष्टिसे इन उद्योगोंकी ओर दृष्टिपात करनेवालेको तो वह बहुत ही तुच्छ प्रतिभासित होता है, किन्तु सूक्ष्मदृष्टिसे पर्यवेक्षण करनेवालेको यह माननेमें तनिक भी विलम्ब नहीं होता कि अमुक पत्र या समा-चार-समितिके विकासका मेरुदण्ड संवाददाता ही है। इनका काम होता है संवाद-प्रकाशन और वितरण जिसमें संवाददाता के हार्दिक तथा श्रमपूर्ण सहयोगके विना सफलता आकाश-कुसुमके समान ही असम्भव है।

संवाददाताका कार्य है संवाद-संकलन जिसमें क्षमता प्राप्त करनेके लिए प्रारम्भमें उसे संपादकीय विभागमें बैठकर अनुभव प्राप्त करना पड़ता है। शिक्षार्थीके रूपमें वह संपादकीय विभाग में बैठकर छोटी-मोटी घटनाओंको लिखता, टेलीफोनपर सार्व-जनिक क्षेत्रों और सूत्रोंसे आँकड़े लेता और निर्दुष्ट प्रसंगोंपर विवरण तैयार कर विभागीय प्रधानकी स्वीकृतिके लिए उपस्थित करता है। इस अवधिमें संवाददाता पत्रकारकी भांति नहीं बल्कि किरानीकी भांति अपना समय बिताता है। बादमें उसे अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण काम सौंपा जाता है। वह घटनाविशेषके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करनेके लिए क्षेत्रविशेषमें इसके अन-न्तर प्रेषित किया जाने लगता है।

प्रत्येक संवाददाताके लिए कोई खास क्षेत्र या इलाका (भौगोलिक) निर्धारित रहता है जहाँ वह समय बनाकर घूमा करता है। वह जिन व्यक्तियोंको संवादका सूत्र समझता उनसे मिलकर संकेत लिया करता है। विश्वविद्यालय अंचल, कालेज, क्लब, विकास-योजना क्षेत्र, खेलके मैदान, विधायक-क्षेत्र, राजनीतिक दलोंके कार्यालय, न्यायालय, सचिवालय, कचहरियाँ, मुख्य जलपानगृह, मंत्रियों तथा अफसरोंके मुहल्ले तथा अस्पताल आदि ऐसे स्थान हैं जहाँ एक-आध बार चक्कर काटनेसे समाचार या उसका संकेत मिलना सम्भव रहता है।

नये संवाददाताको कुछ दिनोंतक पुराने संवाददाताओंके साथ इन स्थानोंका परिचय प्राप्त करना आवश्यक होता है। उसे उन लोगोंके यहाँ प्रवेशार्थीके रूपमें पहले जाना पड़ता है। येही व्यक्ति पीछे उसके लिए संवाद देनेके सूत्रके रूपमें काम करते हैं।

नौसिखुआ संवाददाता इस विषयमें सावधान रहे कि संवाद किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। 'कोई समाचार या संवाद है ?'—इस प्रश्नके साथ चक्कर लगानेसे वह परिचित सूत्रों से भी संवाद प्राप्त करनेमें पूर्णतया सफल नहीं हो सकता। बहुत महत्त्वपूर्ण संवाद रहनेपर भी वह उसकी अधूरी ही जानकारी प्राप्त कर लौट सकता है।

संवाददाताको संवाद ग्रहण करनेकी चातुरी या कलाका विकास करना चाहिये। वह प्रत्येक विषयमें असाधारण और अप्रकाश्य बातोंको निकालनेके लिए खास ढंगकी प्रश्नावली तैयार करे। इसके लिए वह उचित ढंगसे 'चट्‌कार' का प्रयोग करे। उदाहरणार्थ :—

> 'बिड़लाकी गद्दीमें पहुँचनेपर उसे कहा गया—'बिड़ला जी कलकत्तेसे बाहर गये हैं।' अब उसे जानना है-'वे कहाँ गये हैं ? कबतक बाहर रहेंगे ? परिवारके साथ गये हैं ? अवकाश या वाणिज्यके दौरेपर गये हैं ?—आदि।'

इस प्रकार सुव्यवस्थित प्रश्नावलीसे संभव है कि असली बात निकल जाय और केवल उनके जाने तथा लौटनेके समाचार से कहीं अधिक रोचक यह समाचार निकल जाय कि वे अमुक वाणिज्यकी संभाव्यताकी जाँच करनेके लिए अमुक क्षेत्रमें गये हैं।

अनिच्छुक व्यक्तियोंसे भी समाचार-पत्रोंके लिए उपयुक्त दैनिक संवाद या आँकड़े निकलवानेकी क्षमता धीरे-धीरे व्यावहारिक अनुभवसे प्राप्त होती है। आरम्भमें संवाददाताको श्रमसे नहीं भागना चाहिये। वह निर्धारित इलाकेसे दूर दूर तक चक्कर लगाने तथा यत्र-तत्र पूरे पैमानेपर मित्रों तथा परिचितोंकी संख्या बढ़ानेका अभ्यास लगावे। राजनीतिक क्षेत्रों और सामाजिक क्षेत्रोंके प्रमुख व्यक्तियोंसे परिचय बढ़ाना संवाददाताके कार्यके लिए वरदान सिद्ध होता है क्योंकि महत्त्वपूर्ण विषयोंसे सम्बद्ध रहनेके कारण उनसे स्पष्ट रूपसे या चातुरीसे महत्त्वपूर्ण संवाद मिलनेकी संभावना रहती है। इसी प्रकार अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण क्षेत्रोंमें स्थित व्यक्तियोंसे भी कभी कभी बड़े-बड़े संवाद मिल सकते हैं। टेलीफोन-आपरेटरों, किरानियों, पानकी दुकानों और होटलोंसे भी महत्त्वपूर्ण संवादोंका संकेत मिल सकता है।

संवाददाताको 'सर्वव्यापी' कहा गया है, अर्थात् उसे सर्वत्र उपस्थित रहना चाहिये, किन्तु वस्तुतः यह असम्भव है। कोई समाचार-समिति या समाचारपत्र-संस्था सभी स्थानोंमें अपना संवाददाता नहीं रख सकती। यह बहुव्यय-साध्य है। अतः प्रत्येक समाचार-संस्थामें संवाददाताओंकी संख्या नियत रहती है और प्रत्येक संवाददाताके लिए क्षेत्रविशेषका कार्यक्रम निर्धारित रहता है। यह भी असम्भव है कि क्षेत्रविशेषकी प्रत्येक घटनाके समय वह स्वयं उपस्थित रहकर प्रत्यक्षदर्शीके रूपमें अपना आंखों-देखा विवरण दे। यही कारण है कि उसे कई सूत्रोंसे दैनन्दिन संपर्क स्थापित कर संवाद-ग्रहण करना पड़ता है। संवादप्रदानमें सर्वाधिक उर्वर पुलिस क्षेत्र होता है।

आधुनिकतम पुलिस विभागोंने केन्द्रीय कार्यालय कायम कर रखा है जहाँ सभी क्षेत्रोंसे टेलीफोन और टेलीटाइप आदि साधनों द्वारा तुरत ही घटनाओंके संवाद पहुँच जाते हैं। इस प्रकार पुलिसके कार्यालयमें घटनाके दर्ज होनेके बाद ही संवाददाता उसे जान लेता है, और संभव होता है तो घटनास्थलपर दौड़कर पूरा विवरण तैयार कर लेता है। जिलोंके संवाददाता भी इसी प्रकार जिलेकी घटनाएं जान लेते तथा उन्हें समयपर कार्यालयमें तार, टेलीफोन अथवा पत्र द्वारा प्रेषित करते हैं।

विशिष्ट क्षेत्र

कुछ क्षेत्र या इलाके ऐसे होते हैं जिनका क्षेत्रविशेष (भौगोलिक) नहीं होता। खेल-कूद, राजनीति, श्रमक्षेत्र, विज्ञान आदि इस कोटिमें आ सकते हैं। इन विषयोंका विवरण तैयार करने

के लिए विषयविशेषमें गाढ़ अभिरुचि अपेक्षित है। ऐसे क्षेत्रोंके विशेषज्ञोंसे परिचय संवाददाताके लिए विशेष महत्त्वपूर्ण और उपादेय सिद्ध हो सकता है।

पुस्तकों, नाटकों, चल-चित्रों, रेडियो, कला और संगीत आदि की समीक्षाके लिए वृहत् समाचार-सघटनोंमें विशेषज्ञ रहते हैं। साधारण समाचार संघटनोंमें, स्थानीय समारोहोंमें हुए उपर्युक्त विषयोंके आयोजनोंके संवादके साथ ही संवाददाता उपर्युक्त काम भी कर लेता है।

संवाददाताकी दैनन्दिनी

संवाददाताको एक दैनन्दिनी (डायरी) चाहिये जिसमें एक पेन्सिल लगी रहे और गन्तव्य स्थानों तथा दर्शनीय व्यक्तियों, अफसरों और अधिकारियोंके नाम अंकित रहें। जरूरी नहीं कि सभी गन्तव्य स्थानोंमें वह जाय ही और सभी अफसरोंसे वह जाकर ही मिले। यथासम्भव टेलीफोनसे भी वह काम करता है और आवश्यक होनेपर स्वयं जाता भी है। अपनी डायरी के अलावा संवाददातासे यह भी आशा की जाती है कि वह कार्यालयमें जाकर इधर-उधरसे आये नये निमंत्रणों और सूचनाओंके सम्बन्धमें समाचार संपादकसे जानकारी प्राप्त करे, और आवश्यक हो तो समाचार-संपादकके आदेशानुसार आपेक्षिक महत्त्वपूर्ण स्थानोंमें स्वयं जाय। इससे यह भी हो सकता है कि पूर्वनिर्धारित सभी गन्तव्य स्थानोंमें वह स्वयं नहीं जा सके और कुछ स्थानोंको छोड़ना पड़े, ऐसी स्थितिमें वह अवशिष्ट स्थानों से संभावित विवरण टेलीफोन आदि पर प्राप्त कर ले सकता है।

नमूनेके लिए डायरीकी प्रतिलिपि यहाँ उपस्थित की जाती है जो किसी समाचार-संघटनके मुख्य संवाददाताके लिए उपयोगी हो सकती है :—

मुलाकातके लिए

कारपोरेशनका प्रशासक

पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट

जिला मजिस्ट्रेट

कारपोरेशनका हेल्थ अफसर

फोन :—

अस्पताल, पुलिस केन्द्रीय कार्यालय, दमकल स्टेशन

कल होनेवाला समारोह :—

प्रधानमंत्रीका पत्र-सवाददातासम्मेलन ।

कल हुई बैठक

कोशी-समिति, किसान रैली

कारपोरेशनका प्रशासक :—इनके कार्यालयमें कारपोरेशनकी बैठक हुई है और विषयसूचीमें (१) कर-वृद्धि (२) नये नालोंका निर्माण तथा (३) छँटनीका प्रश्न है ।

संवाददाता अधोलिखित संवाद तैयार करता है :—

कारपोरेशनके प्रशासकने घोषणा की कि परिषद्‌ने १० प्रतिशत करवृद्धि करनेका निर्णय किया है । नये नालोंके निर्माण तथा छँटनीके प्रश्नपर विचार पहली जनवरीकी बैठकके लिए स्थगित किया गया ।

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट :—अपराधवृद्धि तथा गिरफ्तारियोंके सम्बन्धमें नवीनतम स्थितिका पता लगाकर संवाद तैयार करना ही पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टसे भेंटका उद्देश्य है। संवाददाता जानकारी प्राप्त कर संवाद तैयार करता है :—

"पटना नगरमें इस सप्ताह ५ प्रतिशत अपराधोंकी वृद्धि हुई—ऐसा आज प्रकाशित पुलिस-विज्ञप्तिमें बताया गया है। इस सप्ताह कुल एक सौ व्यक्ति गिरफ्तार हुए।"

जिला मजिस्ट्रेट :—खाद्यान्नकी स्थिति और बेरोजगारीके सम्बन्धमें जिला मजिस्ट्रेटसे आवश्यक जानकारी प्राप्तकर संवाद-दाता अपना विवरण इस प्रकार उपस्थित करता है :—

"पटनेमें इस मास खाद्यान्नकी स्थिति गत मासकी अपेक्षा अच्छी रही क्योंकि रबी फसल हो जानेसे सरकारी दुकानोंपर दबाव कम पड़ा।—उपर्युक्त आशयकी सूचना आज जिला मजिस्ट्रेटने हिन्दुस्थान समाचारके संवाददाताको दी।

लघु सिंचाई-योजनाओंमें मजदूरोंको काम मिलनेसे बेरोजगारीकी स्थितिमें भी सुधार हुआ बताया गया।"

कारपोरेशनका हेल्थ अफसर :—इनसे संवाददाताको विगत दिन हैजेसे मरे और आक्रान्त लोगोंकी प्रकाशित संख्याके बादकी गतिविधिकी जानकारी प्राप्त करनी है। साथ ही उसे यह भी मालूम करना है कि निवारणात्मक कारखाई किस अंश तक कार्यान्वित हुई है। वह अपेक्षित प्रश्नोत्तरके बाद संवाद तैयार करता है :

करता है। :—

"आज हैजेसे पाँच व्यक्तियोंकी मृत्यु हुई और १० व्यक्ति आक्रान्त हुए। कलकी अपेक्षा स्थितिमें सुधार हुआ है, यह आज प्रकाशित स्वास्थ्य-विज्ञप्तिसे ज्ञात हुआ है। हेल्थ अफसरने यह भी प्रकट किया है कि २५ व्यक्ति सूई देनेके लिए तैनात हैं और अभीतक ५ हजार व्यक्तियोंको निवारक सूई दी जा चुकी है।"

अस्पताल :—अस्पतालमें दुर्घटनाओंमें आहत होकर भर्ती होनेवालोंकी संख्या इस सप्ताहान्त कितनी रही, यही विवरण अपेक्षित है। संवाददाता विवरण तैयार करता है :—

"मोटर और रिक्शा दुर्घटनाओंमें आहत होकर अस्पतालमें भर्ती होनेवालोंकी संख्या इस सप्ताहान्त ४२ तक पहुँच गयी, इनमें अधिक बसोंसे हुई भिड़न्तकी दुर्घटनाओंमें आहत हुए हैं, ऐसा अस्पतालके अधिकारीसे प्राप्त विवरणसे ज्ञात हुआ है।"

पुलिस केन्द्रीय कार्यालय तथा दमकल स्टेशनसे भी इसी प्रकार संवादका संकलन कर संवाददाता विवरण तैयार करता है :—

कल होनेवाली बैठकका समाचार भी संवाददाताके लिए आवश्यक कोटिमें ही रहता है। वह इस प्रकार संवाद तैयार करता है :—

"प्रधानमंत्री कल ५ बजे संध्याकाल स्थानीय कांग्रेस कार्यालयमें होनेवाले पत्र-संवाददाताओंके सम्मेलनमें अपने कोशी-क्षेत्र भ्रमणके अनुभवपर प्रकाश डालेंगे।"

बहुतसे बड़े-बड़े समाचारपत्र और आकर्षक ढंगसे इसे प्रस्तुत करते हैं। वे उसके लिए पत्रमें स्थानविशेष निर्धारित कर देते हैं जहाँ अधोलिखित ढंगसे उपर्युक्त आशयका संवाद प्रकाशित होता है:—

"आजका कार्यक्रम

दस बजे दिनमें विद्यापति-स्मृति-सप्ताहके अन्तिम दिनका समारोह स्थानीय सिनेट हॉलमें डाक्टर अमरनाथ झा की अध्यक्षतामें सम्पन्न होगा। सबकी उपस्थिति प्रार्थित है।"

इसमें इस अंश तक सतर्कता अवश्य अपेक्षित है कि 'आज का कार्यक्रम' उसी संवादके ऊपर बैठाया जाय जो संवाद-पत्रके उक्त संस्करणकी प्रकाशन तिथिको होनेवाले समारोहके सम्बन्धमें हो।

पिछली बैठकके समाचारका ज्ञान उसके सम्बन्धमें आनेवाले और संवादोंके सम्बन्धमें संवाददाताको तैयार रखता है जिससे वह पुनरावृत्तिका शिकार होनेसे बचता है।

आज हुए पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलनमें प्रधानमंत्रीने जो बताया, उसका समावेश संवाददाता इस प्रकार करेगा :—

"कोशीकी बाढ़से लगभग दस हजार एकड़ भूमि जलमग्न है और लगभग १० लाख व्यक्ति क्षतिग्रस्त हैं। इस वर्षकी विभीषिका गत वर्षकी विभीषिकासे अधिक है।—इस प्रकार का अनुभव प्रधानमंत्रीने आज कांग्रेस कार्यालयमें पत्र-संवाददाता सम्मेलनमें व्यक्त किया।"

इस विवरणको अनुविवरण कहते हैं।

संवाददाताकी योग्यतावृद्धि और सांस्कृतिक विकासके लिए यह भी आवश्यक है कि वह यथासंभव उपायोंसे अपनेको विविध वस्तुओंकी जानकारीसे सज्जित करे। साहित्य, विज्ञान, विभिन्न देशोंके विधान तथा दिन-प्रतिदिनकी साधारण और विशिष्ट घटनाओंका ज्ञान उसके लिए बहुत ही आवश्यक है। पत्रकारिताके क्षेत्र में उसकी अभ्युन्नतिके लिए इन विषयोंके ज्ञानकी चरमपरि-

णाति बहुत ही उपादेय है। पत्रकार सुशिक्षित तथा विषय-विशेषका विशेषज्ञ होनेपर आगे बढ़नेमें अपने प्रतिद्वन्द्वियोंको परास्त करनेका अवसर शीघ्र प्राप्त करता है।

संवाददाताकी दृष्टि पैनी होनी चाहिये और वह विषयको संकेतमात्रसे समझनेकी क्षमता रखे। यह शक्ति उसे होनेवाले घटनाचक्रोंके ज्ञानसे प्राप्त होती है। सफल संवाददाता नित्य-प्रति घटनेवाले वृत्तों (सम्वादों)का पंडित होनेके कारण इतिहास और राजनीतिमें अन्य लोगोंकी अपेक्षा अधिक ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

वृत्त-विवरणकी परीक्षा

वृत्त, जिसके 'समाचार', 'संवाद' और 'रिपोर्ट'—आदि विभिन्न नाम हैं, वाणिज्यकी वस्तु बन चुका है। गोष्ठी, दो या उससे अधिक मित्रोंके बीच वृतका कथन वाणिज्यकी दृष्टिसे नहीं होता, किन्तु समाचार-समितियों और समाचारपत्रोंमें स्थान पानेपर वह क्रय-विक्रयका पदार्थ बन जाता है। अस्तु, यह एक पृथक् ही प्रसंग है जिसका प्रतिपादन पूर्णरूपमें करना अनावश्यक है। सम्प्रति यह देखना है कि उपर्युक्त प्रकारके वृत्त-विवरणके कलेवरकी परीक्षा किस कसौटीपर हो सकती है। बड़े बड़े पत्र-कारोंने इसके लिए 'षटक्कार' के सिद्धांतको उपयोगी माना है। आजकलके समाचारपत्रोंके लिए जो वृत्त तैयार किया जाता है, उसमें देखना चाहिये कि षटक्कारोंके उत्तरका ध्यान रखा गया है या नहीं। ये हैं:—क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे। यह आवश्यक नहीं कि जिस क्रममें ये 'षट्क्कार' यहाँ दिखाये गये हैं, उसी क्रममें उनके उत्तरका निवेश संवादमें हो।

षट्क्कारका सिद्धांत

उदाहरणार्थ—आपको समाचार संपादक आदेश देते हैं कि आप रेलवे स्टेशनके निकट हुई खून-खराबीका वृत्त-विवरण तैयार करें। उक्त आदेश कहीं अधिक उपादेय होता, यदि षटक्कारके सिद्धांतको दृष्टिमें रखकर दिया गया होता। किसने, किसको, कब, कहाँ, कैसे और क्या किया ?—कहा जाता तो आप उक्त षटक्कारोंका उत्तर तैयारकर पूर्ण संवाद बनानेमें सफल हो जाते। बहुत व्यक्ति 'सप्तम ककार 'क्यों'को भी आवश्यक मानते हैं

और 'खून-खराबी'के कारणको भी स्थान देना आवश्यक समझते हैं। सप्तम ककारसे संवादमें और पूर्णता तो अवश्य आती है, किन्तु इसका उत्तर अधिक घटनास्थलोंमें तुरत नहीं मिल पाता। साथही यह घटनाके कानूनी पहलूको कुछ ऐसी स्थितिमें डाल देता है कि न्यायालयमें मामलेके पहुँचनेसे पहले भी लोग उसपर अपना निर्णय देने लगते हैं। इसका असर न्यायालयपर भी पड़ सकता है जो वैधानिक दृष्टिसे वांछनीय नहीं है।

> आज पाँच बजे प्रातः स्थानीय रेलवे-स्टेशनके निकट रामलाल नामक एक दुकानदारने देवदत्त नामक छात्रको पटककर छुरेसे उसकी हत्या कर दी। हत्याका कारण पूर्वागत बैर बताया जाता है।

इस संवादके दूसरे (अन्तिम) वाक्यमें प्रतिपादित कारण असत्य निकला तो पाठकोंको इस सम्पूर्ण संवादके सम्बन्धमें कुछ क्षणके लिए भ्रम पैदा हो सकता है। साथ ही यह भी संभव है कि उसने पैसेके लालचमें उसे पटका हो और बादमें इधर-उधर अन्यको न देख उसकी हत्यामें अपनी मुक्तिकी संभावना देखी हो। इसलिए सप्तमककारसे स्वतंत्र पत्रकारिताको कलंक लग जानेकी शंका बनी रह सकती है। जहाँ तक 'षट्ककार'का प्रश्न है, किसीको उसकी उपादेयता तथा आवश्यकता स्वीकार करनेमें आपत्ति नहीं होगी। इसलिए यह कार्य नये संवाददाताके लिए नहीं रहता। बड़े दैनिक समाचारपत्रों तथा समाचार-समितियोंमें यह भार अनुभवी संवाददातापर ही सौंपा जाता है।

संवाद-विज्ञान

षट्ककारका उपरि-प्रतिपादित सिद्धांत ही संवादलेखनका मुख्य विज्ञान है। वृत्त-लेखन कलाको नियमोंमें जकड़ना तो

कठिन है, किन्तु नियमोंपर ध्यान रखना उपादेय अवश्य कहा जा सकता है। संवाददाता विषय-विशेषको कुछ विशिष्ट प्रभावोत्पादक ढंगसे उपस्थित करता है, यह तो सर्वसम्मत व्यापक नियम है। ऐसी स्थितिमें संवाददाता परिधिविशेषसे बाहर होकर भी सफलता प्राप्त करता है।

संवादलेखन-विज्ञानमें प्रवेशार्थी सर्वप्रथम समाचार-पत्र सामने रखे। विषय-विशेषोंके जैसे—'महिला जगत', 'खेलकूदके मैदानसे'—आदि स्तम्भोंको छोड़कर वह सीधे संवादविवरणोंपर नजर डाले। चुनकर एकआध संवाद पढ़नेपर संवाददाताको कुछ ऐसे संवाद मिलेंगे जिनके नीचे 'प्रेस ट्रस्ट', 'हि० स०', 'यू० प्रेस' 'नेशनल प्रेस' आदि संकेत लिखे होंगे। ये संकेत कहीं समाचारोंके प्रारम्भमें और कहीं अन्तमें लिखे जाते हैं।

अपने चुने संवादको पढ़नेके समय संवाददाता संवाद-लेखन-शैलीपर ध्यान दे। वह पायगा कि संवाददाताका व्यक्तिगत विचार या भावावेशोंका उसमें निवेश नहीं है। वृत्त (संवाद)में नमक-मिर्च लगाना अनुचित माना गया है। सीधे-सादे वृत्त-विवरण प्रस्तुत करनेके लिए आपके सामने दूसरा भी नियम है:— (१) टिप्पणी या आलोचना नहीं करना, (२) उपदेश या विचार नहीं प्रकट करना और (३) अपने हृदयके भावोंके अनुरूप हर्ष-विस्मयादिका संकेत न देना।

आपने अभी अभी वृत्तपत्रमें जो संवाद पढ़े हैं, उनमेंसे किसीमें उपर्युक्त नियमोंका कुछ अंश तक उल्लंघन भी पाया जा सकता है। यदि नियमका उल्लंघन अपालन या भंग हुआ है तो उसे उल्लंघन, अपालन या भंग ही समझना चाहिए, नियमोंके अपवाद नहीं। समान्यतः व्यावहारिक दृष्टिसे, नियमका उद्देश्य यह है

कि संवाद वास्तविक तथा पक्षपातरहित ढंगसे उपस्थित किया जाय।

किन्तु मान लीजिये कि अमुक संवाददाताका मनोभाव अमुक विषय पर पक्षपातपूर्ण (प्रभावित) है और वह उक्त विषय-का संवाद तैयार करने बैठा है। आप पूछेंगे कि वह उस संवाद में पक्षपातपूर्ण नीति बरतने से कैसे बच सकता है! इसका उत्तर आपको उस चिकित्सककी क्रियामें मिल सकता है जो अपने कार्यके उच्चादर्शका सच्चा अनुयायी होनेके कारण अपने कट्टर दुश्मनकी भी शल्यक्रिया (आपरेशन) विहित विधिसे संपादित करता है। अपने भावावेशादिपर नियंत्रणकर वस्तुका यथातथ विवरण किस प्रकार तैयार किया जा सकता है, इसका उदाहरण अधोलिखित संवादमें मिल सकता है—

> स्थानीय अस्पतालमें एक १२ वर्षीया युवतीने शिशु जना है। आज जन्मका १० वाँ दिन है। जच्चा और शिशु दोनों कुशल हैं। डाक्टर पाण्डेयने, जिन्होंने जनन-कार्यकी देख-भाल की, जच्चाका नाम और शिशुका लिंग नहीं प्रकट किया। अस्पतालके एक अफसरने बताया कि शिशुके पिताकी उम्र १५ वर्षकी है।
>
> ये माँ-बाप कुछ मास पहले कलकत्तेमें साथ-साथ रहते थे। गर्भावस्थामें माता यहाँ लायी गयी— ऐसा जानकार सूत्रोंने बताया। उस समय विवाह दर्ज करनेके अधिकारीने माताकी उम्रपर विचारकर दोनोंका वैवाहिक सम्बन्ध दर्ज करना अस्वी-कार कर दिया था।

इस संवादमें संवाददाताने बड़ी सावधानी बरती है। इसमें भावावेशको प्रश्रय मिलनेकी संभावना थी। संवादके कुछ तत्त्व

ऐसे हैं, जिनसे नैतिकता तथा अन्य प्रकारके भावोंसे स
विचार पैदा हो सकते थे। इन तत्त्वोंके बावजूद संवाददात
अपने हृदयका किसी प्रकारका रंग उसपर नहीं पड़ने दिया
विषयको पल्लवित-पुष्पित न कर यथातथ वर्णन कर देनेकी शै
ने यहाँ संवाददाताको सफलता प्रदान की है। पाठकोंको इ
पूरा अवसर दिया गया है कि वे अपनी अपनी प्रतिक्रियायें स
अनुभूत करें। संवाददाताने घटनाके सम्बन्धमें अपनी अनुभ
या प्रतिक्रिया बिलकुल गुप्त रखी है। संवाद-लेखन विज्ञान
दृष्टिमें यही वह संवाद हो सकता है जो 'यथातथ'की संज्ञा
सके। ज्ञात या अज्ञात रूपमें अनुभूतिविशेष सूचक एक ही श
घुसेड़ दिये जानेसे संवाद किस प्रकार 'अयथातथ' बन
सकता है, इसका उदाहरण इस संवादमें देखें :—

"मातृभाषाका शत्रु देशका शत्रु है"—यह जोरदार चेतावनी
राष्ट्रपतिने कल सिनेट हॉलमें भाषण करते हुए दी।"

यहाँ संवाद-विज्ञानके नियमका भंग 'जोरदार' शब्दसे हुअ
है, क्योंकि यह लेखकके अपने निजी विचारका व्यापक है। कु
पाठक उनकी चेतावनीको 'जोरदार' नहीं भी मान सकते है
इसके विपरीत वे यह भी समझ सकते हैं कि ऐसे शब्दका निवेश
धृष्टता-मूलक है। वे संवाददाताके इस कार्यको अनुचित भ
समझ सकते हैं। उक्त संवादका संपादन करनेवाले सफ
संपादक तो हर हालतमें 'जोरदार'के अस्तित्वको सह्य नहीं क
सकते और वे उसे हटा ही देंगे।

संवादलेखनविज्ञानके अनुसार संवाददाताकी यह बड़ी त्रुटि
है यदि वह अपने संवादको अपनी अनुभूतिकी छापसे मुक्त रखने
में असमर्थ होता है। यथातथ संवादविवरण ही उससे वांछित

ऐसे हैं, जिनसे नैतिकता तथा अन्य प्रकारके भावोंसे सम्बद्ध विचार पैदा हो सकते थे। इन तत्त्वोंके बावजूद संवाददाताने अपने हृदयका किसी प्रकारका रंग उसपर नहीं पड़ने दिया है। विषयको पल्लवित-पुष्पित न कर यथातथ वर्णन कर देनेकी शैली ने यहाँ संवाददाताको सफलता प्रदान की है। पाठकोंको इसमें पूरा अवसर दिया गया है कि वे अपनी अपनी प्रतिक्रियायें स्वयं अनुभूत करें। संवाददाताने घटनाके सम्बन्धमें अपनी अनुभूति या प्रतिक्रिया बिलकुल गुप्त रखी है। संवाद-लेखन विज्ञानकी दृष्टिमें यही वह संवाद हो सकता है जो 'यथातथ'की संज्ञा पा सके। ज्ञात या अज्ञात रूपमें अनुभूतिविशेष सूचक एक ही शब्द घुसेड़ दिये जानेसे संवाद किस प्रकार 'अयथातथ' बन जा सकता है, इसका उदाहरण इस संवादमें देखें :—

"मातृभाषाका शत्रु देशका शत्रु है"—यह जोरदार चेतावनी राष्ट्रपतिने कल सिनेट हॉलमें भाषण करते हुए दी।"

यहाँ संवाद-विज्ञानके नियमका भंग 'जोरदार' शब्दसे हुआ है, क्योंकि यह लेखकके अपने निजी विचारका द्योतक है। कुछ पाठक उनकी चेतावनीको 'जोरदार' नहीं भी मान सकते है। इसके विपरीत वे यह भी समझ सकते हैं कि ऐसे शब्दका निवेश धृष्टता-मूलक है। वे संवाददाताके इस कार्यको अनुचित भी समझ सकते हैं। उक्त संवादका संपादन करनेवाले सफल संपादक तो हर हालतमें 'जोरदार'के अस्तित्वको सह्य नहीं कर सकते और वे उसे हटा ही देंगे।

संवादलेखनविज्ञानके अनुसार संवाददाताकी यह बड़ी त्रुटि है यदि वह अपने संवादको अपनी अनुभूतिकी छापसे मुक्त रखने में असमर्थ होता है। यथातथ संवादविवरण ही उससे वांछित

है। संवाददाताको इस अपराध से व्यवस्थित समाचारपत्र या समाचार वितरणसंघटन मुक्त नहीं कर सकते।

दृष्टिकोणविशेष-मूलक संवाद

ऐसे भी उदाहरण बहुत मिलते हैं जिनसे यह प्रकट होता है कि संवाददाता व्यक्तिगत विद्वेषवश या समाचारपत्र अथवा समाचारसमितिकी निर्धारित नीतिके वश संवादविशेषमें तोड़-मरोड़कर कुछ विषयोंको हटा तथा कुछ विषयोंको घुसेड़कर पाठक के हृदयको खास दिशामें मोड़नेका कर्म करता है। वैसे संवाद-दाताकी यह नीति इसलिए होती है कि पाठकोंके हृदयमें अमुक प्रकारकी ही प्रतिक्रिया हो। इसीको 'दृष्टिकोणविशेष मूलक' संवाद कहते हैं। इस प्रकारकी संवादलेखनशैली स्वतंत्र पत्र-कारिताकी पुरानी परम्परापर आघात करती है। संस्थाविशेषोंमें 'दृष्टिकोणविशेष मूलक' संवाद तैयार करनेकी छूट संपादकोंको रहती है, किन्तु संवाददाताओंको नहीं। कहीं किसी संवाददाता-को वह छूट रहती भी है तो खास ढंगसे। कहनेका तात्पर्य यह है कि सामान्यतया संवाददाताके रूपमें संवाददाताका यह काम नहीं कि वह 'दृष्टिकोणविशेष मूलक' संवाद तैयार करे। खास-कर वह संवाददाता, जो नौसिखुआ हो, अपने समाचार संघटन की इस नीतिको जानते हुए भी कि वह अमुक विषयपर अपना खास दृष्टिकोण प्रचारित करना चाहता है, स्वतंत्र रहनेका प्रयत्न करे। उससे आशा की जायगी कि वह समस्याविशेषपर बिना नमक-मिर्च लगाये यथातथ संवाद भेजेगा। संपादकके पास पहुंच जानेपर संवादविशेषका क्या रूप हुआ, यह संवाददाताके नियं-त्रणसे बाहरकी वस्तु है।

आप समाचारपत्रमें प्रकाशित उन समाचारोंके, जिन्हें आपने चुना है, प्रथम दो अनुच्छेद पढें। अब आपको देखना है कि

उनमें "षट्ककारों"का उत्तर है या नहीं। वह समाचारका मुख्यांश है, अतः यह भी देखना आवश्यक होगा कि उसमें संवादके सबसे महत्त्वपूर्ण अंशका निवेश है या नहीं। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि प्रारम्भिक मुख्यांशमें ही संवादके प्रकृष्ट अंगका सारांश आ जाय। संक्षेपमें यह कहा जा सकता है कि कहानी और नाटक आदिकी तरह संवादका प्रारम्भ नहीं होता। इसमें प्रारम्भिक अंशमें ही संवादके सर्वप्रमुख तत्त्वोंका निवेश हो जाना चाहिये। बादमें विवरण तथा अन्य पहलुओंका आपेक्षिक महत्त्वको दृष्टिमें रखते हुए निवेश होना चाहिये।

अब दूसरी बात यह रही कि ये दो अनुच्छेद अन्य प्रकारके लेखोंके प्रारम्भिक अनुच्छेदकी अपेक्षा संक्षिप्त रहेंगे। अनुच्छेद की पहली पंक्तिमें आप पायगे कि वह अभिरुचिका स्रोत है। इस प्रकारका अनुच्छेद स्वतंत्र अभिरुचिकेन्द्रके रूपमें आपके सामने आयगा। आपके लिए यह नमूना होगा और इस प्रकार तैयार किया गया आपका संवाद तुरत ही ग्राह्य होने लग जायगा।

संक्षेपमें परीक्षा

इस दृष्टिसे संवाद विवरण अधोलिखित नियमोंके अनुकूल होगा :—

(१) संवादके प्रथमांशमें ही "षट्ककारों"का या उनमेंसे कुछ का उत्तर प्राप्त हो। (२) प्रारंभिक अनुच्छेदमें संवादके सर्व-प्रकृष्ट विषयका सारांश हो, प्रारम्भिक पंक्ति या वाक्यमें ही वैसी व्यवस्था हो सके तो और उत्तम। (३) मुख्यांश, जिसे 'आमुख' भी कह सकते हैं, संवादके विषयका वातावरण उपस्थित करता हो और बादमें महत्त्वपूर्ण वस्तुओंका क्रमिक (प्रथमतः महत्त्वपूर्ण,

उसके बाद उससे कम महत्त्वपूर्ण) विकास किया गया हो। (४) संवाददाताका व्यक्तिगत विचार संवादमें नहीं घुसेड़ा गया हो, वह वही लिखे, जो कि वह जानता हो, न कि वह जो कि वह महसूस करता हो। (५) सभी अनुच्छेद आपेक्षिक क्रमसे संक्षिप्त हों और सब अपना अपना आकर्षण प्रथम ही पंक्तिमें उपस्थित करते हों।

संवाद्की मूल सामग्री

संवादकी 'मूल वस्तु' आपकी वह सामग्री है, जिससे आपको संवाद निर्माण करना है। समाचारपत्र या समाचार-समितिके समाचारसंपादक आपसे आशा करेंगे कि आप रोचक तथा उचित ढंगसे उसे उनके सामने रखें। समाचारत्वकी दृष्टिसे किसी घटनाको उपस्थित करनेमें खास ढंगकी चातुरी अपेक्षित है, जिससे घटनाक्रमका स्पष्ट चित्र मिल सके।

आपका संवाद जिस सूत्रसे प्रसारित होता है, उसका क्षेत्र भी बराबर आपकी दृष्टिमें रहना चाहिये। किसी प्रान्तीय पत्रमें जो समाचार बहुत लम्बे-चौड़े शीर्षकके साथ प्रकाशित किया जा सकता है वही राष्ट्रिय प्रसिद्धिके पत्रमें साधारण महत्त्व के साथ स्थान पा सकता है। किसी प्रान्तका उच्च अफसर किसी अनैतिक कार्यमें शराबखानेमें पीटा जाय तो वह उस प्रान्त के पत्रके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। वही राष्ट्रिय महत्त्वके पत्र में साधारण समाचारके रूपमें स्थान पा सकता है न कि दिनके सर्वोत्कृष्ट समाचारके रूपमें।

आपको यह भी ध्यान रखना है कि राष्ट्रिय ख्यातिका कोई नेता आपके क्षेत्रमें कब पहुँचता है। ऐसे व्यक्तिका आगमन आपके लिए महत्त्वपूर्ण समाचार है क्योंकि वह आपके क्षेत्रमें आया है जहाँका दर्पण आपका पत्र है। आप ऐसे व्यक्तिके यहाँ महत्त्वपूर्ण विषयपर प्रश्नोत्तरके लिए भी पहुँचे। हो सकता है कि किसी विवादग्रस्त विषयपर आपको बहुत बड़ा मसाला मिल जाय।

जनप्रिय सरकार संघटित हो जानेके बादकी बात है। प्रान्तीय राजधानीनगरके अस्पतालमें नगरके विभिन्न भागोंसे एक-सौसे अधिक रोगी एक ही दिनमें भर्ती हो चुके थे। लगभग दो सौ व्यक्तियोंकी दो दिनोंके भीतर मृत्यु हो चुकी थी। रोगियोंकी संख्या जाननेके लिए मैं अस्पतालके एक अधिकारीसे मिला।

अन्य प्रश्नोंके उत्तरके बाद मैंने पूछा—"स्वास्थ्य मंत्री इस विषयमें क्या कर रहे हैं?" अधिकारीने उत्तर दिया कि उन्हें सूचना दे दी गयी है किन्तु अभीतक वे यहाँ नहीं पहुँचे हैं। दूसरे दिन यह समाचार—"राजधानीमें हैजेसे सैंकड़ोंकी मृत्यु"—इस पूर्ण पृष्ठके शीर्षकके साथ प्रकाशित किया गया। चार स्तम्भोंके दूसरे शीर्षकमें यह बताया गया—"स्वास्थ्य-मंत्रीके दर्शन तक नहीं"।

इसका बहुत असर पड़ा और उसी दिन पूरे पैमानेपर निरोध और चिकित्साकार्य शुरू हो गया। किसी वृत्तपत्र या वृत्तविवरण-संस्था के एक दिन के वृत्तों पर दृष्टि डालनेसे ही पता चल जाता है कि अधिक वृत्त केवल वृत्तविवरणात्मक (सीधे-सादे ढंगसे प्रतिवेदित और सपादित) रहते हैं। विशिष्ट संवाददाताओं तथा कार्यालय-संवाददाताओंकी ओरसे आये वृत्त विशिष्ट आकर्षक और रुचिजनक ढंगसे प्रकाशित होते हैं।

वृत्त-विवरणको बहुत लम्बा बना देनेसे उसमें स्पष्ट दृष्टिकोण का समावेश या रोचकता नहीं आ जाती। इसका यह अर्थ नहीं कि दृष्टिकोणमूलक समाचार पूर्णतया सही नहीं होते, बल्कि ऐसे समाचार साधारणतया अधिक जानकारी देनेवाले होते हैं। ऐसे वृत्त-विवरणसे वृत्तकी वस्तुका भलीभांति प्रतिपादन हो जाता है।

सादे वृत्त विवरण (यानी वृत्तवस्तुके सुव्यवस्थित ढंगसे लेखन)

के लिए यह आवश्यक है कि घटनाचक्रकी लिखनेके समय तककी पूरी जानकारी रहे, अन्यथा यथातथ वृत्त तैयार किया जाना कठिन है।

उदाहरणार्थ किसी राजनेता या अन्य सामाजिक नेताको ही लें। वे अपने सादे भाषणमें बहुत भूमिका देंगे तथा बहुतस पुरानी बातें कहकर वृत्ताका कलेवर बढ़ा देंगे। वे जो संदेश देन चाहेंगे उसका वातावरण भी अपने भाषणमें ही तैयार करनेका प्रयत्न करेंगे। ऐसा कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता कि ऐसे भाषण या वक्तव्यका कितना कम या कितना अधिक अंश वृत्ताके रूपमें प्रकाशनीय है। बहुतसे छोटे-छोटे पत्र अपने पड़ोसके लोगोंके ही कार्यकलापोंपर निर्भर करते हैं। वे स्थानीय लोगोंकी ही कारवाइयोंको प्रकाशित कर अपने अस्तित्वका औचित्य सिद्ध करते हैं। तुच्छ घटनाओंको भी उनमें बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान मिल जाता है, जो स्थानकी कमी और अधिकसंख्यकी महत्त्वपूर्ण वृत्तोंको दृष्टिमें रखते हुए उचित नहीं कहा जा सकता। इन सारी बातोंको दृष्टिमें रखते हुए यही कहा जा सकता है कि संवाददाताको अनुभव और समाचारपत्र या समाचार संस्थाकी आवश्यकतायें ही इन बातोंकी शिक्षा प्रदान कर सकती हैं।

संवाददाता अन्य विषयोंके साथ अधिकाधिक समाचारपत्र पढ़े। वह समयके साथ आगे बढ़े। जहाँ तक संभव हो, उसे यह भी जानना चाहिये कि पहले क्या कहा गया है, जिससे उसे नयी उक्तियों या टिप्पणियोंको समझनेमें कठिनाई नहीं होगी। जो ताजा हो, वही समाचार है। यह क्षमता अनुभव और जन-जीवनके घटनाक्रमके अध्ययनसे ही प्राप्त हो सकती है। ऐसा नहीं होने पर संभव है कि आप यह नहीं समझ पावें कि अमुक नेता या उद्योगपति बारबार एक ही बात दुहरा रहा है। वह प्रचारके

लिए अपने राजनीतिक सिद्धांतको सर्वत्र दुहरा सकता है। इसीसे बचनेके हेतु आपके लिए अधिकसे अधिक संवादपत्र पढ़ना बहुत उपयोगी है। आप संवाद जितना ही पढ़ियेगा उतना ही नीर-क्षीर विवेकमें निपुण होते जाइयेगा। आप देखेंगे कि उपसंपादक कितना शीघ्र समझ जाते हैं कि कौन वास्तविक वृत्त है। इसका यह अर्थ नहीं कि संवाददाता अपना काम पूरा न कर उन्हींके लिए यह भार छोड़ दे। ऐसी प्रवृत्ति वांछनीय नहीं है। संवाद-दाताकी प्रतिष्ठाका ह्रास या विकास उसके वृत्त तैयार करने के ढंगपर ही निर्भर करता है। वृत्तके महत्त्वको लोग अपनी-अपनी दृष्टिसे परखते हैं। ऐसा नहीं होता तो आप यह नहीं देखते कि एक वृत्तपत्रने जिस वृत्तकी उपेक्षा की है उसे दूसरे पत्रने बहुत अधिक महत्त्व देकर प्रकाशित किया है। आपको यह समझ लेना है कि विभिन्न श्रेणियोंके समाचारपत्र हैं, जो विभिन्न रुचियोंके लोगोंको विभिन्न सामग्री देते हैं। एक समाचारपत्र सीधा-सादा वृत्त-विवरण मांग सकता है, दूसरा रंगा हुआ समाचार चाहता है तीसरा अपराध और न्यायालयके सम्बन्धमें कुछ भी प्रकाशित करना नहीं चाहता या प्रकाशित भी करता तो बहुत कम; और ऐसा भी पत्र होता है जो इन सारी बातोंका रहस्योद्-घाटन करता है। इसलिए आपको सबसे पहले अपने पाठकोंकी ओर देखना है—अपने बाजारका अध्ययन करना है। अपने वृत्त के पाठकोंकी श्रेणी निश्चत कर आप तदनुसार वृत्त दें। आपके पाठक कौन हैं या हो सकते हैं, इसका भी पता आपको अपना वृत्तपत्र ही भलीभांति दे सकता है।

अन्तर्वीक्षा

संवाददाता (वृत्तसंकलयिता) को बहुधा "वृत्त अंकन-पुस्तिका" लेकर चलना चाहिये। जैसा कहा जा चुका है, इस पुस्तिकाके साथ एक पेन्सिल या अन्य प्रकारकी लेखनी आवश्यक है। संवाददाताके सामने ऐसे भी अवसर आते हैं जबकि उसे संवाद-विवरण प्राप्त करनेमें उपर्युक्त उपकरण (पुस्तिका, पेन्सिल आदि) बाधक सिद्ध होते हैं। बहुतसे व्यक्ति विषयविशेषके प्रचारसे डरते हैं। ऐसे लोग यदि समझ जायगे कि उनके नाम समाचारपत्रोंमें प्रकाशित होनेवाले हैं तो वे आपकी जिज्ञासा और प्रश्नोत्तरसे दूर रहनेकी चेष्टा करेंगे। इसलिए आपको जबतक यह नहीं ज्ञात हो जाय कि जिससे आप अन्तर्वीक्षा करना चाहते हैं वह प्रचारसे दूर भागनेवाला व्यक्ति नहीं है, तबतक आपके लिए यही उपादेय है कि आप अपनी पुस्तिका और पेन्सिल या लेखनी अपनी जेबके भीतरसे न निकालें। चतुर और कुशल संवाददाता कठिनसे कठिन अन्तर्वीक्षाके क्रममें हुई प्रश्नोत्तरीके मुख्य विषयोंको पुस्तिकामें अंकित किये बिना भी स्मरण कर पश्चात् लिपिबद्ध कर सकता है, किन्तु अन्तर्वीक्षित व्यक्तिको उत्तमपुरुषमें उद्धृत करनेमें सतर्कता अपेक्षित है। प्रश्नोत्तरके क्रमको स्मृति-पटलपर अंकित करनेका अभ्यास लगाना चाहिये

उत्तर देनेमें अनिच्छु व्यक्तियोंसे वृत्त-विवरणकी सामग्री लेना कठिन है। इसके लिए कुछ विशेष प्रयत्नकी आवश्यकता होती है। आपको वैसी भूमिका और वैसा वातावरण उपस्थित करना होगा, जिससे आपको अभिप्रेत उत्तर मिल जाय। कुछ लोग ऐसे भी मिल सकते हैं, जो आपके प्रश्नके उत्तरमें प्रतिकूल भाव

में बहुत दूर तक तैरकर पार कर गया। गोलियोंकी बौछारसे बचते हुए वह सफलतापूर्वक किनारे पहुँचा। बस, क्या था, बहुत आकर्षक वृत्ताविवरण तैयार हो गया—"गोलियोंकी बौछारके बीच समुद्रमें मीलों पार कर गया।"

व्यक्तिगत अन्तर्वीक्षा

बड़े समाचारपत्रों या समाचारसंघटनोंमें महत्त्वपूर्ण वृत्ताविवरणके लिए अनुभवी संवाददाता ही भेजा जाता है। व्यक्तिगत अन्तर्वीक्षाके दो प्रकार हैं (क) वृत्तैकहेतुक अन्तर्वीक्षा और (ख) रोचक-तत्त्वहेतुक अन्तर्वीक्षा।

वृत्तैकहेतुक या सूचनात्मक अन्तर्वीक्षा सामयिक रुचिके विषयोंपर विशेष जानकारी या विशेषज्ञोंकी राय प्रकाशित करने की दृष्टिसे की जाती है। ऐसी अन्तर्वीक्षाके लिए प्रेरित संवाददाताको अपेक्षित उत्तरदाता (अन्तर्वीक्षय)के व्यक्तित्व, स्वभाव या चेहरेकी खास खूबीसे कोई सम्बन्ध नहीं रहना चाहिये। ऐसे वृत्त के लिए जिस व्यक्तिकी अन्तर्वीक्षा की जाती है, वह साधारणतया किसी क्षेत्रविशेषमें अधिकार-सम्पन्न होता है, या कमसे-कम जिस विषयसे वह अपने पेशेके कारण या सार्वजनिक रूपमें सम्बद्ध समझा जाता है, उस विषयपर ज्ञातव्य विषयोंके उत्तर देनेकी क्षमता रखता है।

रोचक वृत्तहेतुक अन्तर्वीक्षाके लिए कुछ अन्य विषयोंकी ही आवश्यकता होती है। इस उद्देश्यसे जिससे अन्तर्वीक्षा करनी होगी, उसका व्यक्तित्व, स्वभाव, आकृति, इतिहास और सिद्धांत आदि ध्यानमें रखकर संवाददाताको बढ़ना होगा। रोचक वृत्त-अन्तर्वीक्षामें अंशतः, या हो सकता है पूर्णतया ही व्यक्तित्वका चित्रण रहेगा। ऐसे स्थलोंमें संवाददाता केवल यही जाननेकी

चेष्टा नहीं करेगा कि वक्ता विशेषज्ञ या अधिकारीके रूपमें विषय-विशेषपर क्या जानता है, किन्तु यह भी पता लगानेकी चेष्टा करेगा कि वक्ताकी साधारणतया जन-जीवनपर या विशिष्टतया विषय-विशेषपर कैसी प्रतिक्रिया है। ऐसे लोगोंकी प्रतिक्रिया या विचार पाठकोंके लिए रुचिकर सिद्ध होते हैं। लोग यह जानकर भी उत्सुक होते हैं कि वक्ता कौन है—राजनीतिज्ञ, चित्र-अभिनेता या प्रसिद्ध खिलाड़ी अथवा दार्शनिक या साहित्यकार-आदि आदि।

कला और विज्ञानका भेद यहाँ पुनः स्पष्टतया परिलक्षित होता है। रोचक तत्त्ववृत्तहेतुक अन्तर्वीक्षा मुख्यरूपसे कलाका विषय है। सूचनात्मक वृत्तहेतुक अन्तर्वीक्षा पूर्णतया विज्ञानका विषय है। अन्तर्वीक्षाके बाद विवरण तैयार करनेपर 'सूचना-मात्रहेतुक वृत्त' विषय-विशेषकी सूचनाभर (जानकारी) देता है। 'रोचक-वृत्त' विनोदकी सामग्री—मन बहलानेकी सामग्री—प्रस्तुत करता है। यह बात नहीं कि रोचक-वृत्तमें सूचनाकी कोई बात नहीं मिल सकती। बहुधा इसमें भी सूचनात्मक वृत्त मिलता है।

रोचकवृत्त सम्बन्धी अन्तर्वीक्षाका भार साधारणतया नये संवाददाताको नहीं दिया जाता है। अनुभव होनेपर संवाददाता इसका अभ्यास स्वयं लगा लेता है। संप्रति प्रारम्भिक संवाददाताके कर्त्तव्यपर मुख्य रूपसे विचार किया जा रहा है। अतः सूचनात्मक वृत्तसम्बन्धी अन्तर्वीक्षाके विभिन्न अंगोंपर इस अध्यायमें विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

व्यक्तिगत अन्तर्वीक्षाके लिए निर्दिष्ट संवाददाता प्रथमतः अपनेको उस व्यक्तिके सम्बन्धमें, जिससे वह अन्तर्वीक्षा करने जानेवाला है, पूर्ण जानकार बना लेता है। वह अन्तर्वीक्षाके विषयको भी पूर्णरूपसे जानकर आगे बढ़ता है। इसके लिए

समाचारपत्र या समाचार-समितिके कार्यालयमें संकेत-पुस्तिका रहती है जहाँ असंख्य प्रसगोंके संकेत एकत्र कर रखे गये होते हैं। अन्य सूत्र हैं—'कौन क्या है', सामाजिक पुस्तिका, वृहत्‌कोष, वाणिज्य-पत्रिकायें सार्वजनिक पुस्तकालय, संग्रहालय, अध्ययन-संस्थायें, वाणिज्य या विभिन्न पेशोंकी संस्थायें, मित्रवर्ग, परिचित और 'ऐसे लोग जो लोगोंको जानते हों'।

यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि 'सज्जित' करनेका यह अर्थ नहीं कि संवाददाता विषयको वृहत्‌रूपमें ज्ञात करले अथवा उस व्यक्तिके सम्बन्धमें सारे आँकड़े या सामग्री एकत्र करले। संवाददाताके लिए केवल इतना जान लेना पर्याप्त तथा आवश्यक है कि वह जिसकी अन्तर्वीक्षा करने जा रहा है वह किस कारण से विशेषज्ञ है। साथ ही वह उतना अवश्य जान ले जिससे उसे वुद्धिगम्य, उपयुक्त तथा सुन्दर प्रश्न पूछनेकी क्षमता प्राप्त हो सके। वह योग्य तथा दूरदर्शी संवाददाता समझा जा सकता है जो अन्तर्वीक्षाके लिए बिदा होनेसे पूर्व ही कुछ प्रष्टव्य प्रश्न लिख लेता है।

संवाददाता वृत्तविशेषके संग्रहमें पद-पदपर कैसे अग्रसर हो सकता है, यह अधोलिखित उदाहरणसे पता चल सकता है।

समाचार-संपादकने निर्णय कर लिया है कि राज्यकी रोजगारीकी सामान्य स्थिति, जिसमें शरणार्थियोंको काम देनेकी स्थिति भी सम्मिलित है, साम्प्रतिक अभिरुचिका विषय हो सकता है। इसपर गंभीर लेख या विषयकी क्रमबद्ध गाथा (राउण्ड अप)की आवश्यकता नहीं है। उसे अर्धस्तम्भ योग्य या उससे भी कमके सीधे वृत्त-विवरणकी अपेक्षा है। उसे यह भी ध्यान रखना है कि उपर्युक्त वृत्त-विषय आँकड़े तथा विश्वसनीय विचारसे समर्थित हों।

समाचार-संपादक समझता है कि इसके लिए सत्यदेव (संवाददाता) उपयुक्त है, क्योंकि उसको अपेक्षित संकेत आदि प्राप्त करनेमें अन्य संवाददाताकी अपेक्षा अल्प समय लगेगा। हो सकता है कि अन्य संवाददाता आपेक्षिक अधिक समय लगा दे। इसी धारणासे समाचार-संपादक सत्यदेवको उपर्युक्त विषय पर वृत्त तैयार करनेका भार सौंपता है। सत्यदेव समाचारपत्र या समाचार-समिति-संस्थासंबद्ध पुस्तकालयमें, जहाँ अपेक्षित संकेत मिलनेकी आशा है, पहुँचता है। हो सकता है कि वहाँ उसे अपेक्षित संकेत नहीं मिले। मान लीजिये, नहीं मिला। अब सत्यदेव क्या करेगा? संभवतः वह राज्यके कामदिलाऊ विभाग (इम्पलायमेन्ट एक्सचेंज) या अन्य संबद्ध संस्थाको टेलीफोन करेगा। वहाँ भी विफलता हाथ लगी तो वह चुप नहीं बैठेगा, उसका प्रयास जारी रहेगा। वह मजदूर-संघटनों, कालेज या विश्वविद्यालयके अर्थ विभाग, अथवा वाणिज्य-मंडलके कार्यालय से फोनपर सम्पर्क स्थापित करेगा।

इस क्रममें सत्यदेवको अनेक संस्थाओं और अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क होता जायगा और शीघ्रही वह इस स्थितिमें पहुँच जायगा कि कहाँ सही-सही आँकड़ा मिल सकता है। वह फोनपर सम्पर्कमें आये विभिन्न व्यक्तियोंसे यह पूछनेमें बाज नहीं आयगा कि—'कृपया बतावें कि इस सम्बन्धमें आँकड़ा देनेमें कौन अधिकारी सहायता पहुँचा सकते हैं'। अब यह समझा जा सकता है कि सत्यदेवको इसका पता लगानेमें देर नहीं लगेगी कि कौन व्यक्ति उसे प्रश्नोंका ठीक-ठीक उत्तर दे सकता है। लीजिये उसने पता लगा लिया—श्रम-अर्थ विशेषज्ञ श्री दत्त उसे आँकड़े देंगे।

अब सत्यदेव देखेगा कि क्या श्री दत्त उसे अपेक्षित उत्तर देंगे? अपने अनुभवके आधारपर उसे यह समझनेमें देर नहीं

लगेगी। 'वाह, वे क्यों न देंगे? प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका विचार वृत्तपत्रोंमें प्रकाशित हो जिससे उसका प्रचार होगा। क्या श्री दत्त इसके अपवाद होंगे?' सत्यदेवमें दृढ़ता आयगी और वह श्री दत्ताको आश्वासन देगा कि वह श्री दत्ताके विचारोंमें श्रद्धा रखता है और उनके विचारोंको सम्मानके साथ ग्रहण कर प्रकाशित करायगा। इस आश्वासनपर श्री दत्त अपना विचार प्रकट करनेको प्रस्तुत हुए।

अन्तर्वीक्षा प्रारम्भ हुई। श्री दत्ताको जो कुछ कहना है उसे संवाददाता सत्यदेव ध्यानमें सुनता जा रहा है। वह कागजपर अंकित करता जा रहा है किन्तु उसकी यह चेष्टा नहीं है कि श्री दत्त जो कुछ कहें सब बातें अंकित ही की जायँ। सत्यदेव आवश्यक सूचनामें अभिरुचि रखता है। वस्तु, आँकड़ा और उससे निकलनेवाले तर्कपूर्ण निष्कर्षकी ओर उसका ध्यान है जिससे रोजगारीकी वर्तमान स्थितिके (शरणार्थियोंकी रोजगारीकी स्थिति के साथ) सम्बन्धमें सीधा (वस्तुमूलक) वृत्त तैयार हो पायगा।

इसे इस प्रकार समझें कि सत्यदेव सार लेता जायगा और इधर-उधरकी बातें छोड़ता जायगा। वह उन मुख्य तत्त्वोंको अंकित करेगा जिन्हें एकत्र कर लिखनेसे वृत्त बन जायगा। श्री दत्ताकी साक्षात् उक्तिके रूपमें उद्धरणीय विषयोंको वह लिखता जायगा। संवाददाता 'षट्ककार'के सिद्धांतपर भी ध्यान रखेगा जिससे उसे खास-खास उत्तर मिलनेके अवसर मिलेंगे।

यदि श्री दत्त प्रस्तुत विषयपर बोलनेके क्रममें आये हुए किसी प्रासंगिक विषयपर अधिक बहकते नजर आयेंगे तो सत्यदेव उन्हें कुछ छूट देगा और अनन्तर उन्हें विशिष्ट प्रश्न द्वारा क्रमशः प्रस्तुत विषयपर लायगा। ऐसी स्थितिमें संवाददाताको धैर्यसे काम लेना पड़ेगा। ऐसा नहीं होनेसे श्री दत्त उदासीन होकर प्रस्तुत विषय

पर भी संभवतः मौनावलंबन कर ले सकते हैं। इस भयको दृष्टिमें रखकर चलनेवाले संवाददाताको बीचमें नैराश्यका शिकार बननेका भय नहीं रहता है।

विषयकी मुख्य वस्तुओं या उद्धरणीय तत्त्वोंको कागजपर अंकित करते समय सत्यदेवको यह सावधानी बरतनी होगी कि लिखावट स्पष्ट और पढ़ने योग्य हो। वह जानता है कि लिखनेके समय अस्वाभाविक तथा अनुचित रूपसे जल्दीबाजी कर देनेसे बादमें विषयके अयथार्थ तथा त्रुटिपूर्ण होनेका पूरा भय है। वह सावधान है कि बादमें चलकर भ्रामक विषय या भ्रामक उद्धरण देनेका लांछन न लगे। इसके लिए सबसे निरापद मार्ग है कि वह अंकित किये गये तत्त्वों, वस्तुओं और उद्धरणोंको पढ़कर श्री दत्तको सुना दे। सत्यदेव यह भी जानता है कि जिस प्रश्नपर उसे स्पष्ट उत्तर नहीं मिल सका है उसपर वह दुहराकर विशेष स्पष्टीकरणका प्रयास करेगा।

अन्तर्वार्त्ता समाप्त हो गयी। सत्यदेव श्री दत्तको धन्यवाद देकर प्रस्थित हुआ। प्रस्थान करनेसे पूर्व श्री दत्तकी ओरसे सत्यदेवको यदि यह आग्रह प्राप्त हो सका कि वह समय-समयपर ऐसे वृत्तों या सूचनाओंके लिए उनसे (श्री दत्तसे) मिल सकता है तो वह (सत्यदेव) अपने आपको इस कारण बधाईका पात्र समझे कि वह भविष्यके लिए भी वृत्तके हेतु श्री दत्तसे मूल्यवान संपर्क स्थापित कर लेनेमें सफल हो गया।

सत्यदेव संपादकीय विभागमें लौट आया। वह अन्तर्वार्त्ताके समय अंकित विषयोंको पढ़कर सोचेगा—श्री दत्तके कथनोंका स्मरण करेगा और देखेगा कि कोई विषय, जो लिखने योग्य था, उसके स्मृतिपटलसे बाहर तो नहीं हो गया है। यदि वह स्मरण करता है कि अमुक विषय लिखने योग्य था किन्तु अंकित नहीं है

तो वह उसपर भी निश्चित रूपसे जानकारी प्राप्त करनेके लिए श्री दत्तको टेलीफोन करेगा और प्रयत्न करेगा जिससे वह श्री दत्तके मुँहसे उसे हूबहू मिल जाय। वह आलस्यसे ऐसा न करेगा कि कुछ विषय अपनी धूमिल स्मृतिके अनुसार ही लिख दे।

वह भ्रामक संवाद छापनेके कलंकसे रक्षाके लिए अंतिम क्षण तक प्रयत्न करेगा। यदि श्री दत्त टेलीफोनपर उसे संयोगवश उपलब्ध नहीं हो सके और वृत्त देनेका समय निकट आ गया हो तो सत्यदेव अपुनःपरीक्षित अंशको वृत्त-विवरणसे निकाल देगा।

अब सत्यदेव उपलब्ध आँकड़ों, वस्तुओं, उद्धरणों और अन्य सबद्ध तत्त्वोंके आधारपर वृत्त-विवरण तैयार कर सबद्ध विभाग या संस्थाको दे देगा जिसका रूप प्रकाशित होनेपर इस प्रकार रहेगा :—

> 'इस राज्यके मजदूरोंको तुरत या हाल-सालमें बेरोजगारीके संकटका सामना नहीं करना है'—ये विचार हैं श्रम-अर्थ विशेषज्ञ श्री दत्तके जो उन्होंने आज हिन्दुस्थान समाचारके प्रतिनिधिके सामने एक अन्तर्वीक्षामें प्रकट किये।
>
> श्री दत्तका उक्त कथन आर्थिक गतिविधिके अध्ययन और हाल के बेरोजगारीसम्बन्धी सरकारी आँकड़ोंपर आधारित था। 'क्या आवश्यक सामग्रीके अभावमें कुछ उद्योगोंमें रोजगारीकी स्थितिपर धक्का पहुँच रहा है?'—यह पूछे जानेपर श्री दत्तने कहा—'छोटे और बड़े—दोनों प्रकारके उद्योगोंमें सामग्रीकी कुछ कमी आवश्यक है, किन्तु आश्चर्यकी बात है कि कमीके बावजूद गत मास तथा वर्तमान मासमें रोजगारीकी स्थिति और सुधरी है। खास खास अवधिमें चलनेवाले उद्योगोंमें भी रोजगारी वृद्धिकी ओर है।'

अन्य लोगोंके साथ शरणार्थियोंको किस सीमा तक रोजी मिली है,—इस सम्बन्धमें उन्होंने बताया कि गत तथा वर्तमान—दोनों मासोंमें मुफ्त राशन लेनेवाले शरणार्थियोंकी संख्यामें ५० प्रतिशत कमी पायी गयी है।

श्री दत्तने बताया कि भविष्यमें वे आर्थिक गतिविधिके सम्बन्ध में आशावान हैं। उन्होंने कहा कि—'आगामी कुछ दिनों तक पूर्तिसे मांग अधिक रहेगी।'

साक्षात् (वस्तुमूलक) वृत्त-विवरणके लिए जो अन्तर्वीक्षायें होती हैं वे सामान्यतया टेलीफोनपर ही होती हैं। संक्षिप्त अन्तर्वीक्षाओंकी यही परम्परा बराबर प्रचलित रही है।

सार्वजनिक भाषण

सार्वजनिक सभाओं या मंचोंपर जो भाषण होते हैं उनमें संवाददाताओंके सामने मुख्य समस्या रहती है विषयों और मुख्य तत्त्वोंको अंकित करने की। व्यक्तिगत अन्तर्वीक्षामें जिस प्रकार की सुविधा रहती है, उससे भिन्न स्थितिमें यहाँ काम करना पड़ता है। संवाददाता इस स्थितिमें नहीं रहता कि वह अपने अंकित विषय को पुनः परीक्षण द्वारा निश्चित कर ले। वह केवल इतना कर सकता है कि अपने लिखित विषयको अन्य संवाददाताओंसे, जो वहाँ उपस्थित रहेंगे, मिला लेगा।

भाषणके समय संवाददाता केवल उन महत्त्वपूर्ण तत्त्वों और अंशोंको, जिन्हें प्रमाणित कर देनेसे समूचे भाषणका स्थूल रूपमें अर्थ लग जाय, अंकित करेगा। जी-तोड़ प्रयास कर हूबहू भाषण लिखने का प्रयत्न प्रशस्त नहीं। संवाददाता मुख्य पंक्तियों, महत्त्वपूर्ण विचारों या सुप्रयुक्त मुहावरोंको अवश्य अंकित कर ले। शेषके [illegible] वह वक्ताके उपसंहारात्मक विचारोंका संग्रह

कर ले जो सुव्यवस्थित ढंगसे लिखे जानेपर पढ़ने योग्य वृत्त विवरणके रूपमें परिवर्तित हो सके।

सार्वजनिक भाषण हो या व्यक्तिगत अन्तर्वीक्षा, किन्तु इस बातपर हर हालतमें ध्यान रखना होगा क वृत्त-विवरण यदि साक्षात् कथनके रूपमें प्रारम्भमें ही उद्धृत होता है तो दूसरे अनुच्छेदमें यह दिखलाना चाहिये कि किसने और कैसी स्थितिमें कहा। उदाहरणार्थ :—

'भारत अणु-शक्तिका विकास करेगा तो मानवताके कल्याणके लिए·········'

ये विचार हैं पंडित नेहरूके जो उन्होंने संसदमें युद्धरत देशों द्वारा अणु शक्तिके विकासके लिए किये जा रहे कार्यों पर टिप्पणी करते हुए प्रकट किये।

इसी प्रकार यदि वृत्त-विवरणके प्रारम्भमें ही यह कहा गया हो कि—'किसने तथा किस स्थितिमें कहा' तो—दूसरे अनुच्छेदमें वक्ताके कथनका साक्षात् उद्धरण होना चाहिये। उदाहरणार्थ :-

'श्री जयप्रकाशने आज प्रजा-समाजवादी नेताओंको आह्वान किया कि वे भूदानमें सहयोग देनेसे पूर्व अपनी अतिरिक्त (अधिक) भूमिका वितरण कर दें।

श्री जयप्रकाशने यह भी कहा :—वस्तुस्थिति तो यह है कि कितने नेताओं के पास एक हजार एकड़से अधिक जमीन है। वे पहले यह भूमि लोगोंमें बाँट दें तब आगे बढ़ें।'

महत्त्वपूर्ण नेताओंके महत्त्वपूर्ण भाषणको संगृहीत करनेके लिए कदाचित ही संवाददाताको प्रयास करना पड़ता है। उदा-

हरणार्थ नेहरू आदि नेताओंके भाषण विभिन्न समाचार-समिति-योंके कार्यालयोंमें भेज दिये जाते हैं। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि ऐसे लोगोंके हूबहू भाषणकी प्रति अग्रिम ही समाचारपत्रों या समाचार-समितियोंके कार्यालयोंमें उपलब्ध हो जाती है। जिस संस्थाके तत्वावधानमें भाषण होता है उसका भी ऐसा ही प्रयास होता है।

जब अन्ताराष्ट्रिय या राष्ट्रिय ख्यातिके नेताओंके भाषणकी उपर्युक्त प्रकारकी प्रति समाचारपत्र या समाचार-संस्थाके कार्यालयमें नहीं पहुँचती तब संवाददाता ही एकमात्र उपाय रहता है। वैसी स्थितिमें वह विलम्बसे सभा-स्थलमें पहुँचा तो वह भाषणका कुछ अंश नहीं सुन पाता है। हाँ, इतना वह पायगा कि प्रतिद्वन्द्वी समाचार-संस्थाओंके भी संवाददाता उसे अनुपलब्ध अंश दे देंगे। संवाददाताओंकी ऐसी प्रवृत्ति नहीं होती कि वह एक दूसरेका गला काटनेकी नीति बरते। यह बात सही है कि जब संवाददाता किसी विशिष्ट अन्तर्वीक्षाका वृत्त खास ढंगसे उपलब्ध कर चुका रहेगा तो वह प्रतिद्वन्द्वी समाचार-संस्थाके संवाददाताको वह वस्तु नहीं देगा। वह तबतक उसे गुप्त रखनेका भरसक प्रयत्न करेगा जबतक वह उसकी संस्था या समाचारपत्र द्वारा प्रसारित और प्रकाशित नहीं हो जाता। किन्तु साधारण, दैनन्दिन समाचार-संकलनमें प्रायः ऐसा नहीं होता कि वह अन्य संवाददाताको उपलब्ध आँकड़ा आदि देनका कष्ट नहीं करे।

पत्रप्रतिनिधि-सम्मेलन

पत्र-प्रतिनिधि-सम्मेलनको 'सामूहिक अन्तर्वीक्षा' कह सकते हैं। जो अपनी अन्तर्वीक्षा कराना चाहते हैं, सामान्यतः उनके पत्र-सम्पर्क अफसर या [illegible] द्वारा इसका (पत्रप्रतिनिधि-सम्मेलन का) आयोजन कराया जाता है। व्यक्तिगत विशिष्ट अन्तर्वीक्षा

से यह भिन्न है, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं। इसमें नगरके विभिन्न समाचार-पत्रोंके प्रतिनिधि एक साथ उपस्थित होनेको आमंत्रित किये जाते हैं। पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलनमें उत्तर देने या विचार प्रकट करनेके लिए अ नवीक्ष्य व्यक्तिका व्यक्तित्व, महत्त्व, विचार तथा योग्यता आदि विशिष्ट स्तरके होने चाहिये।

समय समयपर विभिन्न संस्थाओं तथा वाणिज्य-संघटनोंकी ओरसे भी पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलनका आयोजन कराया जाता है जिसमें सार्वजनिक महत्त्व और अभिरुचिके वृत्तोंकी घोषणा की जाती है। ऐसे अवसरोंपर मुद्रित, टंकित अथवा लिखित पत्र वृत्तके रूपमें प्रकाशनके लिए पत्र-प्रतिनिधियोंको दिये जाते हैं। ऐसे अवसरोंपर चाय, जलपान, पान आदि भी पत्र-प्रतिनिधियोंके सामने बहुधा पेश किये जाते हैं।

कभी-कभी पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलनका आयोजन औपचारिक मात्र रहता है। पत्र-प्रतिनिधि-सम्मेलनके आमंत्रककी ओरसे बांटे जानेवाले पत्र (टंकित या मुद्रित)को कुछ विशिष्ट महत्त्व दिये जानेकी दृष्टिसे बहुधा ऐसे आयोजन होते हैं। यह निश्चित समझिये कि पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलनका आमंत्रक बहुत सम्मान प्रदर्शित करेगा और उपस्थित व्यक्तियों (अतिथियों)के स्वागतकी ओर विशेष ध्यान देगा। संवाददाताका कर्त्तव्य होगा कि इन स्वागत सम्मानोंसे प्रभावित न होकर वह केवल वृत्त योग्य अंशको ग्रहण कर ले।

संवाददाताकी संकेत लिपि

संकेत-लिपिकी अंग्रेजी और हिन्दीमें जो प्रचलित रूपरेखा है वह संवाददाताके लिए अनिवार्य हो, यह पत्रकार जगतके अनुभवके प्रतिकूल है। इतना तो अवश्य मान्य है कि शीघ्र लिखनेकी कोई प्रणाली संवाददाताके लिए भूषण है।

इसके लिए संवाददाताको स्वयं ही अपने लिए उपयुक्त संकेत-लिपि या यों कहिये कि शीघ्र लिखनेको प्रणाली विकसित करनी चाहिये। यह सर्वत्र प्रचलित पद्धतिसे अधिक उपादेय सिद्ध हो सकती है। वह शब्दोंका संक्षिप्त रूप लिखनेका अभ्यास लगावे तथा साथ ही परीक्षा करके देखे कि वह ठीक उतरता है या नहीं। इस प्रकारकी शीघ्रलेखनप्रणाली या संकेत-लिपि प्रत्येक संवाददाताकी निराली-निराली ही होगी। अभ्यासका अभाव रहने पर यह प्रणाली भ्रामक सिद्ध हो सकती है। उदाहरणार्थ :—

'लो स क हि इ अ स्वी हो चा'

संवाददाता लोक-सभाके सदस्यका भाषण लिख रहा है। प्रसंग तो उसे पूर्णतया स्मृतिपथपर अंकित है। क्रम भी वह जानता है। अभ्यास भी वह लगा चुका है। यदि उपर्युक्त प्रकारकी शीघ्रलेखन-प्रणालीसे वह काम करता है और उसका अधोलिखित अर्थ समझता है तो ठीक है :—

'लोक-सभाके एक सदस्यने कहा कि हिन्दूकोड बिल इसी अधिवेशन में स्वीकृत होना चाहिये।'

ऐसी स्थितिमें किसीको आपत्ति क्यों होगी? संवाददाता अपने अभिप्रेत कार्यमें सफलता पावे, यही तो लक्ष्य है। प्रणाली चाहे जो कोई भी हो, किन्तु शीघ्र तथा ठीक-ठीक समझनेमें गड़बड़ नहीं होनी चाहिये।

इस प्रकारका अभ्यास लगानेके लिए संवाददाताको चाहिये कि वह अंशविशेषको इस प्रणालीमें लिखे और बादमें लिखे गये अंशको सामान्य लेखन-प्रणालीके अनुसार परिवर्तित करे। यदि मिलानेपर वह ठीक निकल जाय तो इसका अभ्यास लगावे। साथ ही यह भी देखे कि समयकी अपेक्षाकृत बचत होती है

अथवा नहीं। अभ्यास करते करते यह उसकी अपनी प्रणाली हो जायगी और उसे बादमें कोई कठिनाई नहीं होगी।

अभी जो उदाहरण दिया गया है वह किसी प्रचलित प्रणाली के अनुसार नहीं। यह एक संभाव्य प्रणालीका नमूनामात्र है। इनसे उत्तम तथा अव्यावृत्त प्रणाली भी अनुभवके आधारपर संवाददाता सीख सकता है और उससे अपने कार्यको लाभ और दूसरेको प्रेरणा दे सकता है।
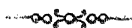
संवादके मुख्य तत्त्व

संपादक जभीसे काम प्रारम्भ करता है तभीसे प्राप्त होनेवाले संवादोंमें स्थान पानेके सम्बन्धमें प्रतियोगिता प्रारम्भ होती है। कहनेका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक संवाद अपनी आपेक्षिक विशिष्टताके कारण प्राथमिकता पाता है। संपादकके इस प्रकारके कार्यको दृष्टिमें रखकर ही संवाददाताओंको भी काम करना पड़ता है। वह भी जिस समाचारके ग्रहणका कार्यभार उठाता है उससे आपेक्षिक विशिष्टता सम्पन्न संवादका संकेत मिल जानेपर उक्त (विशिष्टता सम्पन्न) संवादको ही प्राथमिकता देता है। उसे संपादकसे इसलिए बराबर संपर्क रखना चाहिए। वृत्त पत्रमें प्राप्य स्थानको देखकर ही उसे संवाद ग्रहण करनेमें प्राथमिकता तथा संक्षिप्तताका निर्णय करना है। संवादको प्राथमिकता देनेके कार्यमें कुछ मुख्य वस्तुएं होती हैं जिनसे संवाददाता या संपादक का उस दिशामें पथ प्रदर्शन होता है। ये मुख्य तत्त्व या मुख्य वस्तुएं कौन सी हैं?

आपको इसका उत्तर वह वृत्तपत्र ही देगा जिसमें आपके संवाद प्रकाशित होंगे। किन्तु यह भी समझ लेना चाहिये कि उत्तर सीमित रूपमें—संकेत रूपमें ही मिलेगा। आज जो वस्तुएं संवादके लिए महत्त्वपूर्ण हैं वे कल, हो सकता है, अनुपादेय सिद्ध हों; और आपके स्थानीय दैनिक वृत्त-पत्रमें आज पूरे पृष्ठके शीर्षकके साथ जो संवाद प्रकाशित हुआ है वह हजार मीलोंकी दूरीपर स्थित दूसरे समाचारपत्रमें, हो सकता है, बिलकुल प्रकाशित ही नहीं हो।

संवादके मूल्यांकनके मुख्य तत्त्व ये हैं:—

(१)—पूर्णतया सामयिक, क्या यह नवीन है? क्या यह आज हुआ, गत रात्रि हुआ, कल हुआ? यदि यह कलसे बहुत पहले हुआ तो यह पुराना है, क्या यह ऐतिहासिक महत्त्वका है? "आजका समाचार आज"—यही वृत्त-पत्रकी मान्य नीति है।

समय सूचक शब्द—'कब?' का उत्तर बहुधा वृत्त-विवरण के प्रथम अनुच्छेदमें मिलता है। ऐसा भी होता है कि कलका समाचार आज जब लिखा जाता है, तब संवाददाता लेखक वृत्त-विवरणके प्रथम अनुच्छेदके अन्तमें—'ऐसा आज ज्ञात हुआ' लिखकर जोर देता और उसे सजीवता प्रदान करता है। किन्तु यह बराबरका अभ्यास नहीं होना चाहिए। ऐसे वृत्त-विवरणके दूसरे अनुच्छेदमें यह स्पष्ट किया जाता है कि घटना 'कल घटी'।

(२)—सामीप्य, दो वृत्तोंमें अन्य सभी दृष्टियोंसे बराबर महत्त्व हो, किन्तु एक समीपकी और दूसरी दूरकी घटनाके सम्बन्धमें हो तो समीपकी घटनासे सम्बद्ध वृत्तको प्रमुखता मिलती है। निकटकी घटना दूरकी घटनासे निश्चित रूपसे महत्त्वपूर्ण समझी जाती है। अफ्रिकाकी सर्वनाशकारी महामारीसे निकटका (स्थानीय) अल्पसंहारकारी चेचक ही स्थानीय जनताके लिए अधिक रोचक वृत्त सिद्ध होता है। स्थानीय मुख्य सड़कपर दिनदहाड़े डाकेका समाचार रूसके किसी प्रान्तकी व्यापक भुखमरीके समाचारसे अधिक आकर्षक होता है।

सामीप्यके विशिष्ट पहलूके अतिरिक्त, इससे स्थानीय तत्त्व भी तुरत सामने आता है। 'कहाँ'?—का उत्तर बिलकुल स्थानीय हो जानेपर और उसका भी निवेश वृत्त-विवरणके प्रथम ही अनुच्छेदमें रहनेपर स्वभावतः स्थानीय जनताकी अभिरुचि उसे आदि से अन्त तक पढ़नेकी हो जाती है।

(३)—असर (प्रभाव) या परिणाम (फल):—क्या इसका

असर पाठकोंकी रोटीपर पड़ेगा ? क्या इसका प्रभाव पाठकोंकी नागरिक या वैयक्तिक स्वतंत्रतापर अथवा उनके स्वास्थ्य या साधारण कल्याण-व्यवस्थाओंपर पड़नेवाला है ?

पाठकोंके आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक जीवनपर इसका असर पड़नेवाला है तो यह महत्त्वपूर्ण है। इसी कारणसे शासनारूढ़ एवं प्रतिपक्षी राजनीतिक दलों तथा विधान-मंडलोंकी गति, प्रगति और निर्णयोंका बड़ा महत्त्व होता है। ऐसी अन्य भी स्वायत्तशासन आदि संस्थायें हैं जिनके निर्णयों और अन्य कार्योंका जन-जीवनसे गहरा सम्बन्ध होता है। विज्ञान और शिक्षा, नवल कार्य तथा विचार प्रणाली, यांत्रिक या तांत्रिक आविष्कार तथा इनके प्रयोगोंके फलका आँकड़ा—प्रत्येक पाठकको आकृष्ट करनेमें क्षम सिद्ध हो सकता है। उदाहरणार्थ :—क्षय रोगकी अल्प-व्यय काल साध्य चिकित्सा, वास्तविक परिणामके आंकड़ेके साथ, पूरे पृष्ठके शीर्षकके अन्तर्गत संसारके किसी भी पत्रमें प्रकाशित की जा सकती है।

(४)—प्रमुखता :—इसमें स्थानीय, राष्ट्रिय तथा अन्ताराष्ट्रिय प्रमुखता भी शामिल है। 'समृद्ध', 'सफल', 'सुन्दर' और 'कुख्यात' पाठकोंके प्रिय विषय होते हैं। इनके सम्बन्धमें जिज्ञासा प्रमुख रूपसे उनके हृदयमें रहती है। इसमें प्रमुख संस्थायें तथा महत्त्वपूर्ण विषय भी शामिल हैं।

(५)—अनुविवरण (फौलो अप) :—किसी घटनाका वृत्त (समाचार) प्रकाशित हो जाय और उसके पश्चात् उसके सम्बन्धमें और भी किसी गति-विधिका संकेत मिले तो उसके आधारपर लिखे गये वृत्तको अनुविवरणात्मक वृत्त कह सकते हैं।

(६)—संघर्ष और हिंसा :—व्यक्तिगत संघर्षसे लेकर—विश्व-युद्ध तक इसकी परिधिके अन्तर्गत है। राजनीतिक गुटों, वाणिज्य

संस्थाओं, खेला-दलों और अन्य सभी प्रकारके प्रतिद्वन्द्वियोंके बीच होनेवाले संघर्ष भी इसकी परिधिमें स्थान पा सकते हैं। हत्या, बटमारी, क्रुद्ध जनसमूहका कार्य और सम्पत्तिका ध्वंस आदि हिंसाकी श्रेणीमें आते हैं। इनके विषयमें तैयार किये गये वृत्त महत्त्वपूर्ण होते हैं।

(७)—नाटकीयता और भावावेश (भाव-विकार) :—क्या उसमें रहस्य, सुखान्तता, मौनजनकता, प्रेम, घृणा, भय या ईर्ष्या है?—ये सभी उद्वेजक वृत्तके समान हैं। रोमांच, साहस, विचित्रता और उत्तेजनाजन्य अपराध—उक्त श्रेणीके वृत्तोंकी परिधिमें समझे जा सकते हैं। कुछ अन्य तत्त्व भी उस समय 'नाटकीय' बन जाते जब उनसे जीवन और सम्पत्तिका ध्वंस होता है अथवा स्वाभाविक जीवन यापनके मार्गमें बाधा पहुँचती है।

(८)—अद्भुतता :—असाधारण घटनायें। ये महत्त्वपूर्ण भले ही न हों किन्तु विचित्र अवश्य होनी चाहिये। 'दो सिरों वाला शिशु'—इस कोटिके समाचारका उदाहरण हो सकता है। वास्तविक दृष्टिसे ऐसे समाचार—'मनुष्यने कुत्तेको काटा'—जैसे समाचारोंकी श्रेणीमें गिने जा सकते हैं। कोई घटना पहली वार हो तो वह अजीब या विचित्र कही जा सकती है। इसे ही अद्भुतता कहते हैं।

(९)—महिलायें, अनीति और व्यभिचार आदिके समाचार रसव्यंजक सिद्ध होते हैं। घटना-विशेषमें महिलाका केवल संपर्क रहनेके कारण भी महत्त्व हो जाता है। वैसी ही घटनामें पुरुषका सम्बन्ध हो तो वह समाचार प्रकाशित भी नहीं हो पायगा। 'पतिने पत्नीको पीटा'—से 'पत्नीने पतिको पीटा'—कहीं अधिक रोचक समाचार है।

किसी घटनामें पुरुष और महिला—दोनोंका सभी दृष्टियोंसे समान स्थान रहनेपर भी पुरुष के कारण नहीं, वरन् महिलाके कारण अधिक समाचारत्व आ पाता है। संक्षेपमें यह कहा जा सकता है कि 'महिलायें' समाचारको अत्यन्त रोचक बनानेमें अधिक महत्त्व रखती हैं। इस धारणाको दृढ़ करनेकी दृष्टिसे आप अपने मनमें किसी महिलाको चोर, पहलवान, गंभीर नदी पार करनेवाली या अफीम-गांजेकी गुप्तव्यापारिणीके रूपमें सोचिये—निश्चित है कि आप भी यही महसूस करने लगेंगे।

(१७)—महत्त्वपूर्ण आँकड़े :—जन्म और मृत्यु। बड़े समाचारपत्र नियमानुसार, आपेक्षिक रूपमें प्रमुख जन्म और मृत्युके संवाद प्रकाशित करते हैं। इनसे सम्बद्ध बड़ी समाचार-समिति भी एतदनुरूप ही संवाद भेजती है। आपके पड़ोसके—छोटे शहर के—छोटे सवादपत्र लगभग सभी गमनागमनोंके समाचार प्रकाशित करते हैं। भारतके पत्रोंमें ऐसे स्तम्भको विशेष प्रश्रय नहीं मिल पाया है।

ऐसा नहीं समझ बैठना चाहिये कि ये मुख्य तत्त्व वृत्तके अव्याप्त लक्षण (परिभाषा) हैं। संवाद या वृत्तकी कोई भी ऐसी परिभाषा या लक्षण नहीं बन पाया है जिसपर कोई भी दो पत्र कार पूर्ण रूपसे सहमत हो सके हों। किन्तु पत्रकार-मात्र साधारणतया ऐसे शीष विषयोंपर, जो बहुधा वृत्तके विषय होते हैं, सहमत रहे हैं। पाठकोंका आकषण ही वृत्तका मानदंड है, जिसके निरन्तर अध्ययनके आधारपर जो शीर्ष विषय निर्धारित किये जा सके हैं, वे ये हैं :—

युद्ध, मौसम, खेल-कूद, मानव-हृदय-रोचक तत्त्व, श्रम, विज्ञान, मृत्यु, राजनीति, अपराध, दुर्घटनायें, विनोद-सामग्री, फैशन, समाज आदि।

संवादके मुख्य तत्त्व (जो इस अध्यायमें प्रदर्शित किये गये हैं)—वृत्तकी आकर्षणक्षमताको बढ़ानेवाले उपकरण हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वृत्तमें मुख्य तत्त्वोंकी जितनी पूर्णता और चातुरीके साथ निवेश रहेगा, उतना ही वह आकर्षक और रोचक सिद्ध होगा। इसी प्रकार जिस वृत्त-विवरणसे जितने व्यक्ति सम्बद्ध या प्रभावित होंगे वह उतना ही महत्त्वपूर्ण समझा जायगा। सबसे बड़ा वृत्त वह होगा जिसका प्रत्येक स्थानमें, प्रत्येक व्यक्तिपर असर पड़ेगा। अणु बमसे होनेवाला विश्व-युद्ध इस प्रकारके वृत्तकी श्रेणीमें लिया जाने योग्य है।

इसका अभ्यास डालने के लिए आप कुछ प्रकाशित वृत्तोंको सामने रखें और संवादके मुख्य तत्त्वोंकी सूची भी आपके सामने हो। आप प्रत्येक मुख्य तत्त्वकी परीक्षा कर वृत्तके दायें-बायें अंकित करें। अधोलिखित अनुच्छेदमें कुछ उदाहरण मिल जायँगे:

(क) सामीप्य (पड़ोसकी बात) (ख)—नाटकीयता	आज स्थानीय रेलवे जंकशनके पास दुकानदारोंके आपसी संघर्षमें गोलियोंकी बौछार हुई, जिसमें एक दुकानदार बुरी तरह आहत हो अस्पताल पहुँचाया गया। रामचन्द्र नामक दुकानदारपर छाता कम्पनीके मैनेजरने कई बार गोलियाँ चलायीं जिनमेंसे एक उसके पेटमें लगी।	सामयिकता (ठीक आज ही) हिंसा
संघर्ष	'व्यभिचारिणी पत्नीको पतिकी सम्पत्तिका उत्तराधिकार नहीं है'-इस आशयके स्थानीय उच्चन्यायालीय निर्णयके विरुद्ध श्रीमती शीला	

समाजपर प्रभाव
सामयिकता

ने कल सर्वोच्च न्यायालयमें अपील की। श्रीमती शीलाके पतिके किसी निकट सम्बन्धी द्वारा किये गये आवेदनपर उच्च न्यायालयने उक्त निर्णय सुनाया।

सामीप्य

'आज स्थानीय रामपुर मुहल्लेके एक छोटे बच्चेपर बिजली गिरी जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। बच्चे का एक हाथ उसका भाई और दूसरा हाथ बहन पकड़े जा रही थी। उन्हें किसी प्रकारकी चोट नहीं लगी।

सामयिकता
नाटकीयता

'आज सिनेट हॉलके सामने एक बिखरे बालोंवाली छात्राके बालोंने युवक छात्रका चप्पलोंसे स्वागत कराया और पुलिसवालोंको बुलवाया। कहते हैं उक्त छात्रा परीक्षाफल देख रही थी, इतनेमें उसके बाल सहलाते हुए एक छात्रने मजाक प्रारम्भ किया। छात्राने चप्पलसे उनका स्वागत किया। इतनेमें पुलिस पहुँची। मामलेकी छानबीन हो रही है।'

हिंसा
सामीप्य

भावोद्वेजक
सामयिक
संघर्ष

इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी उससे समझें। ध्यान रहे कि वृत्तमें इन वस्तुओंका यथास्थान निवेश हो।
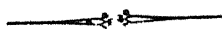
शीर्षक, आमुख और प्रसार

समाचारोंमें शीर्षककी प्रधानता होती है। आपको ऐसा संवाद तैयार करना है जिससे उपयुक्त शीर्षक बननेमें कोई कठिनाई नहीं हो। समाचार-संपादक चाहेंगे कि संवादके उपयुक्त शीर्षक शीघ्र मिलें। शीर्षक ऐसा होता है और होना चाहिये जिससे वृत्त-विवरणका सारांश अवगत हो सके। शीर्षकको दृष्टिमें रखते हुए वृत्त-विवरण तैयार होना चाहिये।

मध्य रात्रिमें दुकानपर छापा

संदिग्ध व्यक्तियों और पुलिसमें एक घंटेतक संघर्ष

सोडा लेमोनेडकी बोतलोंसे हमला

इस प्रकारका शीर्षक वृत्तपत्रमें प्रकाशित हुआ है। इस समाचारका संकेत पड़ोसके एक मित्रने संवाददाताको दिया। वृत्त-विवरण इस प्रकार प्रारम्भ किया गया है :—

'गत १२ बजे रात्रिसे एक बजे रात्रि तक शहरकी एक दुकान में, जिसे पुलिसने एकाएक छापा मारकर जब्त किया, संदिग्ध व्यक्ति और पुलिसवालोंमें संघर्ष जारी रहा। संदिग्ध व्यक्तिने सोडा-लेमोनेडकी बोतलोंस पुलिसवालोंपर प्रहार शुरू किया। बोतलोंके फूटनेकी आवाजसे मुहल्लेके सभी लोग जग गये। पड़ोसके लोग अपनी खिड़कियोंसे इस 'संघर्ष'को देखते रहे। पुलिसने दुकानको घेर तो लिया था, किन्तु भीतर नहीं घुस पा सकी थी। दरबाजा बन्द था। सिर्फ एक छोटी खिड़कीसे बोतलें पुलिसपर बरसती दिखाई दे रही थीं..........'

इसी प्रारम्भको 'आमुख' कहते हैं। आमुखके बाद जो विशेष विवरण दिया जाता है, उसे प्रसार कहते हैं।

यह एक नियम है किन्तु जरूरी नहीं कि इससे अतिरिक्त कोई प्रणाली नहीं अपनायी जा सकती। हर हालतमें इतना तो अवश्य होना चाहिये कि संवादके मुख्य विषय प्रथम ही पंक्तियोंमें लाये जायँ। कुछ समाचार-समितियोंका अभ्यास अलग ही ढंगका होता है। वे वर्णनको रोचक न बनाकर केवल मुख्य बातें देती है। अधोलिखित समाचारको आप देखिये :—

'आज १० बजे दिनमें गयासे पटने जानेवाली एक्सप्रेस ट्रेन और मालगाड़ीमें भिड़न्त हो जानेके कारण दो डब्बे उलट गये, जिसमें २० व्यक्ति मरे और २२ आहत हुए।'

नियमानुसार इसके बाद विवरण दिया जायगा। 'कैसा दृश्य हुआ? कितने आदमियोंके मलवेके नीचे होनेका अनुमान है? किस प्रकार लोग अपने सम्बन्धियोंकी खोजमें व्यस्त देखे गये?'—यही सूचनात्मक वृत्त-विवरण कहलाता है।

आप देखेंगे कि बहुतसे वृत्तपत्र घटना-वर्णनात्मक वृत्त प्रकाशित करेंगे। यदि यह सचमुच ही बड़ी दुर्घटना है तो बड़े-बड़े समाचारपत्रोंके समाचार-संपादक अपने विशिष्ट संवाददाताको विशेष विवरणके लिए घटनास्थलपर जानेको कहेंगे। कुछ विशिष्ट संवाददाता मोटरसे, कुछ विमानसे और निकटके साइकिलसे ही घटनास्थलको दौड़ेंगे। समाचार-संपादक की इच्छा रहेगी कि प्रथमतः मुख्य बातें महत्त्व और प्रमुखताके साथ प्रकाशित कर दी जायँ। बादमें खास दृष्टिकोणसे वृत्तका अनुविवरण प्रकाशित किया जाय। हो सकता है कि इसके पीछे ध्वंस कार्य हो। इंजिन चालककी कर्त्तव्य-विमुखता भी दुर्घटनाका कारण हो सकती है। यह भी हो सकता है कि परिवारको असहाय छोड़कर इंजिन-

चालकने दुर्घटनाको रोकनेके लिए अपने प्राणोंको न्यौछावर कर दिया हो। क्या कोई ऐसा परिवार तो समाप्त नहीं हो गया जो किसी छुट्टीमें घर आ रहा हो ?—क्या रेलवे लाइनके किनारे अन्तिम घड़ियाँ गिनती हुई कोई ऐसी महिला तो नहीं थीं, जो अपने कुत्तेके लिए रो रही हो ?

इन विवरणोंका पता लगाकर वृत्त-विवरण तैयार करनेसे आप पायेंगे कि आपका वृत्त-विवरण अन्य लोगोंके वृत्तविवरणसे भिन्न और रोचक हुआ है।

आप जिस प्रकारका वृत्तविवरण लिखें उसके अनुरूप ही वर्णन-शैली अपनावें। वृत्तविवरणकी रूपरेखा अन्य प्रकारके लेखोंसे भिन्न ही ढंगकी होती है यह तो सर्वविदित है और संक्षेप में पहले भी बतायी जा चुकी है। इसकी विचित्रता यह है कि इसमें सबसे प्रमुख बातें प्रारम्भमें ही आनी चाहिये। अन्य प्रकार की कहानियोंमें प्रायः अन्तमें ही चरमप्रकर्षकी बातें रहती हैं। संक्षेपमें प्रथम अनुच्छेदमें अभिरुचिकी सर्वप्रमुख बातोंका निर्देश ही इसकी विशिष्टता है। उदाहरण तो इससे पूर्व दिया ही जा चुका है। उसमें आप यह भी पायगे कि षट्ककारके सिद्धांतका भी भलीभांति निर्वाह किया गया है। यह आवश्यक नहीं कि सभी ककारोंका उत्तर शीर्षक या आमुखमें ही मिल जाय। प्रसार तक भी कुछ ककारोंके उत्तरका निवेश होना चाहिये।

प्रसारमें घटनाके विवरणके साथ तत्सम्बन्धी चित्रका भी निवेश हो तो सोनेमें सुगन्धके समान है। रेलके ध्वस्त डब्बे, मलवेके निकट पड़े और वहाँ गये रक्षार्थ दलका चित्रमें निवेश रहे और घटनाके सम्बन्धमें पाठककी पूरी जिज्ञासाका उत्तर रहे तो वह सर्वोत्तम वृत्त-विवरण सिद्ध हो सकेगा।

मान लीजिये कि कहीं रेलके दो डब्बे जल गये और उसमें

मालकी कुछ नुकसानी हुई तो आपको देखना होगा कि वह किस कोटिका माल था। यदि आप पायंगे कि वह ऐसी सामग्री थी जो विदेशसे आयी थी और उसकी कमीसे समाजको कष्ट पहुँचने वाला है तो आप उसे उसी ढंगसे उपस्थित करेंगे।

'आज पाठकोंने समाचारपत्रके कागजका विशेष अभाव होनेके समाचारके महत्त्वको उस समय महसूस किया जबकि दो डब्बे अखबारी कागजके जल जानेके कारण प्रातः संस्करण नहीं प्रकाशित हो सका। जंक्शनके निकट पहुँचनेपर मालगाड़ी में अचानक आग लगी। लगभग २५ हजार रुपयेकी क्षतिका अनुमान है।'

इसमें सबसे बड़ी क्षति यह हुई कि समाचार-पत्रोंके पाठक बहुत समय तक दुनियाँकी प्रगतिकी जानकारी से वंचित रहे।

जहाँ किसी प्रकारकी क्षति नहीं हुई हो वहाँका वर्णन उसी ढंग से होगा। जिससे केवल एक व्यक्तिको क्षति पहुँची हो, ऐसे अग्निकांडका वर्णन भी स्वभावतः साधारण होगा। उसके अनु-विवरण आदिके लिए न तो समाचारपत्र और न पाठक ही उत्सुक रहेंगे। समाचारपत्रों और पाठकोंकी अभिरुचि साथ-साथ बढ़ती है। जिस दुर्घटनामें किसीका हाथ रहता है या ध्वंस-कार्य का सदेह होता है, उसे उसकी तिथिका पता लगाकर प्रकाशित करनेसे समाचारमें और पूर्णता आ जाती है।

बहुधा ऐसा देखा जाता है कि आमुखका पहला अनुच्छेद अन्तर्वाद्य सज्जन द्वारा कहा गया वाक्य होता है। वह उसकी साक्षात् उक्तिके रूपमें उद्धृत की जाती है। सार्वजनिक भाषणों में भी भाषणकर्त्ताका मुख्य कथन उसकी—'साक्षात् उक्ति'—के रूपमें उद्धृत किया जाता है। दूसरे अनुच्छेदमें यह बताया

जाता है कि कब, कहाँ, किसने और किस अवसरपर कहा।

उदाहरणार्थ—

'शरणार्थियोंके प्रथम दलके लिए निवास-व्यवस्था ६ सप्ताहोंके अन्दर हो जायगी'

यह घोषणा है पुनर्वास मंत्रीकी, जो उन्होंने पटनेके पश्चिम भागमें शरणार्थी-नगरका शिलान्यास करते हुए की।'

कहीं-कहीं इसका परिवर्तन भी देखा जाता है। ऐसे स्थानोंमें वक्ताकी साक्षात् उक्ति दूसरे अनुच्छेदमें होती है। अधोलिखित वृत्तविवरणको देखें—

'मताधिकारकी महत्तापर जोर देते हुए प्रधानमंत्रीने कहा कि प्रत्येक व्यक्तिको इसके लिए तैयार करना प्रत्येक शिक्षित नागरिकका कर्त्तव्य है।

उन्होंने कहा—'मतदान नहीं करना अपनेको नागरिकतासे वंचित करना है।'

'साक्षात् उद्धरण'—की प्रणाली अपनानेमें संवाददाताको सावधानी बरतनी चाहिये जिससे कहीं प्रक्रम भंग न हो। कहानी की भी शैली कहीं-कहीं समाचारके लिए उपयुक्त सिद्ध होती है। निर्जीव विषयमें जीव डालनेके लिए यदि कोई प्रणाली उपयुक्त सिद्ध हो सकती है तो यही। शहरकी प्रमुख सड़कपर भिखारी भिक्षा-पात्र लिये—'भगवानके नामपर एक-आध पैसा-धेला दें'—कहता हुआ जा रहा है। भिक्षावृत्ति-निरोधके कारण पुलिसने उसे पकड़कर मजिस्ट्रेटके सामने पेश किया। संवाददाताने वृत्त-विवरण तैयार किया—

'कल रातको जबकि सुसज्जित युवतियोंके साथ धनी लोगों की मोटरें पटनेकी मुख्य सड़कपर दौड़ रहीं थीं, रामू नामका

दुर्दश भिखारी जाड़ेसे थर-थर काँपता हुआ पेटकी ज्वाला शांत करनेके लिए चिल्ला-चिल्ल कर मांग रहा था। उसे कहीं से कुछ नहीं मिल पाया था। इतनेमें पुलिस पहुँची और वह गिरफ्तार कर लिया गया। आज मजिस्ट्रेटके इजलासमें उसने कहा—'काम करनेकी क्षमता नहीं है, कोई घर बैठे देता नहीं। आखिर मैं भीख भी नहीं मांगूं तो क्या करूँ।'
मजिस्ट्रेटने उसकी दशा देखते हुए उसे छोड़ दिया।

हो सकता है कि संवाददाता ये सारी बातें अपनी आँखों नहीं देख सका हो, किन्तु उस प्रमुख सड़कपर किस प्रकारका यातायात होता है—वह जानता है। इतनी रात गये भिखारी क्यों भीख मांगता होगा, यह भी वह जान सकता है। कल्पनाको कुछ प्रश्रय देनेपर सारा दृश्य उसकी आँखोंके सामने आ गया। और उसने रोचक वृत्त-विवरण तैयार कर लिया। इस प्रकारकी क्षमता संवाददाताओंमें अभ्याससे आती है।

छोटे वाक्यके कुछ शीर्षक बहुत चुस्त होते हैं, जो हालमें कुछ पत्रोंमें देखनेको मिलने लगे हैं। वे बहुत ही संक्षिप्त होते हैं, परन्तु पाठकोंको अपनी ओर तुरत खींच लेते हैं। सड़कों और चौराहोंपर वृत्तपत्र बेचनेवाले—'हाकर' चिल्ला-चिल्लाकर ऐसे शीर्षकोंको दुहराते रहते हैं, जिससे पाठक वृत्तपत्र खरीदनेको उत्सुक होते हैं। उदाहरणार्थ—

'भीषण भूकम्प'!

भूगर्भ शास्त्रीने घोषणा की है कि इस वर्षके अन्त तक देशमें भीषण भूकम्प होगा। इसलिए लोगोंको उससे बचनेके लिए भूकम्पके धक्केको सहन करनेयोग्य घर बनाना चाहिये।'

शीर्षक, आमुख और प्रसारकी क्षमता काम करनेसे—बराबर लिखते रहनेसे बढ़ती है। आप विभिन्न पत्रोंके शीर्षक, आमुख

और प्रसारको पढ़ते रहें। क्रमशः परिपक्व होनेवाली अपनी क्षमताके परिणामको दिन-प्रतिदिन देखें। इस प्रसंगमें यहां प्रकट किये गये नियमोंको सामने रखकर उनकी परीक्षा करते रहें। विभिन्न पुस्तक-पुस्तिकाओं, पत्र-पत्रिकाओंमें दिन-प्रतिदिन परिवर्तनशील उपस्थापन प्रणाली या वर्णनशैलीका अभ्यास ही वह वस्तु है, जिससे इस प्रवृत्तिका निरन्तर विकास और प्रसार होता रहता है।

बहुत लम्बा या आडम्बरपूर्ण वृत्त-विवरण होनेसे उसमें महत्त्व आ जाता है—ऐसा भूलसे भी नहीं समझना चाहिये। लघुतम या संक्षिप्ततम मार्गसे लक्ष्य तक पहुँचना संवाददाताका प्राथमिक कर्त्तव्य है। आपका वृत्त जिस वृत्त-पत्रमें प्रकाशित होता है, उसीका निर्णय आपका निर्णय है और उसीकी नीति आपकी नीति है। उपसंपादक, जो आपके वृत्त विवरणको संपादित कर प्रकाशित करता है, आपका वास्तविक शिक्षक है। आपके वृत्त-विवरणको वह जिस रूपमें प्रकाशित करता है वही आपके वृत्त विवरणका असली रूप है।

वृत्त-विवरणकी चार श्रेणियाँ

वृत्त-विवरणका विभाजन सामान्यतः चार श्रेणियोंमें किया जा सकता है। ये हैं :—

(१) 'अग्रिम वृत्त-विवरण' (२) 'एकघटना-विषयक वृत्त-विवरण' (३) 'समवेत वृत्त-विवरण' और (४) 'अनुविवरण'।

अग्रिम वृत्त-विवरण :—आनेवाली बात या होनेवाली घटनाके सम्बन्धमें जो वृत्त-विवरण तैयार किया जाता है, वह इस श्रेणीमें पड़ता है। जनताके नागरिक, सामाजिक, राजनीतिक और वाणिज्य व्यापारसम्बन्धी संघटनोंके सम्बन्धमें ऐसे वृत्त सामान्यतया प्रकाशित होते हैं। ऐसे वृत्त सामान्यतया प्रचार-पत्रों या सूचनापत्रों द्वारा समाचारपत्रोंमें भेजे जाते हैं।

संवाददाताके बहुत स्थानोंमें जाने तथा संवादोंका संकेत प्राप्त करनेमें ऐसे अग्रिम वृत्त-विवरण सहायक सिद्ध होते हैं। वह अपनी दैनन्दिनीमें ऐसी सूचनाओंको अंकित कर लेता है और यथासंभव उन स्थानोंपर जाकर वृत्त-विवरण तथा तत्सम्बद्ध आँकड़े प्राप्त करता है। समाचार-संपादक भी ऐसी बातोंको ध्यानमें रखता है और तिथिके आनेपर संवाददाताओंको वहाँ जानेको प्रेरित करता है।

अधोलिखित वृत्त-विवरण अग्रिम वृत्त-विवरण है :—

'विज्ञान संस्थाके अध्यक्ष डा० रमण कल दो बजे दिनमें सिनेट हालमें 'विज्ञानकी प्रगति' शीर्षक विषयपर भाषण करेंगे।

डा० रमण विज्ञानके बहुत बड़े वेत्ता हैं और विभिन्न देशों

में वैज्ञानिक अनुसंधान भी कर चुके हैं।
विश्वविद्यालयके उप-कुलपति इस जन-सभाकी अध्यक्षता करेंगे।'

यह संक्षिप्त है तथा आनेवाली घटनाकी सूचनामात्र है। सीधे-सादे ढंगसे विवरण दिया गया है और मुख्य वक्ताके सम्बन्ध में भी एक अनुच्छेद जोड़ा गया है। समाचारपत्रोंमें ऐसी सूचना भेजनेवाले व्यक्ति विषयको इस प्रकार बढ़ा-चढ़ाकर लिखते हैं, जिससे उसका संपादन आवश्यक हो जाता है। उनकी आशा यह रहती है कि यदि एक स्तम्भ योग्य लिखा जायगा तो काटने-छाँटने पर कमसे कम आधा स्तम्भ योग्य अवश्य रखा जायगा।

इससे यह खतरा बना रहता है कि कहीं समूची ही सूचना रद्दीकी टोकरीमें न फेंक दी जाय। व्यस्त संपादक लम्बे-चौड़े सूचनापत्रको देखते ही झुंझला उठता है। वह सोचता है कि कहीं इसका एक-आध अनुच्छेद उपयोगी भी होगा तो उसे ग्रहण करनेमें पूरा समय और श्रम लगेगा। 'कौन इसे पढ़े—क्यों इसे महत्त्व दिया जाय, बेकार है—फेंको इसे।'

संस्था-विशेषमें किसी खास अवधिमें कोई खास कार्य होनेवाला है, जिसके सम्बन्धमें 'रोचक अग्रिम वृत्त-विवरण'—इस प्रकार दिया जाता है :——

'चलचित्रोंकी नेपथ्य गायिका लता मंगेश्कर.......
विश्वविद्यालयके संगीत-विभागमें आगामी जुलाईसे चलचित्रोपयोगी संगीतकी शिक्षा देना प्रारम्भ करेंगी। नये वर्षमें संगीतकी सर्वांगपूर्ण शिक्षा, नाट्य-लेखन-कलाका प्रशिक्षण तथा पत्रकारिताकी भी प्रशिक्षाका प्रारम्भ किया जा रहा है।'

अग्रिम वृत्त-विवरण विस्तृत रूपमें तभी प्रकाशित होगा, जब वह विशिष्ट व्यक्ति, स्थानीय महत्त्वकी वस्तु या दृष्टिकोण-विशेष-मूलक वस्तुके सम्बन्धमें होगा। यहाँ यह समझ लेना आवश्यक है कि ऐसी स्थितिमें वह किसी प्रकारके वृत्त-विवरणकी श्रेणीमें रखने योग्य हो जाता है।

एकघटनामूलक वृत्त-विवरण

इस प्रकारके वृत्त दिन प्रतिदिन घटनेवाली छोटी-मोटी घटनाओंसे सम्बन्ध रखते हैं। उपद्रव, गुण्डई, चोरी, व्यक्तिगत क्षति, अग्निकांड तथा कई छोटे-मोटे कानून भंग आदिके समाचार इस श्रेणीमें समझे जा सकते हैं। ऐसे वृत्तकी बहुत छानबीन नहीं होती। कोई वृत्त-पत्र इसका अनुविवरण प्रकाशित करने की आवश्यकता भी नहीं समझता। एकआध संस्करणमें प्रकाशित होनेके बाद उसका कोई स्मरण भी नही करते। उदाहरण देखिये:-

> 'आज सचिवालयका एक कर्मचारी, जिसकी उम्र २५ साल की थी, स्टेशनके पास मोटरसे दबकर मर गया। कर्मचारीको पत्नी तथा दो बच्चे हैं।'

मोटरोंसे दबकर मृत्यु साधारण बात सी हो गयी है। उसमें मृत व्यक्ति सामाजिक अभिरुचिके लिए कोई आकर्षण नहीं रखता तो ऐसी स्थितिमें अनुविवरण देनेकी आवश्यकता नहीं महसूस की जाती है। आप देखेंगे कि एक वार प्रकाशित होनेके बाद ऐसे समाचार सदाके लिए विस्मृत हो जायंगे।

समवेत वृत्त-विवरण

ऐसे वृत्त-विवरणको एक विषय सम्बद्ध अनेक घटनामूलक (राउण्ड-अप) वृत्त-विवरण भी कह सकते हैं। महत्त्वपूर्ण वार्षिक अवकाश पर जबकि कोई व्यापक समारोह हो रहा है, नगरके

विभिन्न स्थानोंमें हुए तत्सम्बन्धी आयोजनोंका एकस्थ (समवेत) वृत्त-विवरण इस श्रेणीमें आता है। उदाहरणार्थ दशहराको ही लीजिये। दशहराके अवसरपर कहाँ कैसी मूर्ति बनी? कहाँ कैसा आयोजन था? संगीतकी कहाँ कैसी व्यवस्था थी?—आदि विषयों का जो एकस्थ (समवेत) विवरण होगा, उसे संवाददाता इस प्रकार रखेगा :—

'आज नगरके विभिन्न स्थानोंमें दुर्गापूजाकी धूम थी। नर-नारीगण प्रफुल्लित हो पूजाके हेतु एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाते दिखाई दे रहे थे।

साहित्य-सम्मेलन भवनमें दुर्गाकी मूर्तिके सामने दर्शनार्थियोंकी सबसे अधिक भीड़ थी। यहाँ संध्या समय श्री ओंकारनाथका संगीत हुआ। यहाँ की अष्टभुजी मूर्ति बहुत भव्य थी।

कालेजके अहातेमें भी दुर्गा पूजाका आकर्षक प्रबन्ध था। इस अवसरपर छात्रोंने 'महिषा-सुरवध' नामक नाटकका अभिनय किया।

अन्य स्थानोंमें भी पूजाकी सुन्दर व्यवस्था की गयी थी। गत वर्षसे भी इस वर्ष उल्लासमें कमी थी। विभिन्न वस्तुओंका अभाव ही इसका कारण समझा जा रहा है।'

ऐसे अवसर हो सकते हैं 'स्वातंत्र्य दिवसोत्सव', महापुरुषोंके जन्म-दिन' तथा 'प्रसिद्ध धार्मिक पर्व' आदि।

मौसमकी अप्राकृतिकता हो जानेपर भी समवेत वृत्तविवरण तैयार किया जा सकता है। 'भीषण गरमी आ गयी है, लू चल रही है, मृत्यु हो रही है, सरकारी और गैरसरकारी कार्यालय उचित समयसे पहले बन्द हो रहे हैं, लड़के तालाबोंमें देरतक नहाने को विवश हो रहे हैं, रातमें लोग सड़कोंपर और मैदानोंमें सो रहे

हैं और कूएँ सुख गये हैं।' –ऐसा दृश्य उपस्थित हो जानेपर संवाददाताको एतत्सम्बन्धी सारे विवरणोंको जमा करना चाहिये। इनसे वह ऐसा समवेत वृत्त-विवरण तैयार कर सकेगा जो प्रथम पृष्ठपर भी प्रकाशित होने योग्य सिद्ध होगा।

स्थूल रूपमें यह कहा जा सकता है कि एक विषयपर विभिन्न सूत्रों और विभिन्न वक्तव्योंके आधारपर जो वृत्त-विवरण तैयार किया जाता है वह 'समवेत वृत्त विवरण' है।

बहुत बड़े अग्निकांड, भूकम्प, अधिक तुषारपात और बाढ़ आदि ऐसे विषय हैं, जिनके सम्बन्धमें समवेत वृत्त-विवरण तैयार करना बहुत आवश्यक प्रतीत होता है।

अनुविवरण

अनुविवरण सामान्यतः उस संवादका होता है, जो एकदिन पहलेके अंकमें प्रकाशित हुआ रहता है। युद्ध, राजनीतिक आंदोलन और मुकदमोंकी सुनवाई आदि इस श्रेणीके वृत्तके प्राथमिक उदाहरण हैं। इन विषयोंपर दिन-प्रतिदिन कुछ ऐसा वृत्त-विवरण मिलता रहता है, जिसे पाठक उत्सुकताके साथ पढ़ते हैं। पाठकको जिस विषयमें पहले कुछ वृत्त-विवरण दिया गया है, उसके सम्बन्धमें बादका, वृत्त-विवरण देना अन्य दृष्टियोंसे भी आवश्यक है।

अनुविवरणमें पहले दिनके वृत्त-विवरणके मूल विषयकी भी अन्तमें चर्चा होनी चाहिये जिससे इससे पहलेका संस्करण न पढ़नेवालेको भी पूरा वृत्त-विवरण समझनेमें कष्ट न हो। मान लीजियेकि एक संवाद आज चोरीके सम्बन्धमें प्रकाशित होता है। दूसरे दिन चोर पकड़ा जाता है, जिसका, आप अनुविवरण देते हैं। इस अनुविवरणमें 'कहाँ ओर कैसी चोरी हुई'--आदि बातों

के उत्तरका निवेश नहीं है तो आजका वह पाठक, जो कलका संवाद नहीं पढ़ सका है, अपनी जिज्ञासा पूर्ण नहीं कर सकेगा।

किसी वृत्तका अनुविवरण सप्ताहों और मासों तक भी चल सकता है। ऐसे वृत्त-विवरण तैयार करनेका भार बहुधा पुराने संवाददाता पर पड़ता है।

'भारतके प्रमुख संविधानज्ञ डॉ० बेनेगल नरसिंह रावकी आज मृत्यु हो गयी। इनकी क्षति भारतके लिए अपूरणीय समझी जा रही है।

अब कई दिनोंके बाद इसका अनुविवरण पढ़िये :—

'आज भारत-संसदमें श्री रावकी मृत्युपर शोक प्रकट किया गया

इनकी मृत्यु गत ८ जनवरीको हुई।'

कहीं अग्निकांड हुआ और उसमें बहुत बड़ी क्षति हुई तो वह केवल एक बार प्रकाशित हो जायगा। किन्तु यदि संवाददाताको इसमें किसीके हाथ या चालका संकेत मिला तो वह पता लगाकर अनुविवरण तैयार करेगा। ऐसी स्थितिमें अनुविवरण अग्निकांड के मूल समाचारसे भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इस सम्बन्धमें अफसरोंके वक्तव्य और जाँचके परिणाम आदिका पृथक-पृथक ही अनुविवरण तैयार किया जायगा। इस मामलेमें कोई गिरफ्तार होगा तो तब भी अनुविवरण प्रकाशित होगा। स्मरण रहे कि प्रत्येक अनुविवरणके साथ मूल अग्निकांडकी संक्षेपमें चर्चा होनी चाहिये।

पुनर्लेख

अनुविवरण तैयार करनेमें जिस कलाका उपयोग होता है, उसीका बहुत कुछ अंशमें —'पुनर्लेख'में भी प्रयोग होता है। इसकी आवश्यकता तब पड़ती है जब कोई प्रतिद्वन्द्वी पत्र या समाचार-संस्था किसी समाचारको सर्वप्रथम प्रकाशित कर देती है। ऐसी स्थितिमें उस वृत्त-पत्रका संवाददाता, जो उक्त संवाद प्रकाशित करनेमें पिछड़ गया है, उस समाचारके अनुविवरण का अन्वेषण करता है। कुछ अनुविवरण मिल जानेपर वह उसे 'आमुख'में रखता और अन्य पत्रमें एक दिन पहले प्रकाशित हुए विवरणको रूपान्तरमें पुनः लिखकर अनुविवरण बना डालता है। यदि आप आजके वृत्तपत्रमें कलकी मृत्युका संवाद देते हैं तो मृत्युके बादके 'अग्नि-संस्कार और शोक-सभाके संवादको प्रथम अनुच्छेदमें रखिये। बादमें उनकी मृत्यु कैसे हुई? कब हुई? कहाँ हुई?'—आदिका निवेश कर दीजिये।

बहुधा आज प्रकाशित समाचारके अन्तिम अनुच्छेदमें वह बात रहती है जिसके भविष्य कालको भूतमें बदल देनेसे कल प्रकाशित होनेवाले वृत्तका आमुख तैयार हो जाता है।

उदाहरण देखिये :—

'हरिहरनाथ शास्त्रीकी आज विमान-दुर्घटनामें मृत्यु हो गयी।

विमान इंजिनकी गड़बड़के कारण ज्वारके खेतमें गिरा। अन्य

१७ यात्री इसमें मरे।

शास्त्री जीका दाह-संस्कार कल सम्पन्न होगा।'

यह वृत्त आज प्रकाशित हो चुका है। आप कलके लिए वृत्त तैयार कर रहे हैं। आप इस प्रकार लिखेंगे :—

'शास्त्रीजी का दाह-संस्कार आज विधिवत् सम्पन्न हुआ। इनकी मृत्यु कल इंजिनकी खराबीके कारण विमान दुर्घटनामें हुई।'

पुनर्लेखके लिए संक्षेपमें ये सिद्धांत समझें :—

(१)—अन्य वृत्त-पत्रोंसे वृत्त तैयार करनेकी दिशामें 'पुनर्लेख' प्रणाली ही उपयुक्त सिद्ध हो सकती है, (२)—इसमें अनुविवरणके सिद्धांतका पालन किया जाता है,(३)—'आजका समाचार आज' इसका आदर्श रहता है, (४)—यह मूल घटनाकी गतिविधिके आधारपर तैयार किया जाता है और (५)—इसका 'आमुख' आज प्रकाशित हुए समाचारके अन्तिम अनुच्छेदसे निकलता है।

रोचक तत्त्व

मानव हृदय ऐसे पदार्थसे बना है जिससे कुछ अभिरुचियाँ मानवमात्रमें समान रूपसे पायी जाती हैं। अभिरुचिकी समानताके कारण ही एक मानवहृदय दूसरे मानवहृदयके समान ही कई बातोंकी ओर प्रवृत्त होता दिखाई देता है। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन संसारमें होनेवाले घटनाचक्रमें दूसरोंके अनुभवसे मनुष्य लाभ उठाता है, अपने चारों ओरके वास्तविक और काल्पनिक पहलुओंपर दूसरोंकी भांति ही अनुभव करता है। कभी-कभी वह महानको तुच्छ और तुच्छको महान, एवं कभी कटुको मधुर तथा मधुरको कटु पाता है। इस अभिरुचि-साम्यका आधार सीमित है। निश्चित रूपसे इसका प्रतिपादन करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। संक्षेपमें इतनाभर कहा जा सकता है कि अनुभवके आधारपर ही अनुभूति और अभिरुचि साम्यका आधार निश्चित किया जा सकता है।

यों तो जितने भी संवाद होते हैं, वे पाठकोंके हृदयके लिए उपयोगी आकर्षण रखते ही हैं। इसलिए यह कहना कि सभी समाचार 'मानव-हृदय-रोचक' हैं, गलत होगा। 'मानव-हृदय-रोचक' संवादमें कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं जो उन्हें कोरे (वस्तुमूलक, सूचनामूलक) वृत्त-विवरणसे भिन्न रखते हैं।

सीधा-सादा वृत्त-विवरण किसी घटना या विषयकी, नियंत्रित ढंगसे औपचारिक घोषणा करता है। 'रोचक वृत्त-विवरण'के साथ वह बात नहीं। यह किसी स्थिति या दृश्यको अनौपचारिक ढंगसे उपस्थित करता है। संवाददाता इसमें कड़े नियमोंके बन्धनोंसे मुक्त रहकर आश्चर्य, हँसी और आलोचना आदि अपने

भावोंको भी इच्छानुसार प्रश्रय देनेके लिए स्वतंत्र रहता है। स्मरण रहे कि सीधे-सादे वृत्त-विवरणमें संवाददाताको अपना विचार प्रकट करनेकी स्वतंत्रता बिलकुल ही नहीं रहती है।

और भी स्पष्ट रूपमें आप यह समझें कि रोचक वृत्त-विवरण के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह सर्वप्रकृष्ट तत्त्वसे ही प्रारम्भ किया जाय।

आमुखमें षट्ककारके उत्तरका निवेश भी इसमें अनिवार्य नहीं है। इसमें आमुख देना भी अनिवार्य नहीं, ऐच्छिक है। वह अपनी विषय-प्रतिपादन-प्रणालीके अनुसार रोचक वृत्त-विवरण उपस्थित कर सकता है। इसमें लक्ष्य और नियम कुछ है भी तो सिर्फ एक, और वह है—'रोचकताकी सृष्टि'।

स्थूल रूपमें यह कहा जा सकता है कि 'रोचक वृत्त-विवरण' का समाचारके रूपमें कोई महत्त्व नहीं है। यह पाठकोंके भाव-विकारके लिए उपस्थित किया जा सकता है, न कि जानकारी देनेके लिए। महत्त्वहीन घटना भी, जिसे समाचारके रूपमें प्रश्रय प्रायः नहीं ही दिया जाता है, कभी-कभी प्रमुख रूपसे रोचक वृत्तके रूपमें प्रकाशित होती है। इसका कारण यही है कि इसका मनुष्यके मानसिक भावों या भावविकारोंसे सम्बन्ध रहता है।

सीधा-सादा वृत्त-विवरण, जिसे मूलवस्तु-विवरण भी कहा गया है, अभिरुचि पैदा करनेके लिए खास समय और खास स्थानकी अपेक्षा रखता है। रोचक वृत्त-विवरणमें यह बात नहीं। वह कभी और किसी क्षेत्रमें प्रायः समानरुचिके साथ ही ग्राह्य सिद्ध होगा। उदाहरणः—

'पटना, ३० अक्तूबर। आज विधान सभामें उस समय बड़ा ही कौतूहल देखा गया, जब सभा-भवनमें विचित्र आवाज सुनाई देने लगी।

कुछ सदस्य उसे 'भूतकी आवाज' समझ अशुभकी शंका करने लगे। लगभग १० मिनटों तक काम रुका रहा और सदस्य-गण इस आवाजको पहचाननेमें व्यस्त रहे।

बादमें यन्त्र-विज्ञने बताया—आपलोग व्यर्थ ही परेशान हैं। ध्वनिप्रसार-यंत्रमें गड़बड़ के कारण ही यह आवाज हो रही है।'

यह समाचार जिस अभिरुचिके साथ उस दिन पढ़ा गया, उसी अभिरुचिके साथ आज भी पढ़ा जाने योग्य है। किसी भी क्षेत्रके पाठक इसे अभिरुचिके साथ पढ़ सकते हैं। यह लोक-विश्रुत कथाके रूपमें जब-कभी और जहाँ-कहीं भी ध्वनि-प्रधान यंत्र और विधान सभासे परिचित लोगोंके सामने आयगा, आकर्षक सिद्ध होकर रहेगा।

ऐसे वृत्त-विवरणको तैयार करनेमें मुहावरेदार भाषा या विशिष्ट शैलीकी आवश्यता नहीं है। बोधगम्य वाक्य लिखनेकी क्षमता रखनेवाला कोई व्यक्ति उक्त प्रकारका वृत्त-विवरण तैयार कर सकता है। नये संवाददाताके लिए इस रोचक वृत्त-विवरणमें प्रवृत्त होनेका एक ही आकर्षण है—इसका रोचक होना। ऐसा वृत्त-विवरण समाचार पत्रोंके प्रथम पृष्ठपर भी स्थान पा सकता है। कोष्ठमें या स्तम्भके दोनों भाग कुछ अंश छोड़कर 'विधान-सभामें भूत' शीर्षकके अन्तर्गत इसका प्रकाशन बहुत ही रोचक सिद्ध होगा, इसमें संदेह नहीं।

यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक स्थितिमें तथा प्रत्येक रोचक वृत्त प्रथम पृष्ठमें ही स्थान पावे। मूलवस्तु विषयक सामयिक वृत्तोंके लिए ही समाचारपत्रोंका मुख्यतया अस्तित्व होता है। अतः अन्य प्रकारके सभी वृत्त-विवरणोंको स्थान पानेके लिए अपना महत्त्व रखना होगा। प्रतिद्वन्द्वितामें सफलता मिलनेपर

हीव ह स्थान पा सकता है। एक शब्दमें, ऐसे समाचार (रोचक वृत्त)को 'चटनी' कह सकते हैं। बस, 'चटनी'को 'चटनी' के समान ही स्थान दें।

बहुतसे वृत्त-पत्र 'मौसम'के समाचारको भी अनौपचारिक रोचक वृत्त-विवरणके रूपमें प्रथम पृष्ठपर स्थान देते हैं।

अद्भुतताकी परिभाषा इससे पहले दी जा चुकी है। बहुतसे रोचक वृत्त-विवरण उसकी ही परिधिमें पड़ जाते हैं। —'मानिये या न मानिये' 'सिगरेट पीने वाला कुत्ता,' आदि ऐसे समाचारय हैं, जो इसी कसौटीपर जांचे जा सकते हैं।

संपादकीय विभागमें समाचारोंको देखकर उसपर संपादक सम अंकित कर देता है-'आज प्रकाशनीय', 'कलके लिए उपयुक्त', खास अवधिमें कभी प्रकाशित हो सकता है,' आदि आदि। इसी अवसरपर रोचक वृत्त-विवरणके भी भाग्यका निर्णय होता है। यह तो कहा ही जा चुका है कि रोचक वृत्त-विवरणके प्रभावकी कोई सीमा और क्षेत्र-विशेष नहीं। जहाँ तक मनुष्यका अस्तित्व है वहाँ तक वह पढ़ा जा सकता है। प्रतिद्वन्द्वी वृत्त-पत्रके साथ प्रतियोगितामें विजय दिलानेमें यह प्रमुख साधन नहीं हो सकता।

समाचारपत्रों या समाचार-संघटनोंमें 'रोचक वृत्त-विवरण', तैयार करनेके लिए विशिष्ट रूपसे कोई संवाददाता नियुक्त नहीं किया जाता। किन्तु ऐसा संवाददाता प्रायः नहींके बराबर होगा, जो 'रोचक वृत्त-विवरण' तैयार करनेके अवसरसे लाभ उठानेको उत्सुक न हो। वह समझता है कि यही एक मार्ग है जो उसे अपनी क्षमता या मौलिक योग्यताके प्रकाशन तक पहुँचनेका अवसर प्रदान करेगा।

मानव-हृदय-रोचक वृत्त-विवरण तैयार करनेकी क्षमात संवाददाता होनेके लिए अनिवार्य योग्यता नहीं है। इस प्रकारकी

क्षमताके अभावमें भी कोई व्यक्ति संवाददाता नियुक्त हो सकता है। प्रचलित पद्धतिके अनुसार दैनन्दिन संवाद लिखनेकी क्षमता ही वह वस्तु है जो नियुक्तिके लिए आवश्यक है। किसी दैनिक पत्रमें ७० (सत्तर) प्रतिशतसे अधिक ऐसे संवाद प्रकाशित होते हैं, जो उस दिन घटी घटनाओं तथा अन्य विषयोंके सम्बन्धमें रहते हैं। तो भी मानव हृद्रोचकतत्त्वके निवेशकी प्रवृत्ति नये संवाददाताके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उससे उसे बड़े-बड़े अवसर मिलनेमें सहायता मिलती है।

घटना-सृष्टि, रहस्य और प्रचार

वृत्तलेखन-कला और वृत्तश्रेणी-विभाजन आदिके सम्बन्धमें बहुत सी बातें पिछले अध्यायमें बतायी जा चुकी हैं। अब यहाँ यह बताना, अप्रासंगिक नहीं होगा कि किस प्रकार समाचारकी सृष्टि की जाती है, अथवा छोटी बात आडम्बरपूर्ण भाषामें उपस्थित को जाती है।

ऐसे संवाद सामान्यतया उन—'प्रेस-एजेन्टों' या प्रचार विभागीय अफसरों द्वारा तैयार किये जाते हैं जिन्हें किसी वस्तु या व्यक्तिसे किसी प्रकारका लाभ उठाना रहता है। 'प्रेस-एजेन्ट' या प्रचार अधिकारी वही होते हैं, जो कुछ कार्योंमें संवाददाताके समान और कुछमें उससे आगे बढ़े रहते हैं। वे आडम्बरपूर्ण भाषा, सजीव कल्पना और अनावश्यक विशेषणोंके भाण्डार होते हैं। संवाददातासे उनकी समानता सिर्फ इस बातके लिए होती है कि आखिर ये भी तो जनताको जानकारी देनेवाले जीव ही ठहरे! ऐसा भी देखा जाता है कि कहीं कहीं संवाददाता और संपादक भी विशिष्ट प्रकारकी घटनाकी सृष्टि करते हैं। इनका उद्देश्य कोई लाभ नहीं रहता। ये केवल इतना चाहते हैं कि रोचक होनेके कारण पाठकोंमें इसकी और इसके द्वारा वृत्त-पत्र की चर्चा विशिष्ट रूपसे हो।

'घटना-सृष्टि-मूलक' वृत्त-निर्माण कला किसी वस्तु या व्यक्ति को नाटकीयता प्रदान करनेमें सहायक सिद्ध होती है। महत्त्वहीन घटना रहनेपर भी इस प्रकारका वृत्त-विवरण इसलिए स्थान पाता है कि वह लोगोंका मनबहलाव करता तथा सर्वत्र चर्चाका विषय बन जाता है।

व्यापार-वाणिज्यके क्षेत्रमें जो प्रचार अधिकारी रहते हैं वे अपने वाणिज्यकी खास वस्तुको खास ढंगसे रखते हैं। इस प्रकारके प्रचारका विज्ञापनसे यही भेद होता है कि विज्ञापनके लिए पैसे लगते हैं और इसके लिए नहीं। यह इस चातुरीके साथ पेश किया जाता है कि उसे समाचारके रूपमें स्थान मिल जाता है।

जिस प्रकार अन्य संवादोंमें प्रकाशनके लिए स्थान पानेमें प्रतियोगिता होती है, उसी प्रकार यह प्रचार-परचोंके बीचभी होती है। यह देखना पड़ता है कि समाचारके रूपमें इसका कैसा मूल्यांकन होना चाहिये। समाचार की जिस कसौटी पर परीक्षा होनी चाहिये उसी कसौटी पर इसकी भी परीक्षा हो।

उसकाभी सामयिक, स्थानीय अभिरुचिवर्धक तथा अन्य अपेक्षित योग्यतासम्पन्न होना आवश्यक है। 'संवादके मुख्य तत्त्व'-शीर्षक अध्यायमें जो मुख्य तत्त्व बतलाये गये हैं, उन्हें दृष्टिमें रखकर ही इसकी परीक्षा होनी चाहिये।

सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक, औद्योगिक और आर्थिक आदि जोभी संभव संस्थाएं हैं, सबको अपना प्रचारक या प्रवक्ता रहता है। इसके भेजे गये वृत्त-विवरणमें शब्दावली का इस प्रकार समावेश रहता है, जिससे लोग कोई विशेष कार्य करने या विशेष वस्तु खरीदने में प्रवृत्त होनेको प्रेरित हों। किसी चित्र-निर्माताके प्रेस—एजेन्टका उद्देश्य रहेगाकि उसके प्रचारसे ग्राहकोंकी भीड़ उमड़े। उदाहरण देखें—

'कल गांधी-मैदानमें एक लाख किसानोंकी रैली होनेवाली है जिसमें नहर-कर-वृद्धिसम्बन्धी सरकारी निर्णयका विरोध होगा। डाक्टर लोहिया भाषण करेंगे। अनेक नेताओंके

आनेकी सम्भावना है। किसान-हित-सम्बन्धी अन्य प्रश्नोंपर भी विचार होगा।'

यह वृत्त इस ढंगसे उपस्थित किया गया है जिससे लोगोंपर पूरा प्रभाव पड़े। एक शब्दमें यह कह सकते हैं कि इसके द्वारा लोगोंके हृदयमें इस रैलीमें सम्मिलित होनेकी इच्छा पैदा करनेकी चेष्टाकी गयी है। साथही इससे महत्त्वख्यापनका भी उद्देश्य सिद्ध हो जाता है। 'विशाल रैली' के सम्बन्धमें प्राप्त संकेतको उपर्युक्त प्रकारसे उपस्थित करनेसे बड़ा समाचार बन गया और इसे कोई समाचारपत्र प्रमुखताके साथ छापनेमें नहीं हिचकिचायगा।

ऐसे संवादोंको, जो विज्ञापनकी दृष्टिसे भेजे जाते हैं, छापनेमें संपादक हिचकिचाता है। किन्तु क्या करे वह बेचारा! सर्वत्र उसका अपना सूत्र होना कठिन है, इसलिए प्रचारके उद्देश्यसे भेजा गया संवादभी वह ग्रहण करता है। उसका वश केवल इस अंशमें चलता है कि वह वृत्त-विवरणकी कसौटी परभी उसे जांच लेता। कभी-कभी उसे अपनी सीमासे भी बाहर होना पड़ता है और प्रेस-एजेन्टों द्वारा दिये गये उद्वेजक· (अभिरुचिके) समाचारको भी स्थान देनेमें सहयोग करना पड़ता है।

'दमेकी मुफ्त दवा' तथा–'क्षय-रोग-निवारण कार्यसम्बन्धी मुहर' आदिके समाचारको वह इसलिए स्थान नहीं देताकि वह सेवा कार्य है, बल्कि यह सोचकर स्थान देता है कि उसमें समाचारत्व है। ये भी प्रचारात्मक सिद्ध होते हैं किन्तु समाचारत्वकी उपेक्षा कैसेकी जा सकती है!

कभी-कभी कोई समाचारपत्र घटना-विशेषकी सृष्टि कर उसकी निरन्तर प्रगति का निरन्तर प्रकाशन जारी कर देता है।

यह कार्य वह इसलिए करता है कि कोई विशिष्टता उसके पत्रमें रहे। मास दो मास वाद-विवाद होने परभी उसका रहस्य खुला नहीं तो पत्रकी प्रतिष्ठा बढ़ जाता है। यदि वह विषय एक दशाब्दी तक रहस्य ही बना रह गयातो आपके वृत्त-पत्रकी प्रतिष्ठा निरन्तर वृद्धि की ओर रहेगी।

इस वृत्तिको अपनानेके लिए चातुरी और साधन-सन्पन्नता अपेक्षित है। 'गुप्तता तो इसका प्रमुख मन्त्र है, इसे कभी नहीं भूलना चाहिये। मान लीजिये कि आपने यह वृत्ति अपनायी। अब आपको करना यह है कि आप प्रथम दिन प्रकाशित कीजिये :—

> 'गर्भस्थित जन्तुका लिंग ज्ञात हो सकता है! इसके लिए अमुक संस्थाने (गुप्तता बरतनेकी दृष्टिसे आप अपनी संस्था काही नाम दें), वैज्ञानिकोंको नियुक्त किया है। परीक्षण प्रारम्भ हो गया है। सफलताकी आशाकी जाती है।'

दो चार दिनोंके बाद आप अपनो योजनाके हिसाबसे प्रगति प्रकाशित कीजिये। पाठकोंके आकर्षण का अध्ययन कर आप उसे नियमित रूपसे प्रकाशित करना जारी कर दीजिये। आशा है कि पूरा प्रोत्साहन मिलेगा।

एक संपादककी कहानी है। उन्होंने कुछ ऐसे पत्र प्राप्त करनेका आयोजन किया जिनमें उनकेही (संपादकके ही) नाम हत्याकी धमकी दी गयी हो। माया तो उनकी अपनी थी किन्तु उसे गोपनीय रखा।

धमकीके पत्र पुलिसको दिये गये और अपेक्षित वृत्त-विवरण पत्रमें प्रकाशित हुआ। पुलिस नहीं कुछ कर पायी जिसपर

उन्होंने संपादकीयमें पुलिसकी कटु आलोचना की। ऐसी घटना की सृष्टिका रहस्य पाठकोंमें अभिरुचि पैदा करना ही था।

संवाददाताका इतिहास बड़ा विचित्र है। वह घटना की सृष्टि करता है और स्वप्नको भी सही घटना बनाता है। उसमें पूरा वृत्त-विवरण तैयार करनेकी कला रहती है और किसी क्षण मनोऽनुकूल वृत्त उपस्थित कर सकता है।

संवाददाताकी अनेक चातुरियोंमें यह भी है कि कभी वह टेलीफोन उठायगा और किसी बड़े अफसरको पूछेगा—'क्या यह सही है कि आप पदत्याग करने जा रहे हैं?' प्रश्नका अवसर या औचित्य न देख अफसर या तो झुंझला कर अस्वीकार कर देगा या संवाददाताकी वृत्त-विवरणप्राप्ति चातुरीको समझ हँसकर कह देगा—'मैंने तो इस सम्बन्धमें कुछ नहीं सुना है।' केवल अस्वीकारकी बातपर संवाददाता अधोलिखित आशयका वृत्त-विवरण तैयार कर लेगा :—

> 'विश्वविद्यालयके उपकुलपति श्री मेननने आज जोरदार शब्दोंमें इस बातको अस्वीकार किया कि वे पदत्याग करने जा रहे हैं। उन्होंने बताया—'मैंने तो यह सुना भी नहीं है।' उपकुलपति मेनन हाल ही पटना-विश्वविद्यालयके उपकुलपति नियुक्त हुए हैं।'

उपर्युक्त समाचारमें अफसरका पद तथा नाम संवादको मूल्यवान बनाता है। कभी वृत्त-विवरणका आधार अधोलिखित रूपमें दिया जाता है :-–

'विश्वसनीय सूत्रसे ज्ञात हुआ है'—'उच्च सरकारी अधिकारीने बताया है।' यह इसलिए किया जाता है कि पदाधिकारीका नाम या उसके पदका आभास न मिले।

इससे यह स्पष्ट है कि संवाददाताको सूत्र प्रकट करने या न करनेकी स्वतंत्रता रहती है। इसकी आड़में, संभव है, कभी वह (संवाददाता) स्वयं ही वृत्त गढ़ ले। गढ़े हुए संवाद भी प्रकाशित होते हैं किन्तु उनका कुछ पूर्वाभास संपादकको रहना चाहिये।

संपादक भी उपर्युक्त गुप्तनाम सूत्रकी आड़में संवादकी सृष्टि कर सकता है। किन्तु यह मार्ग विहित नहीं है। अधिक संपादक इस अभ्याससे दूर रहते हैं। वे संवाददाताको भी अपने मनके अनुसार संवाद गढ़नेको नहीं कहते। संपादक संवाददाता द्वारा पेश किये गये संवादोंकी परीक्षा करते और त्रुटिपूर्ण मालूम होनेपर उसे (संवाददाताको) मनाही करते हैं। इन बातोंके बावजूद, रचनात्मक दृष्टिसे, खास परिधिके भीतर गढ़े गये समाचारको वे प्रकाशित करते हैं।

अब आप उदाहरणके रूपमें देखें :—'कोई संवाददाता अपना काल्पनिक नाम देकर संवाद तैयार करता है कि वह बहुतही साधारण अभियोगमें गिरफ्तार कर लिया गया। दण्ड या जमानतके बदले रातभर वह जेलमें रखा गया।'

यह संवाद साधारण जनताके कटु अनुभवोंको दृष्टिमें रखकर प्रकाशित किया गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगोंके इस प्रकारके कटु अनुभवोंका विशद विवरण प्रकाशित किया गया। नागरिक अधिकार-हनन या दमन शीर्षकके अधीन एक नहीं, अनेक संपादकीय प्रकाशित हुए। इस धांधलीके लिए उत्तरदायी व्यवस्था की आंखें खुलीं।

पाठकोंकी अभिरुचि बढ़ानेके लिए ही घटनाकी सृष्टिकी जाती है, यह तो कहाही जा चुका है। किन्तु यह स्मरण रहना चाहिये कि यह नये संवाददाताका काम नहीं है। हाँ, वह इतनाभर कर सकता है कि 'स्वसृष्ट-रोचक घटनाओं' का विवरण संपादकके

सामने रखेगा। संपादककी आँखोंमें धूल झोंककर वह स्वसृष्ट घटनाको प्रकाशित कराने या वृत्त-विवरण के रूपमें प्रश्रय देनेकी चेष्टा न करे।

जनकल्याणकारी वृहत्समाचारपत्र रचनात्मक दृष्टिसे स्वसृष्ट घटनाओंको लगभग सब दिन स्थान देनेकी चेष्टा करते हैं। कुछ वृत्त-पत्र 'म्युनिसिपल कारपोरेशनकी गन्दगी' आदि जैसी घटनाओं पर संपादकीय तककी सृष्टि करना आवश्यक समझते हैं। ऐसी स्थितिमें वे संवाददाता तथा चित्रकारको 'गन्दगी' के सम्बन्धमें आवश्यक आँकड़े सूचित करनेको कहते हैं। गन्दगीके सम्बन्धमें बहुत वृत्त और चित्र प्रकाशित होनेके बाद संपादकीयमें उसके (गन्दगीके) विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा जाता है।

जनकल्याणके लिए कोषसंग्रहका समाचारभी खास ढंगसे प्रकाशित किया जाता है। इसमें जनहितकी पवित्र भावना रहती है। अतः कोषवृद्धिके सम्बन्धमें रोचक घटनाकी सृष्टि कर उसके द्वारा दूसरों का उत्साह बढ़ाया जाता है तो यह पत्रकारिताका दूषण नहीं, प्रत्युत भूषण है। उदाहरण देखें :—

'रिक्शाचालक रामूने अपनी मासभरकी कमाई उत्तरविहारके बाढ़-पीड़ितोंके कोषमें दे दी।

ज्ञात हुआ है कि रिक्शापर आरूढ़ संग्रहकर्त्ता उत्तर विहारकी बाढ़के सम्बन्धमें अपना अनुभव प्रकट करते जा रहे थे कि रिक्शावाला एकाएक खड़ा होकर बोला—'सरकार, मैं वहाँकी तकलीफ जानता हूँ। भुक्तभोगी होनेके कारण मैं अपने सारे मासकी कमाई बाढ़-पीड़ित कोषमें दे रहा हूँ।' इतना कहते हुए उसने अपनी फटी धोतीकी गाँठसे २५) रु० निकालकर दे दिया।'

वृत्त-लेखन-विधि

समाचार-पत्रोंमें प्रकाशनके लिए कापियाँ तैयार करनेके समय भी कुछ खास नियमोंपर ध्यान देना आवश्यक है। इसमें एक-रूपता होना तो कठिन है, किन्तु कुछ सामान्य नियमोंका पालन कठिन नहीं।

आप अपनी कापीके बायें कोने पर अपना नाम लिखें। नामके ठीक नीचे विषयका संक्षिप्त संकेत अंकित करें, जैसे—'नेहरू'। संकेतके नीचे वृत्त-विवरण पत्रके प्रथम पृष्ठ पर पृष्ठकी एक-तिहाई जगह छोड़ दें, जिससे संपादकको शीर्षक लिखनेका स्थान मिले। संवाददाता का काम नहींकि वह शीर्षकभी लिखे। पंक्तियां बहुत घनी नहीं होनी चाहिये। एक पृष्ठसे बढ़नेवाले वृत्तविवरणके प्रथम पृष्ठके अन्तमें 'क्रमशः' और द्वितीय पृष्ठ पर ऊपर 'नेहरू—२, और इसी प्रकार अन्य पृष्ठोंमें भी पृष्ठसंख्या और संकेत लिखें। विवरणके अन्तिम पृष्ठ पर अन्तसूचक संकेत हो। अनुच्छेद छोटे-छोटे हों और त्रुटियों का सुधार त्रुटिके ऊपर के स्थान पर होना चाहिये। बार-बार कापियोंका संशोधन और पत्रकी एक ओर ही लिखना प्रशस्त है। पृष्ठ का अन्त पूर्ण अनु-च्छेदसे किया जाय। ऐसा नहीं होना चाहिये कि कोई शब्द एक पृष्ठसे आरम्भ होकर दूसरे पृष्ठ तक जाय। कापियाँ चौड़ी कम, किन्तु लम्बी अधिक हों। साफ कापियाँ संपादक अधिक पसन्द करते हैं और बहुत काट-छाँट होनेसे संवाददाता चंचल-चित्तका समझा जाता है।

ऐसे संवादसे कोष-वृद्धि-आन्दोलनको प्रोत्साहन मिल सकता है। यह यदि स्वसृष्ट घटनाभी हो तो क्षम्य है क्योंकि इसका उद्देश्य रचनात्मक है।

गर्मीकी छुट्टियोंमें न्यायालय, संसद, विद्या-मण्डल आदिकी बैठकें स्थगित रहती हैं। ऐसा समय और भी आता है जबकि वृत्त-विवरणकी सामग्रीकी कमी खटकती है। संवाददाताको ऐसा कोई क्षेत्र नहीं मिलता, जहाँ से वह वृत्त संग्रह करे। ऐसी स्थिति में वह दुकानों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा ऐसे अन्य स्थानोंका चक्कर लगाता है। ऐसे समय में साधारण-सी घटनामें कुछ जोड़कर या अन्यथा भी वह रोचक घटनाकी सृष्टि करता है। वह पुस्तक-विक्रेताके यहाँ पहुँचा। वह देखता है कि एक व्यक्ति कोई पुस्तक खरीद रहा है और उसकी आँखोंमें आँसू हैं। संवाददाता कुछ अध्ययन कर घटनाकी सृष्टि करता है :—

'४० वर्षीय पिताने पुस्तक-विक्रेताके यहाँ अनेक पुस्तकों पर नजर डालनेके क्रममें एक पुरानी पुस्तकपर भी नजर डाली। उसने पुस्तक उठायी और 'पिताजीके कर-कमलोंमें समर्पण' पर दृष्टि पड़ते ही आँखों में आँसू छलछला आये। उसने मूल्य दिया और पुस्तक लेकर चुपचाप अपने घरकी ओर प्रस्थान कर दिया। पुस्तककी रचना उसके दिवंगत पुत्रने १५ वर्ष पहले की थी। उसी वर्ष उसका प्रवासमें देहावसान हो गया था। यह पहला अवसर था जबकि पिताको इस समर्पणकी बात एकाएक मालूम हुई।'

नये संवाददाताकी कठिनाई

प्रारम्भमें संवाददाता-लेखकको शीघ्र कापियां तैयार करनेमें कठिनाई होती है। किसी शब्दके झंझटमें पड़कर वह कईबार कापी लिख-लिखकर काटता जाता है तथा उसे अपनी विफलताकी आशंका होने लगती है। संपादकीय कार्यालयका विक्षुब्ध वातावरण, कापी ढोनेवाले चपरासीका आवागमन, अधिकारियों का गर्जन-तर्जन और संवाद-टंकन-यंत्र (टेलीप्रिन्टर) की कर्णकटु-ध्वनि के कारण शान्ति वहां भटकने नहीं पाती। विलम्बसे बचना आवश्यक है, किन्तु बहुत शीघ्रता करनेसे और भी अधिक विलम्ब होनेकी स्थिति पैदा हो जाती है। शान्त-चित्त से लिखने पर कम त्रुटियाँ हो सकती हैं।

इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि पुराने संवाददाता का तेजीके साथ नया संवाददाता नहीं लिख सकता। इसलिए उसे अधोलिखित उपाय अपनाने चाहिये :—

किसी संवादका लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व वह प्रकाशित वृत्तपत्र का समाचार पढ़े। उसे आदर्श मानकर ही उसके अनुसार अपने वृत्त-विवरणमें भी प्रमुख विषय को आमुख बनावे; अन्य अनुच्छेदोंको भी यथा-स्थान निवेश करने का सकेत अंकित कर दे। इसके बाद वह अपनी सरल भाषामें प्रत्येक अनुच्छेदका सारांश लिखे। इस प्रकारका अभ्यास लगानेसे भविष्यमें शीघ्रतापूर्वक लिखने की प्रवृत्ति बन जायगी। तैयार की गयी कापियों को पुनः देखकर अनावश्यक शब्दों को उनमें से हटा देना चाहिये। सरल वाक्य में शुद्ध लिखने का अभ्यास सवाददाता को सफल बनाता है। इसके बाद टंकित

कर उसका पुनः संशोधन कर देना चाहिये। विशिष्ट रूप से प्रचलित शब्दों पर ध्यान देते हुए संक्षिप्त संकेताक्षरों की प्रणाली पर भी संवाददाता ध्यान दे। 'स्वर्गीय' शब्द के लिए 'स्व०' और 'पंडित' के लिए-'पं०' आदि संयुक्ताक्षर लिखना प्रशस्त नहीं होना चाहिये।

औद्योगिक अंचल

औद्योगिक क्षेत्र जनजीवनमें महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस क्षेत्र का वृत्त-विवरण तैयार करना विशिष्ट प्रकार की योग्यता और चातुरीकी अपेक्षा करता है। औद्योगिक अंचल की गतिविधि का वृत्त-विवरण तैयार करनेवाले संवाददाताके लिए व्यापारियों, उद्योगपतियों, श्रमिकों और मजदूर-संघोंके पदाधिकारियों से संपर्क रखना नितान्त अपेक्षित है। बड़े समाचारपत्रों या समाचार-संघटनोंमें तद्वृत्त सम्बन्धी ज्ञान रखनेवाला संपादक पृथक् ही होता है। वह बाजार की गतिविधि पर दृष्टि डालता है। सूती-वस्त्र उत्पादन-केन्द्र में स्थित समाचारपत्र सूती-वस्त्र के बाजारपर, लोहा-उत्पादन-केन्द्र का समाचारपत्र लोहा-बाजार पर और कोयला-क्षेत्र का समाचारपत्र कोयला-बाजार पर विशेषरूप से ध्यान देता है। बड़े-बड़े स्टाक-एक्सचेन्जों के समाचार प्रायशः बड़ी-बड़ी समाचार-समितियाँ देती है। प्रान्तीय बाजार-दर आदि के समाचार स्थानीय सूत्र से ही प्राप्त कर लिये जाते हैं।

बाजारकी गति-प्रगति का जानकार संवाददाता इस विषय में पटु सिद्ध होता है। उसे दलालों, शेयर-होल्डर तथा अन्य सम्बद्ध व्यक्तियों से संपर्क रहने पर बाजार की स्थिति जानने में सुविधा होती है। साधारण संवाददाता के लिए भी औद्योगिक और प्रान्तीय क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण वृत्त-विवरण पाना संभव है। औद्योगिक कंपनियों के कुछ परचे समाचार-पत्रोंके कार्यालयोंमें भेजे जाते हैं, जिनसे कभी बड़े-बड़े वृत्त-विवरण भी तैयार हो सकते हैं। शेयरोंके सम्बन्धमें यदि यह आँकड़ा मिल जाय कि

प्रति शेयर कितनी आय आती है, तो उससे अन्ततोगत्वा यह समाचार भी मिल जायगा कि लाभांश कितना होगा। लाभांशके ज्ञानसे 'बोनस' का अनुमान होगा, जो वस्तुतः बहुत ही महत्त्वपूर्ण समाचार होगा। आपको इस प्रकारका भी अनुमानात्मक वृत्त-विवरण प्राप्त हो सकता है कि अमुक व्यक्ति छोटे मिस्त्री या कारीगरसे बहुत बड़े लोहा-कारखाने का मालिक बन जायगा।

आयात-निर्यात के सम्बन्ध में बड़े-बड़े समाचार वाणिज्य और औद्योगिक अंचलों में मिलते हैं। वाणिज्य-व्यापार-मंडलोंसे आपको खुद आँकड़े मिलेंगे किन्तु उनमें छिपा हुआ तेजी-मंदीका समाचार आपके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। विशेषज्ञ संवाददाता तो इस ओर ध्यान देता ही है, किन्तु सामान्य संवाददाताके लिए भी इसमें रोचक दृष्टिकोणमूलक समाचार प्राप्त करना बहुत आसान रहता है।

उदाहरण के लिए आप इस बात पर सोचें। मान लीजिये कि आपने समाचार प्रकाशित किया—'देशमें रूई का अभाव, बाहर से आयात बन्द'---तो इसका असर तुरत बाजारपर पड़ेगा। आप देखेंगे कि सूती वस्त्रों का मूल्य बढ़ गया है। इससे जनता का बहुत बड़ा अहित भी हो सकता है। लोग सूती-वस्त्र छिपाने लग जायँगे। इसका यह अर्थ नहीं कि आप इस प्रकार का समाचार नहीं तैयार करें। आप ऐसे वृत्त को प्रकाशित तो अवश्य करावें, किन्तु बहुत प्रमुखताके साथ नहीं। आप यह न भूलेंगे कि प्रमुखता देना आपके हाथ में नहीं है, किन्तु वृत्त-विवरणकी शब्दावली तो आपके ही हाथ की चीज है। विवरण की पूरी छानबीन हो, इसपर ध्यान अवश्य रहे। किसी दृष्टिसे वाणिज्य और औद्योगिक अंचल उपेक्षणीय नहीं हैं।

समुद्र और बन्दरगाह क्षेत्र

जहाज और जहाजके यात्री भी आपको ऐसी सामग्री दे सकते हैं, जिससे आप आकर्षक वृत्त-विवरण तैयार कर सकें। बन्दरगाह ऐसे स्थान होते हैं, जहां आपको विभिन्न वर्णों और सम्प्रदायों के साथ एक ही स्थान पर मिलनेका अवसर मिलेगा। काले, भूरे और पीले चमड़े वाले लोग एवं उनके धार्मिक विश्वास, संघर्ष और जीवन-निर्वाह-प्रणालीके सम्बन्धमें आपको बड़े ही रोचक वृत्त प्राप्त हो सकते हैं। वर्ण-संघर्ष एवं खून-खराबी आदि के समाचार आपको वहां भी मिलेंगे। जहाजी अफसरों, समुद्री नाविकों, तथा चुंगी कार्यालयोंसे जल-क्षेत्रके बड़े-बड़े उत्तम समाचार प्राप्त किये जा सकते हैं। नये-नये जहाजोंके आवागमन के सम्बन्धमें समाचार प्राप्त करनेके समय आपको यह भी देखना होगा कि किसी महत्त्वपूर्ण आयात-निर्यातसे इनका सम्बन्ध है या नहीं। भीषण आंधी और तूफानसे बचकर आये जहाजका गुप्त निरीक्षण करें। कितनेकी मृत्यु हुई, इसका भी पता आपको चल जा सकता है। जहाजकेबड़े अफसर या कप्तानकी स्थिति ठीक है या नहीं, इत्यादि बातों पर आपको ध्यान देना है। जहाज पर शोकका वातावरण तथा शोक मनानेका खास प्रबन्ध देख आप यह समझ सकते हैं कि जहाजके किसी उच्च अफसरकी मृत्यु हुई है। आप जितनी गहराई तक पहुंचनेका प्रयास करेंगे, उतने ही महत्त्वपूर्ण संवादके प्राप्त होनेकी संभावना रहेगी। इसका यह अर्थ नहीं कि ऐसी घटनाएं प्रतिदिन हुआ करती हैं।

जंगी जहाजोंको देखकर आपको कई बातोंपर ध्यान देना होगा। कहां और क्यों जाता है, आदिके साथ आपको यह भी

देखना होगा कि आये हुए जंगी जहाजका कुछ ऐतिहासिक महत्त्व है या नहीं। उसके साथ किसी बड़ी विजय या किसी सम्राट्के पलायनका इतिहास हो सकता है। ऐसी स्थितिमें आप अपने वृत्त-विवरणमें उसका उल्लेख करना न भूलें। सिंहासन-त्यागके बाद बड़े-बड़े सम्राट् जिन जहाजोंसे भागते हैं, उनका भी खास महत्त्व होता है। बात पुरानी होने पर भी उसका ऐतिहासिक महत्त्व रह जाता है।

आप बन्दरगाहपर रहने पर पंचाग, दैनिन्दिनी या अन्य प्रकारकी तिथिसूचिका देखे बिना भी समय, ऋतु और मौसमकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपके वृत्त-विवरणमें उसका ऐसे प्रभावोत्पादक ढंगसे निवेश हो सकता है कि पाठकों के हृदयमें तुरत ही आकर्षण पैदा हो जाय। प्रत्येक ऋतु और मौसम की फसलें आयात-निर्यात क्रममें जहाजोंसे आतीं हैं जिनसे उपर्युक्त बातोंकी जानकारी अगत्या हो जाती है।

जहाजोंके यात्रियोंसे मिलनेपर और भी कई प्रकारके वृत्त-विवरण प्राप्त किये जा सकते हैं। आपको समाचार मिल सकता है कि 'अमुक व्यक्ति विदेशमें अमुक विषयमें डिग्री पाकर आया है', 'अमुक व्यक्ति अपने सगे-सम्बन्धियोंसे मिलनेके लिए वर्षोंके बाद हजारों मीलकी दूरी परसे आया है--आदि। चुंगी कार्यालयों में अनंगीकृत (जिसपर किसीने दाबा नहीं किया है) मालकी बिक्रीके समय भी रोचक समाचार मिलते हैं। आप यह समझ सकते हैं कि यदि बहुमूल्य वस्तुओंकी पूछ कम रही और ओठ रंगनेकी सामग्री (लिपस्टिक) अधिक बिकी तो आपको समाचार की सामग्री मिल गयी।

दुर्घटनासे बचनेके बाद सम्बद्ध व्यक्ति आपको विवरण देता है तो उसका भी खास महत्त्व होता है। डाकुओं, लुटेरों या चोरों से त्राण पानेपर और जले या अन्य प्रकारसे ध्वस्त जहाजसे निकलनेपर जो व्यक्ति अपना अनुभव प्रकट करता है, उसे उत्तम पुरुषोंमें यानी उसके साक्षात् वक्तव्यके रूपमें रहना चाहिये। उसके अनुभव-विवरणकी अतिरिक्त बातोंको संक्षिप्त रूपमें स्थान देना चाहिये।

पुलिस, कचहरी, अपराध

समय पर आप अपनी (संवाददाताकी) कोठरीमें पहुंचे। आपको टेबुलपर पड़ी एक बड़ी बही देखनेको मिली। उसमें आपने देखा कि समाचार-संपादक या मुख्य संवाददाता द्वारा दर्ज किये गये बहुत से विषय हैं। समारोहों और बैठकोंके नाम देकर उनके सामने संवाददाताओंके नाम हैं। आपके नामपर भी कुछ विषय हैं। बहुतसे विषयोंके सम्बन्धमें लिखा गया है कि ये विषय अवश्य ही प्रकाशित किये जायं। कुछ विषयोंपर यह लिखा हुआ है कि वे छोड़ दिये जायं। हत्या, अग्निकांड या रेल-दुर्घटनाके समाचार आपको अंकित नहीं मिल सकते। हां, आपको यह मिल सकता है कि 'हत्याकी छानबीन' और रेल-दुर्घटनाका अनुविवरण प्रकाशित होना चाहिये। आपको अपने नामके सामने लिखा मिला—'पुलिस, कचहरी, अपराध'।

आप पुलिसके पास पहुँचे। 'हत्याका कोई मामला है?' आपने नाम पढ़े। गुप्तचर विभागके संपर्क रहनेपर आपको कुछ और सनसनीपूर्ण संकेत मिला। पुलिस, कोर्ट-इन्सपेक्टर आपको गवाहोंके भी नाम दे सकते हैं। कहीं गिरोह पर छापा, कहीं जाली नोट बनानेका मामला और कहीं सरकारी अफसरद्वारा गबनकी घटनाका वृत्त आपको मिला। अब आपको यह देखना है कि इसमें कैसे कैसे लोग अभियुक्त हैं। आपको यह भी स्मरण रखना है कि नामके बलपर भी समाचारका महत्त्व बढ़ जाता है।

ऐसे समाचारोंमें आप पायंगे कि किसी जुआड़ीको चेतावनी देकर छोड़ा गया है। इसका महत्त्व इसलिए होगा कि अन्य व्यक्ति भी इससे सावधान रहेंगे।

आप यह भी न भूलें कि किसी व्यक्तिको दोषी बनाना आप का कर्त्तव्य नहीं। न्यायकी दृष्टिमें यदि वह अपराधी पाया जाय, तभी समाचारमें भी वह अपराधी पाया जा सकता है।
उदाहरणार्थ :—

'चार चोर गिरफ्तार !
ज्ञात हुआ है कि आज जंकशनके पासकी दुकानमें चोरी हुई जिसमें चार चोर गिरफ्तार किये गये।'

इसमें, पुलिसने चार व्यक्तियोंको चोरी करनेके अभियोगमें या संदेहमें गिरफ्तार किया है, इस आशयका वृत्त-विवरण तैयार होना चाहिये था। शीर्षकमें 'चार कथित चोर गिरफ्तार'— उचित तथा निर्दुष्ट होता। हां, न्यायालयद्वारा उनके चोर सिद्ध हो जानेपर उपर्युक्त आशयका शीर्षक उपयुक्त सिद्ध हो सकता था।

ऐसा भी देखा गया है कि कभी कभी अभियुक्तका बयान सर्वथा अप्रकाशनीय सिद्ध हुआ है। साथ ही आपको यह भी न भूलना होगा कि तुच्छ समझकर अभियुक्तोंका बयान बिलकुल ही छोड़ दिया जाय। किसी अभियुक्तके बयानका एक वाक्य ही आपको बहुत रोचक शीर्षक दे सकता है। उदाहरण नीचे देखें:—

कुख्यात चोर रामूने आज मजिस्ट्रेटके सामने बयान देते हुए कहा—मैंने पुलिसकी रोजी बहाल रखनेकी दृष्टिसे अपने अनेक असत्य नाम दिये। पुलिस मुझे बराबर झंझटमें डालती रही है। इसीका बदला लेनेके लिए मैंने दस नाम दिये हैं..........।'

इसका बहुत ही रोचक शीर्षक होगा :—"पुलिसकी रोजी बहाल रखनेके लिए दस नाम !"

न्यायालयमें दण्डित हो जानेके बाद आपको दण्डित व्यक्तिके अतीतका इतिहास मिलेगा। आप उसके सम्बन्धमें अभिलेख (रेकर्ड) की अपेक्षा न करें। मान लीजिये कि आप एक मुकदमेके निर्णयमें केवल इतना पाते हैं कि अमुक पोस्टमास्टर गबनके अभियोगमें दो वर्षके कारावासके लिए दण्डित किया गया है। आप इतनेसे संतुष्ट होते हैं तो आप अपने कर्त्तव्यका अपालन करते हैं। इसलिए आप अभिलेखसे उसके अतीतकी जानकारी प्राप्त करनेमें अग्रसर होते हैं। इसमें आपको मिलता है कि उक्त पोस्टमास्टर डाकपिउनसे उक्त पदपर पहुँचा है। अब आप इस प्रकार वृत्त-विवरण तैयार करेंगे :—

'श्री स. प्र. वर्मा, जो डाकपिउनसे पोस्टमास्टर हुए, आज उस समय जबकि मजिस्ट्रेट उन्हें गबनके अपराधमें दण्ड सुना रहे थे, लज्जासे जमीनमें गड़े जा रहे थे।

५ हजार रुपये गबन करनेके सम्बन्धमें उनपर जो मुकदमा चल रहा था, उसमें उन्हें दो वर्ष जेलकी सजा मिली।

कहिये—इस वृत्तमें कैसी रोचकता आ गयी। इसी प्रकार अभियोगका पूरा अभिलेख पढ़नेसे उस सम्बन्धमें तैयार किये गये वृत्त-विवरणमें जान आ जाती है।

कहीं हत्या हो जाती है। उसके सम्बन्धमें आपको प्रथम सूचना मिलती है। अब आपको सोचना है कि उस सम्बन्धमें आपका क्या कर्त्तव्य है। मृतककी पहचान, हत्याकी स्थिति और उसके साथके कागजपत्र एवं अस्त्र-शस्त्र आदिका पता भी शीघ्र प्राप्त हो जाता है। अब विषय रहा कि हत्या रहस्यमय है या साधारण। रहस्यमय होनेपर समाचार-संपादक संवाददाताको

आदेश देते हैं कि वह अनुवित्ररण देना निरन्तर जारी रखे। संवाददाता हत व्यक्तिके पड़ोसियों, मित्रों एवं सम्बन्धियोंसे बराबर मिलना जारी रखता है। ऐसी स्थितिमें उसे छानबीनकी नयी दिशा मिलनेकी संभावना रहती है। आपसे आशाकी जाती है कि पुलिसकी जांचमें आप सहयोग देंगे। सरकारी छानबीनमें बाधा पहुँचाना आपका कर्त्तव्य नहीं।

हत्यारे कभी कभी गुप्तचर विभागके पास ऐसे पत्र पहुँचवा देते हैं जिनमें उक्त पत्रोंके लेखकोंकी ओरसे कहा गया होता है कि वे (स्वयं पत्रलेखक) वे व्यक्ति हैं, जिनको पुलिसद्वारा खोज जारी है। इससे पुलिस उधेड़बुनमें पड़ जाती है।

—ooÇoÇoo—

संवाददाता का स्थान

संवाददाता का हृदय सर्वदा के लिए ही संवाददाता का हृदय बन जाता है। उसे वैसे व्यक्तियों से प्रेरणा लेने में गौरव का अनुभव होता है, जो संवाददाता से ऊपर के पद पर आसीन होने में सफल हुए हैं।

समाचारसंघटन के दो मुख्य विभाग होते हैं—(१) संपादकीय (२) व्यवस्था। व्यवस्था-विभाग से संवाददाता का कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। संपादक व्यवस्था विभाग के प्रति उत्तरदायी होते हैं। संपादकीय विभाग में भी अग्रलेख संपादक के अधीन रहता है। शेष रहा समाचार-विभाग, जिसके प्रधान होते हैं समाचार-संपादक। उप-संपादक, संवाददाता, चित्रकार और कलाकार मुख्यतया समाचार संपादक से संपर्क रखते हैं। संपादक (प्रधान-संपादक) समस्त संपादकीय विभाग का संचालन और देख-रेख करते हैं। संवाददाता प्रधान संपादक और समाचार संपादक से संपर्क रखता है। भारत के प्रायः सभी समाचार-पत्रों में इसी प्रकार की कार्यपद्धति और उत्तरदायित्व-विभाजन की व्यवस्था है। अन्य देशों के पत्रों में इस विभाग में यहां की अपेक्षा अधिक पद होते हैं।

'पुरुषस्तु पुष्कर पदार्थवन्निर्लेपः—की पूर्ण चरितार्थता संवाद-दाता में होती है। वह रणभूमि में, साहस के अन्य क्षेत्रों में और ललितकला मंदिर में भी समान रूप से तटस्थ होकर देखता है। मुख्य द्वार से हो या खिड़की से, किन्तु वह भीतर की झांकी लेकर ही लिखता है। छोटी घटनाओं से लेकर बड़ी घटनाओं तक की उपेक्षा करना वह सिद्धान्ततः अन्याय और कर्त्तव्य का अपालन

समझता है। संवाद-विशेष का अतिरंजन, गोपन या मुख्यता-प्रदान तो संपादक और उप-संपादक गण के अधिकार की बात है। प्रसंगवश यहां पुनः यह कह देना आवश्यक लगता है कि दैनिक समाचारपत्र की प्रतिष्ठावृद्धि का अधिक श्रेय उसके संवाददाता को रहता है। वृत्तवेद के षडंग का मेरुदण्ड संवाद ही है। इस षडंग का विश्लेषण पत्रकारिता के आचार्यों ने इस प्रकार किया है--

(१)--समाचार (२)--संपादकीय (अग्रलेख), (३) पृष्ठभूमि, (४) मनोविनोद, (५) विज्ञापन और (६) सामान्य ज्ञानवर्द्धन।

समाचार विभागीय कार्य—इस विभाग का कार्य है कि वह सामयिक घटनाओं से पाठकों को परिचित करावे।

संपादकीय विभाग—घटनाओं पर टिप्पणी और विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश, जनमत निर्माण।

पृष्ठ भूमि—ऐसी सूचनाओं या विवरणों का प्रकाशन, जिनसे प्रकाशित वृत्तों को पूरी तरह समझने में और सुविधा मिले।

विनोद—विविध विषयों का समावेश जिससे पाठकों को मनोरंजन मिले।

विज्ञापन—विक्रय के माध्यम के रूप में तदनुकूल कार्य।

सामान्य ज्ञानवर्द्धन—संवादेतर रोचक विषयों से पाठकों की सामान्य-साधारण बातों की जानकारी बढ़ाना।

ये कोई ऐसे नियम नहीं हैं, जिनका अनिवार्य रूप से पालना आवश्यक हो। इनका इस पुस्तक में इसलिए उल्लेख कि.या गय है जिससे स्थिति और विषय का दिग्दर्शन मात्र हो जाय।
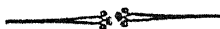
संवाद पर ऋतुओं का प्रभाव

वसन्त, गोष्म, वर्षा और हेमन्त आदि षटऋतुओं का प्रभाव भी संवाद पर पड़े बिना नहीं रहता। कभी कभी ऋतु--विशेष से संवाद-विशेष की प्रेरणा भी मिलती है। यही कारण है कि कवि-जगत्में भी ऋतुओं का स्थान प्रमुखता पाता है। किसी विरहिणी का पति बहुत दिनों से कारावास में था। आज वह आरहा है। यह विषय आपको ज्ञात हुआ है और आप आकाश में उमड़ते बादलों को देख अपना संवाद तैयार करते हैं:—

'बादल आकाशमें उमड़ रहे हैं। दिन भी रातके समान मालूम हो रहा है। मन्द मेघ-मारुत किसी पुरानी अनुभूतिको सजोव कर रहा है। मयूर नाचनेमें व्यस्त हैं।'—ऐसा अनुभव कर श्रीमती रमा आज पतिकी बाट जोह रही है। छोटा शिशु मदन भी, न जाने क्यों, हर्षसे फूला नहीं समाता।

एक घंटा पहले डाकपिउनने श्रीमती रमाको एक पत्र दिया जिसमें संवाद है कि रमाकान्त १४ वर्षोंके कारावासके बाद घर लौट रहा है!'

वसन्त ऋतु है। विवाहका समय आया है। आप विवाह सम्बन्धी संवादोंको वसन्तके वातावरणके साथ उपस्थित कर रहे हैं। वसन्तो फूलोंका मनोहर वातावरण आपके संवादोंको पूर्ण प्रभावोत्पादक बनानेमें अवश्य ही सहायक सिद्ध होता है।

ग्रीष्म ऋतु आनेपर खेल-कूद, अवकाश तथा स्कूलों और कालेजोंके बन्द होनेके समाचारमें भी आप ऋतुओंका पुट दे

सकते हैं ! ऋतु-ऋतुकी फसलोंके कटनेके समय भी संवाददाता वह वस्तु तैयार कर सकता है, जो पूर्णतया आकर्षक सिद्ध हो। कहीं तम्बाकूकी खेती होती है तो कहीं धानकी। उनके सम्बन्धमें खास खास ढंगका समाचार होगा। कहनेका उद्देश्य है कि ऋतु-विशेष और फसल-विशेषका प्रभाव वृत्त-विवरणको आकर्षक बना सकता है। यदि आपका प्रधान कार्यालय ऐसे स्थानमें है, जहां विभिन्न वस्तुओंकी खानें हैं तो उनकी ओर आपका ध्यान रहना ही चाहिये। मत्स्य-उत्पादन-केन्द्रमें स्थित संवाददाताकी विशेष अभिरुचि मत्स्य सम्बन्धी समाचारमें रहनी चाहिये। उसका कहाँ कितना निर्यात होता है तथा उससे किस प्रकारका लाभ हुआ और संभावित है, इसको भी वृत्तमें प्रश्रय देना उचित है।

राजनीति

साधारण और स्थानीय चुनावोंके समय आपको बहुत ही आकर्षक वृत्त मिल पायँगे। आप चुनावके समय परिणामको प्रकाशित करनेकी प्रतीक्षामें न रहें।

इससे पहले आपको बहुत संवाद मिलेंगे। आप पायँगे कि विभिन्न दल चुनावोंमें उतरे हैं। उनके अलग अलग प्रतिज्ञा-पत्र हैं। देशकी विभिन्न वर्गोंकी समस्याओंके लिए अपनायी जाने-वाली नीतिका ही सबके प्रतिज्ञापत्रोंमें दिग्दर्शन है। अब आपको देखना है कि किस दलके चुनाव-प्रतिज्ञा-पत्रके किस अंश पर लोग विशेष टिप्पणी करते हैं और क्यों। आप इस सम्बन्धमें अनुविवरण तैयार करेंगे और लोगोंके सामने रखेंगे।

चुनावके उम्मीदवारोंका व्यक्तित्व बहुत ही रोचक प्रसंग होता है। आप उसके अतीतको भी लोगोंके सामने रखेंगे, जिससे वे सही जानकारी प्राप्तकर उचित रुपसे मतदान कर सकें।

इसमें आपको अपने समाचारपत्र या समाचार-संघटनका रुख देख लेना है। आप प्रतिदिन किसी विषय पर श्रम करें और वह निश्चित रूपसे अप्रकाश्य हो बना रह जाय तो इस श्रमकी क्या आवश्यकता है!

मालिकोंकी अपनी अपनी नीति होती है जो सर्वदा निर्णायक सिद्ध होती है। आपको जिस प्रसंगके सम्बन्धमें स्पष्ट ज्ञान नहीं है, उसमें निर्दुष्ट, निष्पक्ष विवरण उपस्थित कर ही देना है। केवल उस विषयमें, जिसके सम्बन्धमें आपको पूर्ण रूपसे विश्वास है कि अमुक विषय कथमपि समाचार-पत्रमें प्रकाशित नहीं होगा, आप निष्क्रिय हो जायँ।

चुनावमें भी किसी दल या उम्मीदवारका आपका समाचार-पत्र या समाचार-संघटन समर्थन करता है। ऐसी स्थितिमें जान-बूझकर आप अनावश्यक ढंगसे वृत्त-विवरण नहीं भेजें।

इसका यह तात्पर्य नहीं है कि आप तटस्थ दर्शकके रूपमें अपने कर्त्तव्यका अपालन करते हैं; यह आपकी विवशता होगी जो सम्प्रति अनिवार्य हो गयी है।

संदिग्ध विषय आपके सामने आयंगे। उन्हें रखना आवश्यक भी हो तो आप संदेह व्यक्त करते हुए ही रखेंगे।

चुनावमें अनावश्यक रूपसे आलोचना-प्रत्यालोचना होती है। आलोचना और प्रत्यालोचनाके विषयकी गंभीरता देखते हुए ही आप उसे प्रश्रय देंगे। अश्लील आलोचना-प्रत्यालोचनाको प्रश्रय पाते देखकर कुछ लोग संवाददाताको गाली देते हैं, ऐसे लोगोंको चाहिये कि वे अश्लील आलोचना-प्रत्यालोचनाके अंकुरके ही अन्तके लिए प्रयत्न करें। ऐसा होनेपर वृत्त-पत्र वैसे अश्लील तत्त्वोंसे स्वयं मुक्तहो जायगा। यदि समाज पतित रहेगा तो उसके पतनका प्रतिबिम्ब वृत्त-पत्र पर पड़ेगा ही, क्योंकि वृत्त-पत्र जनजीवनकी दैनन्दिन गति-प्रगतिका प्रतिबिम्ब उपस्थित करता है। ऐसे समाचारोंको, जो दो वर्गों, दो देशों, दो धर्मों या दो दलोंके बीच परस्पर संघर्ष करा देनेमें सहायक हों, प्रश्रय नहीं देना चाहिये। जनहित तो संवाददाताका सर्वप्रथम लक्ष्य है। चिरन्तन सत्य-द्रष्टाओंके मार्गपर चलकर ही संवाददाता जन-कल्याण कर सकता है। स्मरण रहे :—

'अब्रुवन् विब्रुवन् वाऽपि
नरो भवति किल्विषी।'

विविध विषय

समाचारपत्रोंका जनताके मस्तिष्क पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। अमेरिका, रूस और इंगलैंड जैसे समृद्ध और शक्तिशाली देशोंमें पत्रोंकी संख्या बहुत है। यंत्र-तत्र लोग समाचारपत्र पढ़ते या हाथमें लिये दिखाई देते हैं। बहुत व्यस्त जीवन रहने पर भी लोग कुछ न कुछ समय निकालकर समाचारपत्र अवश्य पढ़ते हैं। होना भी चाहिये, समाचारपत्र राजनीतिके अंग होते हैं, जिससे (राजनीतिसे) प्रत्येक मनुष्य का, चाहे वह शहर का निवासी हो या गाँवका, कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य होता है। जनतांत्रिक देशों में तो जनताके चुने हुए प्रतिनिधि क्या कर रहे हैं, इसकी जानकारीके लिए भी समाचारपत्र आवश्यक हो जाता है। भारतवर्षमें भी मांग बढ़ रही है। लोग समाचारपत्र पढ़नेके प्रति ,उत्सुक होते जा रहे हैं। इस देशमें सम्प्रति :देशी और अंग्रेजी भाषामें लगभग दस हजार दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्र प्रकाशित होते हैं। अब हिन्दीके राष्ट्रभाषापद पर आसीन हो जानेके बाद हिन्दी के समाचारपत्रों का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है।

पत्रकारितामें प्रवेश करने पर पत्रकारों को जनता और देशके प्रति अपने उत्तरदायित्वोंका अनुभव करना चाहिये। वह किसी शासकके विरुद्ध घृणा का वातावरण तैयार कर सकता है, किसीको ऊँचा उठा सकता है तथा किसी को मार्ग पर आनेकी सलाह दे सकता है। दो वर्गों, दो सम्प्रदायों तथा दो देशोंके बीच मैत्री या द्वेष का वातावरण तैयार करना भी उसके लिए आसान है। इसलिए उसे बराबर मानवताके हितचिन्तनमें सजग

रहना है। पत्रकारके सामने प्राचीन ऋषि-मुनियों का आदर्श रहना चाहिये, जो निर्धन रहने पर भी राजाओंके प्रलोभनसे परे रहते थे और उचित वक्ताके रूपमें सारी बातें कहते थे।

पत्रकारिताकी महत्ता तो सर्वोपरि है। किन्तु इस बहुव्यय-कारी यान्त्रिक युगने समाचारपत्रोंको कुछ लोगों के हाथ का खिलौना बना डाला है। समाचारपत्र चलानेमें जो रुपये लगाते हैं, उनका ही दृष्टिकोण मुख्यतया उसमें प्रतिबिम्बित होता है। व्यवसायी लोग विज्ञापन देनेके कारण समाचारपत्रोंके पोषक समझे जाते हैं। ऐसी स्थितिमें समाचारपत्रोंकी स्वतन्त्रता पर संकट आ गया है। देशके राजनीतिक दलभी अपने-अपने विचार के प्रचारके लिए समाचारपत्र चलाते हैं, और समाचार-समितियां स्थापित करते हैं। आजकल अधिक लोग उसी समाचारपत्रको पढ़ते जिसका झुकाव उनके झुकाव से मिलता-जुलता है। निष्पक्ष समाचारपत्र आज सामान्यतः दुर्दशाग्रस्त ही नजर आ रहे हैं। साम्यवादी देश रूसमें तो बड़े-बड़े पत्र सरकारके हैं और साम्यवादी नीति का समर्थन करते हैं। वहाँ विरोधी विचार वाले पत्र को उतना भी प्रश्रय नहीं मिलता जितना कि अमेरिका और इंगलैंडमें मिलता है।

भारतीय समाचारपत्रोंकी दशा तो और भी चिन्तनीय है। यहाँ कलकत्तेसे सन् १७८० में पहला समाचारपत्र 'बंगाल गजट' के नामसे प्रकाशित हुआ। इसके बाद कुछ और समाचारपत्र प्रकाशित होने लगे। ये समाचारपत्र सरकारके आलोचक थे। जब देशी भाषाओंके पत्रोंने सरकारकी कड़ी आलोचना शुरू की तो अंग्रेजों की देखरेखमें प्रकाशित होनेवाले पत्रोंकी दिशा बदल गयी और वे सरकार-समर्थक बन गये। इस प्रकार यहाँ के समाचारपत्र दो भागोंमें बंट गये। प्रेस-ऐक्ट यहाँ १७९९ में लार्ड

बैलेस्लीके समय लादा गया जो देशके स्वतन्त्र होने पर भी (अभी तक) किसी न किसी रूपमें चलता आ रहा है। इसका अध्ययन प्रत्येक पत्रकारके लिए आवश्यक है। राजद्रोह और मानहानि आदिकी ऐसी धारायें हैं जिनके अन्तर्गत कितने पत्रकार अभी तक जेलकी सजा भुगत चुके हैं। खेद है कि देशके स्वतन्त्र होने परभी पत्रकार जनताके वास्तविक भाव को प्रकाशित नहीं कर पाता। विदेशी सरकारके लिए जो चीजें आवश्यक थीं वे आजभी आवश्यक ही समझी जा रही हैं।

श्रमजीवी पत्रकार का इस व्यावसायिक संघटनमें बड़ा ही तुच्छ और दुःखमय स्थान है। वह दूर-दूर के लोगोंकी बातोंको सरकार तक पहुँचा सकता है, किन्तु बन्द कमरेमें अपने ऊपर बीतनेवाली घटनाओंके सम्बन्धमें चीं-चपड़ तक नहीं कर सकता। सच्ची पत्रकारिता द्वारा धनसंचय का स्वप्न देखना तो महान भ्रम ही है। उसका (पत्रकारका) नाम भी कोई नहीं जानता। संपादक या पत्र-मालिक समाचारपत्रोंके सम्पादकके रूपमें भी अपना नाम प्रकाशित करते हैं। अग्रलेख लिखनेके लिए किसी को कुछ रुपये मासिक देकर भी वे काम चला लेते हैं।

इन दुःस्थितियोंके बावजूद कुछ दिनों तक काम करनेके बाद पत्रकार पर पत्रकारिताकी ऐसी धुन सवार हो जाती है कि वह बड़े-बड़े पद और वेतन को भी सहर्ष ठुकरा देता है। इंगलैंड के प्रसिद्ध पत्रकार जे० ए० स्पेण्डर का नाम प्रायः बहुत लोग जानते हैं। उन्हें ब्रिटिश मंत्रिमंडल का सदस्य-पद पत्रकारिताकी अपेक्षा तुच्छ जँचा था। भारतमें भी ऐसा उदाहरण मिलता है। श्री चिन्तामणि सम्पादकसे मन्त्री बने और पुनः उसे छोड़ सम्पादक का कार्य अपनाया।

संपादकीय विभागसे लेकर प्रेस तकका वातावरण बराबर विक्षुब्ध रहता है। सभी अपने-अपने काममें लगे रहते और टेलीप्रिन्टर भी अपनी कर्णकटु आवाजके साथ देश-विदेशका संवाद टंकित कर उगलता रहता है। यह टेलीप्रिन्टर अभीतक दुर्भाग्यवश सिर्फ अंग्रेजीमें संवाद दे रहा है। हिन्दीमें यह संप्रति प्रयोगात्मक स्थितिमें है। संभावना है कि शीघ्र हिन्दी टेलीप्रिन्टर का भी पूर्ण विकास-विस्तार होगा। अंग्रेजीके उपसंपादकतो टेली-प्रिन्टर परसे बने-बनाये समाचार फाड़कर उनमें अपेक्षित संशोधन कर प्रेसमें भेज देते हैं। किन्तु हिन्दीके उप-संपादकोंको समाचार का सारांश और कहीं-कहीं पूरा अनुवादभी हिन्दीमें करना पड़ता है। प्रेसमें कंपोज होनेपर प्रूफरीडर' उसे शुद्ध करते यानी मूल कापीसेमिला लेते हैं। 'प्रूफरीडर' का सहायक 'कापी-होल्डर' होता है जो मूल-लिपि पढ़ता जाता है।

अनन्तर उप-संपादक समाचार पत्रके एक एक पृष्ठके सांचे को टेबुल पर रखवा कर महत्त्वकी दृष्टिसे समाचारोंको बैठानेके लिए कहता और पूरा पृष्ठ तैयार होनेपर उसका प्रूफ-संशोधन कर देता है। इसमें समयपर उसे सबसे अधिक ध्यान रखना पड़ता है। प्रतियोगिता यह रहती है कि जो समाचारपत्र जितना शीघ्र पाठकोंके पास पहुँचेगा, वह उतना ही अधिक बिक सकेगा। उन्नत प्रेसोंमें समूचे समूचे पृष्ठका एक ठोस ब्लाक बन जाता है जिसे 'स्टीरियो' करना कहते हैं। इसके बाद विशालकाय रोटरी इन्हें हजारों-लाखोंकी संख्यामें तुरत छाप देती और मोटरें, रेलगाड़ियाँ तथा विमान उन्हें दूर दूर तक पहुँचा देते हैं। समाचारपत्रके सभी पृष्ठोंके प्रूफ देख लेनेके बाद उप-संपादक भारमुक्त हो जाता और व्यवस्था-विभागके अनेक उप-विभाग कार्यशील हो जाते हैं।

तार, टेलीफोन और रेल आदि की भांति समाचारपत्रोंका भी कार्य चौबीस घंटे जारी रहता है। संपादकीय विभागके लोग बारी-बारीसे आते और काम करते हैं। संपादक और उनके सहायक दिनभर कार्यालयमें त्रुटियाँ निकाल-निकाल कर दिखाने में व्यस्त रहते हैं किन्तु रातमें बेचारे उप-संपादकका कोई सहायक नहीं होता।

उपसंपादक समाचारोंको चुनता और महत्त्वपूर्ण समाचारों को प्रथमतः स्थान देता है। उसके सामने यही सिद्धान्त रहता है कि जिज्ञासा और कौतूहल पैदा करनेवाला विषय ही समाचार है। यह सर्वविदित है कि उप-संपादकके हाथमें चार अस्त्र होते हैं। समाचारोंको चुनना-प्रथम, समाचारोंको दबाना या किसी कोनेमें छाप देना–द्वितीय, प्रधानता देना–तृतीय और तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित कर देना--चतुर्थ अस्त्र है। समय, सत्यता, कानून और पूर्णता--इन चारों बातों पर उप-संपादककी दृष्टि एक साथ पड़ती रहनी चाहिये।

बड़े बड़े टाइपों में बड़े बड़े शीर्षकवाले समाचार देनेके बाद मुख-पृष्ठ पर स्थान नहीं रहे और कुछ अच्छे समाचार बच गये हों तो उन्हें वह (उप-संपादक) स्तम्भके दोनों भागोंमें कुछ स्थान छोड़कर (इन्डेण्ट), काले टाइपमें या 'बाक्स' में रखवानेका प्रयास करे। समाचारपत्र प्रकाशनका समय आ गया हो और मुख-पृष्ठ पर प्रमुख स्थान पाने योग्य समाचार आ जायं तो उसे वह 'छपते-छपते' के नीचे रखे। दो-चार पंक्तियोंमें प्रकाशित हो सकने योग्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना हो जाय तो पांच-सात मिनट समय मिलने पर भी वह पूरे पृष्ठके शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित की जा सकती है।

जिनाकी मृत्युका समाचार कुछ विलम्बसे पत्रोंको मिला था।

मुझे स्मरण है कि बहुत कम पंक्तियोंमें उस समाचारको कम्पोज कराकर प्रथम पृष्ठ पर एक स्तम्भमें बैठा दिया गया और उसके बदले एक छोटा समाचार हटा दिया गया। पूरे पृष्ठके शीर्षक के लिए जगह बनानेके हेतु सभी समाचारोंसे सिर्फ दो चार स्पेस खींच लिये गये। बस क्या था, समाचारके साथ जिना का चित्र भी छाप दिया गया। प्रातः उसे देखने पर लोगोंको पूर्ण संतोष हुआ। देर कर देने पर उक्त पत्रके पाठकों को चौबीस घंटेके बाद वह समाचार मिल पाता। चित्रोंका समावेश किसी पत्र को आकर्षक बना डालता है। युद्ध यदि कहीं छिड़ा तो उस स्थान का नक्शा समय पर प्रकाशित होने पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। बड़े बड़े देशों के प्रतिनिधियों के बीच वार्त्ता हो तो उन प्रतिनिधियों के चित्र पृष्ठ के महत्व को सभी दृष्टियों से बढ़ा देते हैं। यह विषय संवाददाताओं के लिए भी ध्यान रखने योग्य है, ऐसा तो पहले भी बताया जा चुका है। प्रसंगवश यहाँ एक बात लिख देना आवश्यक है कि चित्र छापने के समय यह ध्यान अवश्य रहे कि वह चित्र समाचार के देश-काल-पात्रके विपरीत न हो। उदाहरण—कोई राजनेता जर्जर-वृद्ध होकर मरा है। उसका समाचार आप प्रकाशित करते हैं। अस्सी वर्ष से भी अधिक अवस्था में उसकी मृत्यु हुई, किन्तु आपने उसके बाल्यकाल का चित्र प्रकाशित किया। बताइये कि यह कितना भद्दा प्रतीत होगा! किसी का विवाह सम्पन्न हुआ है, किन्तु चित्र छपा है—उसके शैशव का। क्या यह भी रोचक सिद्ध हो सकता है? कई समाचारपत्रों में ऐसे चित्रों का प्रकाशन देख मुझे स्वयं कईबार झुँझलाहट हुई है।

शीर्षक वर्तमान या भविष्यकाल में हो—भूत में नहीं। यदि एक समाचार के दो शीर्षकों में एक ही नाम दो बार रखने की

आवश्यकता पड़े तो वहाँ एक में नाम और दूसरे में उसके पद का उल्लेख उचित है।

'कश्मीर भारत का अंग'

"पंडित नेहरू का वक्तव्य"

'अन्य समस्याओं पर प्रधान-मंत्री द्वारा प्रकाश'

उपर्युक्त उदाहरण आप देखें। उसमें तीन शीर्षक हैं। एक शीर्षक में 'पंडित नेहरू' तो दूसरे में 'प्रधानमंत्री' शब्द दिया गया है। अन्तिम शीर्षक दो भागों में विभक्त है, उसमें भी अन्तिम अंश, यानी दूसरी पंक्ति, आपेक्षिक छोटी है। इससे शीर्षक देखने में भी अच्छा लगता है।

यह भी देखने को मिलता है कि एक शीर्षक में दो पंक्तियां हो जाने पर लोग दूसरी पंक्ति में प्रथम पंक्ति से भिन्न टाइप देते हैं। यह प्रणाली प्रशस्त, शुद्ध तथा युक्तियुक्त नहीं है।

(१) पूर्ण पृष्ठक (बैनर, स्ट्रीमर), (२) विभक्तपूर्ण पृष्ठक, (ड्राप लाइन), (३) उप-शीर्षक (सब हेड), (४) शेषांश शीर्षक (जम्प हेड) और (५) ध्वज (फलैग) आदि शीर्षक के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकार हैं।

सम्पादकीय कहीं प्रथम पृष्ठ पर और कहीं भीतरके पृष्ठ पर जाता है। भीतर पृष्ठवाली प्रणाली अधिक प्रचलित है। 'सम्पादकके नाम पत्र' वाला स्तम्भ प्रायः प्रत्येक समाचारपत्र में रहता ही है। कहीं कहीं इसके लिए 'चिट्ठी', संपादक की डाक आदि स्तम्भ बने रहते हैं। समाचार-समितियों के समाचार अधिकतर प्रकाशित होते हैं। इनमें रायटर की सबसे पुरानी समाचार-समिति है। पुराने समय में व्यापारियों के दल दूर-दूर से खबरें लाते थे। उन्हीं के आधार पर बाजार-भाव का भी उतार-चढ़ाव

होता था। अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में राथ्स चाइल्ड की फर्म ने इस प्रकारके समाचार से बहुत धन कमाया। वाटरलूके युद्ध में नेपोलियन की जो हार हुई थी उसकी खबर सबसे पहले चाइल्ड ने ही लोगों को दी थी। वह डाक भेजने में कबूतरों से सहायता लिया करता था।

तार-सम्बन्ध नहीं रहने के कारण जो कठिनाई होती थी, उसे उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग जर्मनी की एक बैंक के किरानी जूलियस रायटर ने महसूस किया। १६१५ में इसके पुत्र ने इस कार्य को संभाला। बाद में ब्रिटेन के प्रेस-असोसियेशन ने रायटर की समाचार-समिति को खरीद लिया।

भारत में सर्वप्रथम न्यूज-सर्विस चली, किन्तु वह टिक नहीं सकी। बाद में 'असोसियेटेड प्रेस आफ इण्डिया', १६२५ में 'फ्री-प्रेस सर्विस', १६३४ में 'युनाइटेड प्रेस' और १६४८ में 'हिन्दुस्थान समाचार' आदि समाचार-समितियों का उदय होता गया।

समाचारपत्रों या समाचार-समितियों में संवाददाता से विशिष्ट स्थान प्रतिनिधि का होता है। वह विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट रूप से नियुक्त किया जाता है।

कुछ लोगों का कहना है कि रेडियो के बाद समाचारपत्रों की उपयोगिता घट गयी है। किन्तु अनुभव से तो ऐसा सिद्ध नहीं होता। सुनी बात की अपेक्षा देखी बातका अधिक असर पड़ता है और इसीलिए समाचारपत्र रेडियोके बाद अधिक अपेक्षित और आवश्यक हो जाते हैं। इसके लिए तो समाचार-पत्रोंकी जिज्ञासा होती ही है, साथ ही विरोधी दलोंके विचारोंकी जानकारीके लिए समाचारपत्र आव-

श्यक हो जाते हैं। स्मरण रहे कि रेडियो पर सभी दलोंके समाचार समान रूपसे प्रकाशित भी नहीं हो पाते। अस्तु, यह हमारे समाचारपत्रोंकी आवश्यकताको बढ़ाता है घटाता नहीं।

समाचार पत्रोंको राजनीतिक, साहित्यिक या अन्य किसी प्रकारका लेख देकर पुरस्कार या पारिश्रमिक मात्राकी अपेक्षा करनेवाले व्यक्ति स्वतंत्र पत्रकार और लेखक कहलाते हैं। ये पत्रकार विदेशोंमें बहुत संख्यामें हैं, तथा नियुक्त पत्रकारोंकी अपेक्षा अधिक धन अर्जित करते हैं। 'सिण्डिकेटें' लेखकों और प्रकाशकोंके बीच दलालका काम करती है, और, इस प्रकार इस व्यापारके अनेक अंग-उपांग बन चुके हैं। सिण्डिकेट लेखकसे लेख लेकर बहुतसे प्रकाशकोंको एक ही साथ भेजती है। इस प्रकार अर्जित धनमें कुछ हिस्सा उसका और कुछ लेखकका होता है।

पत्रकार स्वतंत्र होनेके लिए सबसे अधिक आवश्यक यह है कि इच्छुक व्यक्ति प्रतिदिन कुछ न कुछ अवश्य लिखे। विभिन्न पुस्तकों, समाचारपत्रों और अभिलेखोंसे संगृहीत आँकड़ोंके आधार पर वह विभिन्न प्रणालीसे विभिन्न पत्रोंके लिए विभिन्न लेख तैयार कर सकता है। दूसरेके लेखको रूपान्तरमें लिखने की क्षमता स्वतंत्र पत्रकारको सफलता प्रदान करती है।

लेखका शीर्षक छोटा और आकर्षक हो, सामयिक होनेके साथ ही उसका रुचिकर होना आवश्यक है, आरम्भ आकर्षक ढंगसे किया जाय, प्रतिपाद्य विषयकी पुष्टिमें युक्तियां तथा तर्क ठीक हों, लेख पुराना नहीं जान पड़े, लेखका परिणाम स्पष्ट हो और लेख एकाएक समाप्त नहीं किया गया हो।

'प्रूफ' उसे कहते हैं, जो प्रकाशनके पहले कम्पोज किये गये विषयको लम्बे कागजपर छापकर संशोधकके सामने रखा जाता

है। इस कामके लिए कुछ चिह्न हैं जो अंग्रेजी ढंगके ही हैं। उक्त लम्बे कागजकी दोनों ओर कुछ जगह रहती है, जिसपर संशोधन और उसके चिह्न अंकित किये जाते हैं। ये चिह्न हैं :—

D निकाल दें।

ɑ अक्षर सीधा करें।

() अक्षरों को निकट करें।

= अक्षर ऊपर नीचे हो गये हैं, एक पंक्ति में करें।

▭ स्थान छोड़ें, जैसा नये अनुच्छेद में होता है।

॥/॥ जगह (स्पेस) बनावें।

॥/॥ नया अनुच्छेद (पैरा) प्रारम्भ करें।

∠ स्पेस कम करें।

X अक्षर बदलें।

(दो पंक्तियों के बीच की जगह कम करें।

⊙ अनुस्वार

(:) विसर्ग

...[बाईं ओर हटावें।

] दाईं ओर हटावें।

⌐ ऊपर हटावें।

⌞⌟ नीचे हटावें।

‿ स्पेस दबा दें।

, विराम लगावें।

“ ” दो अवतरण चिह्न लगावें।

‘ ’ एक अवतरण चिह्न लगावें।

! संबोधन चिन्ह।

? प्रश्न सूचक चिन्ह।

||| ऊपर-नीचे की पंक्तियां एक प्रकार सीधी करें।

Stet जैसा है, वैसाही रहे।

en छोटा डैस दें।

em बड़ा डैस दें।

??? क्वेरी, ठीक करावें ।

|| खाली स्पेस बराबर करें ।

tr जगह बदलें ।

wf गलत टाइप ठीक करें ।

See copy कापी से मिला लें ।

Run on नया अनुच्छेद नहीं बनावें ।

Ital इटालिक टाइप बैठावें ।

ld दो पंक्तियों के बीच अधिक जगह बनावें

sp अक्षरों की जगह अंक लगावें ।

Romn रोमन टाइप लगावें ।

परिशिष्ट

समाचारपत्रों और समाचार-समितियों के विकास में उनके प्रधान-या यों कहिये मालिक-का निरन्तर ध्यान रहना अति आवश्यक है। साथ ही उनका समाचार-संघटन के सभी कार्यों से परिचित रहना तो सोने में सुगंध के बराबर है। ऐसी स्थिति में समाचारपत्रों और समाचार-समितियों का उत्थान बहुत प्रगति के साथ होता है। हमारे यहां इसका बहुत अभाव है। अतः जिन बड़े पत्रकार-मालिकों ने इसमें सफलता पायी है, उनके कार्यकलाप आदिसे भारतीय पत्रकारकला-संवद्ध सभी लोगोंका अवगत होना आवश्यक है। प्रसंगवश मैं एक ऐसे व्यक्ति का कार्यकलाप संक्षिप्त रूप में रख देना आवश्यक समझता हूँ, जिनका क्षण-क्षण पत्रकारिता के सम्बन्ध में शिक्षाप्रद रहा है। वे ब्रिटेन के समाचारपत्र-जगत में सूर्य के समान उदित हुए और अपने प्रकाशसे सबको आलोकित कर गये। ये सज्जन थे "डेलीमेल" के मालिक नार्थक्लिफ। उन्होंने आक्सफोर्ड में शिक्षा नहीं पायी थी, जिसके लिए कभी कभी उन्हें दुःख भी होता था। किन्तु उनके कार्य को देख कोई यह महसूस नहीं करता कि उनके सच्चा पत्रकार मालिक होने में कोई कमी थी। बहुत लोगों का कहना है कि वे समाचार-पत्र उद्योगमें धन अर्जित करने के लिए घुसे थे। किन्तु उनके कार्य से ऐसा किसी को प्रतीत नहीं होता। उन्होंने जनता की भलाई—सामान्य लोगोंके हितके—लिए सबकुछ किया। समाचारपत्र-उद्योग के विभिन्न अंगों में उनकी पूर्ण अभिरुचि तो थी ही, साथ ही संपादन और संवाद-ग्रहण के काम में उनकी क्षमता प्रशंसनीय थी।

समाचारपत्रों में किस प्रकार के चित्र प्रकाशित किये जायं, इसके सम्बन्ध में इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में कुछ बताया जा चुकाहै, फिर भी नार्थक्लिफ का इस सम्बन्ध में जो विचार था, उसे यहाँ उद्धृत करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता।

एक अवसर पर उन्होंने 'डेलीमेल' के संपादकीय विभागकी आलोचना करते हुए कहा था कि स्पेन के राजा के हंसते हुए एक ही चित्र का बराबर अनेक संस्करणोंमें प्रकाशन उचित नहीं। उनका कथन था कि अल्फोन्सो बराबर हंसते दिखाये गये हैं। उनका स्मित समाचार नहीं है। आपको ऐसा चित्र मिले जिसमें वे रोते दिखलाई पड़े हों तो आप समझें कि वह समाचार है।

इसमें भारतीय समाचारपत्रों के संपादन तथा पठनसे संबद्ध व्यक्तियों को अपने यहाँ का चित्र भली भांति स्मृति-पटल पर आ-गया होगा। वे अपने समाचारपत्रोंमें प्रतिदिन घिसे-पुराने चित्रों को प्रकाशित देख झुंझलाते हैं। यहाँ यह नयी बात नहीं कि सर तेज बहादुर सप्रू का युवा-अवस्था का चित्र आज प्रकाशित होता पाया जाता है। यह भी देखा जाता है कि सरोजिनी नायडू और कमला देवी चट्टोपाध्यायके वे चित्र आज छपते हैं जो उनकी षोड़श-वर्ष की अवस्था में लिये गये होंगे। अस्तु, इन्हीं कारणों और विचारों के कारण नार्थक्लिफ संपादकीय विभाग के भी पथ-प्रदर्शक समझे जाते रहे। कई अवसरों पर उन्होंने संपादकीय विभाग को 'डेलीमेल' के सम्बन्ध में बड़ा ही रोचक पथ-प्रदर्शन किया था। उनके समाचारपत्र का कोई अंश ऐसा नहीं रहता था, जिसके सम्बन्ध में उन्हें पूरी जानकारी न रहती हो। जब कभी समाचारकी कमी रहती थी, उनका ध्यान रोचक लेख की ओर आकृष्ट होता था। वह इस

प्रकार जिज्ञासावर्धक सिद्ध होता था कि प्रत्येक घरकी बालिकाएं और बालक अपने अभिभावक को यह कहे बिना नहीं रह पाते थे कि आज 'डेलीमेल' चाहिये, देखना है कि आज उसकी लेखमाला के अन्तर्गत कौन सा लेख प्रकाशित हुआ। लेखमाला के अन्तर्गत प्रकाशित होनेवाले लेख को प्रकाशन के लिए प्रेसमें भेजने से पहले नार्थक्लिफ स्वयं देख लिया करते थे। वे उसमें इस प्रकारका रंग डाल दिया करते थे कि पाठकों के हृदय में दूसरा संस्करण देखने की उत्सुकता बढ़ जाती थी।

इसी क्रममें एक बार 'डेलीमेल' में 'डेलीमेल की मृत्यु-दर' के नाम से एक स्तम्भ प्रारम्भ किया गया था। नार्थक्लिफ ने बताया— मेरे पास हिसाब है कि हमारे कितने पाठक प्रतिवर्ष मरते हैं। हमारी मृत्यु-दर पाँच प्रतिशत प्रतिवर्ष है। 'टाइम्स' में मृत्यु दस प्रतिशत प्रतिवर्ष है।

पाठक बूढ़े-पुराने हैं। यह बड़ी समस्या है। हम प्रतिवर्ष पाठकों की संख्या बढ़ाकर ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ये नये पाठक आवश्यक रूप से युवक लोग हैं।

अब इससे आपको भलीभांति अवगत हो जा सकता है कि ऐसे सफल पत्रकार मालिकोंका भारत में कितना अभाव है। इस अवसर पर मुझे वह प्रसंग स्मरण हो आता है, जबकि एक विदेशी तैल-तांत्रिक (विशेषज्ञ) भारत की एक तेल-मिल में आये। वे पहले मिल के इंजीनियरों से मिला करते थे, किन्तु इस बार उन्हें सबसे पहले सेठ साहब से भेंट होगयी। तेल-विशेषज्ञ ने जब तान्त्रिक विवरणों की जिज्ञासा की तो सेठ साहब ने रंज से हाथ पटकते हुए कहा—'भाई माफ कीजिये, मेरा तो केवल उत्पादन से मतलब है। कैसे क्या होता है,इस तांत्रिक उधेड़बुन या विवरण से मुझे कोई मतलब नहीं है।' तेल-तांत्रिक (टेकनीशियन) को

नैराश्य हुआ और अनन्तर उन्होंने तांत्रिक विभाग के लोगों से भेंट की। भारतीय उद्योगपतियोंके इस असली रूप की जानकारी के बाद, आशा है, भारतीय समाचारपत्रों—उद्योगपतियों के सम्बन्ध में भी सबकुछ समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

शिशुओं के लिए नया स्तंभ देनेमें नार्थक्लिफ की बड़ी अभिरुचि थी। वे महिलाओं से जानकारी प्राप्त करते थे कि शिशुओं की उत्सुकता को बढ़ाने के लिए कौन सी वस्तु सर्वाधिक उपादेय होगी। इससे उनका तात्पर्य था कि भावी पाठकोंको वे अभी से अपने समाचारपत्र की ओर आकृष्ट कर रहे हैं। लेखों के लेखक का नाम भी वे बहुत आकर्षक ढंग से देते थे। एक समय की बात है कि विलियम पॉलक का एक लेख प्रकाशित हुआ। लेख के ऊपर नाम था 'पॉलक पॉलक'। समाचारपत्र के पाठकों ने समझा कि यह प्रेस की भूल है। किन्तु अन्त में पता चला कि स्वयं नार्थक्लिफ ने ही आकर्षण बढ़ाने के लिए—'पॉलक-पॉलक लिख दिया था। उनका विचार था कि किसी भी नाम को आकर्षक रूप देने पर, भले ही वह गलत हो, लोग बहुत पसन्द करेंगे और उसके नीचे के लेख को पढ़ने के लिए प्रवृत्त होंगे।

उनका सबसे बड़ा आदर्श था कि किसी व्यक्ति के कहने पर वे अपने समाचारपत्र के कर्मचारी को नहीं डांटते थे। वे सच्चे मार्ग पर चलनेवाले पत्रकार के लिए लड़ते थे। शिकायत करनेवालोंको संक्षेप में यह उत्तर देते थे—'मेरे कर्मचारी ठीक हैं।' एक अवसर पर एक संवाददाता ने किसी अफसर की अन्तर्वार्ता की। बादमें उन्होंने टेलीफोनपर कहा कि 'अमुक अंश निकाल दें। मुख्य संवाददाता ने उत्तर दिया कि संवाददाता इसकी जांच करने के बाद ही किसी प्रकार का खंडन कर सकता है। बेचारे अफसरने क्रोधमें आकर कहा कि नार्थक्लिफ को कहा जायगा,

और आशा है वे ऐसा नहीं चाहेंगे। दूसरे दिन नार्थक्लिफको यह घटना बतायी गयी। उन्होंने कहा कि टेलीफोन करने वाले अफसरसे कह दीजिये—'मैं अपने संवाददाताको नहीं डाँटूंगा, उसने जो किया है, ठीक किया है। अफसर मेरे पास पहुँचेंगे तो उन्हें नैराश्य होगा।' यह भी एक कारण है जो पत्र-उद्योगके विकासके लिए आवश्यक है। इस प्रकार मालिक जिसे बचायगा; वह कर्मचारी निश्चित ही समाचारपत्र-उद्योगके लिए हृदयमें प्रयत्न करेगा। इसके अतिरिक्त समाचारपत्र-उद्योगके विभाग एक दूसरेसे स्वतंत्र रहे, यह भी उनका सिद्धांत था।

अपराधसम्बन्धी समाचारोंको वे बहुत ही प्रमुख समझा करते थे। प्रत्येक दिन विशिष्ट (जो दूसरे पत्रोंमें नहीं प्रकाशित हुआ हो) अपराध सन्बन्धी समाचार देकर उसकी विशिष्टताकी पृथक् जानकारी दे देना भी वे समाचारपत्रका कर्त्तव्य समझते थे। हत्याकी घटना हो और उससे किसी महिलाका संबंध हो तो उसे स्वभावतः लोग अधिक पढ़ते हैं। ऐसा समाचार जिस दिन प्रकाशित हो, उस दिन आप बाजारका रुख देख लें तो स्वयं यह बात मालूम हो जायगी। नार्थक्लिफ जनताकी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तिका अध्ययन करनेमें अपना पूरा समय लगाते थे। इसीसे उन्हें जनोपयोगी पत्र प्रस्तुत करनेमें पूरी सफलता मिली। किस वस्तु में लोगों की अभिरुचि है, किसके बारेमें लोग चर्चा करते हैं, सबसे अधिक किस बातकी चर्चा होती है, यह विचार वे बराबर करते थे। अन्य लोग, उनकी विफलताएं और सफलताए, उनका सुख उनकी तकलीफ, उनका भोजन और कपड़ा आदि ऐसे विषय हैं, जिनके सम्बन्ध में तैयार किये गये समाचार नार्थक्लिफ के अनुसार प्रमुख थे।

पत्रमें जो संपादकीय मंतव्य लिखा जाता है उसका बहुत

ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर जनता या सरकार अथवा अन्य संबद्ध संस्थाके पक्ष या विरुद्धमें इसी स्तम्भ द्वारा विचार व्यक्त किया जाता है। नार्थक्लिफका विचार था कि संपादकीयको अग्रलेख बनाना चाहिये, पश्चात् लेख नहीं। जो घटनायें नवीनतम हों, उनके सम्बन्धमें कुछ आगेका भी संकेत दिया जाय तो वह वस्तुतः उत्तम अग्रलेख कहा जायगा। 'डेलीमेल' में पुरानी घटना पर संपादकीय अग्रलेख देख उन्होंने शिकायतकी थी। भारतके पत्रोंमें तो ऐसी बात अबतक नहीं देखी जाती। किसी घटना पर संपादक एक अच्छा निबन्ध लिख देते और वही अग्रलेखका काम कर देता है। किसी किसी पत्रमें तो दूरसे डाक द्वारा दो-तीन दिन पहलेका लिखा संपादकीय अग्रलेख छपता है। यहाँ तो प्रायः एक दो ही पत्र इस प्रथाके अपवाद रहे हैं। जानकार व्यक्तियोंका कहना है कि उक्त अपवादस्वरूप पत्रोंमें मध्यरात्रिमें संपादकीय लिखा जाता रहा है। हमारे यहांके सभी पत्रोंके लिए यह ध्यान देने योग्य विषय है।

संपादकके लिए सबसे बुरा दिन वह होता है जिस दिन कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं घटती। सनसनीपूर्ण और आश्चर्यजनक घटनाओंके दिन तो आसानीसे प्रश्न हल हो जाता है। ऐसे दिनों में कोई साधारण संपादक भी अच्छा समाचारपत्र निकाल देता है। किन्तु जिस दिन सनसनीपूर्ण घटनाएं नहीं घटतीं उस दिन बिचारा क्या करे! जिस दिन कोई सरकार विघटित या संघटित नहीं होती, कोई व्यक्ति पत्नी या पिताकी हत्या नहीं करता, स्वचालित गाड़ी किसीको दबाकर सुर पुर नहीं भेजती, उस दिन उप-संपादकको अपनी बुद्धिका उपयोग करना पड़ता है। एक दिनकी बात है कि 'डेलीमेल' को एक मोटरके चूर चूर

होनेके अतिरिक्त कोई समाचार नहीं मिल पाया। नार्थक्लिफने कहा कि 'इसी पर पूरी छानबीन करो।' बादमें 'नीली मोटर-गाड़ी का रहस्य' शीर्षकके नीचे बहुत बड़ा समाचार प्रकाशित हुआ। पात:काल सभी लोग उसकी ओर आकृष्ट हुए। अन्य पत्रोंने कुछ ही पंक्तियोंमें वह समाचार प्रकाशित किया था। नार्थक्लिफका कहना था कि सार्वजनिक सफलताएं ही नहीं, विफलताएं भी उत्तम समाचारके रूपमें प्रकाशित हो सकती हैं। उनको यदि सुन्दर और आकर्षक ढंगसे उपस्थित किया जाय तो उन्हें लोग और पसन्द करेंगे। एक नाटकग्रंथकी विफलता पर नार्थक्लिफने यह समाचार प्रकाशित करवाया था—

'नाटक जो नहीं चलेगा! क्यों? किताब जो नहीं बिकेगी! क्यों?'

नार्थक्लिफ लोगोंकी मनोवृत्तिको भलीभांति समझते थे, इसमें किसीको संदेह नहीं था। इसी कलाने उन्हें वह सर्वतोमुखी प्रतिभा दी जिससे उन्होंने समाचारपत्रको उन्नतिके शिखर पर चढ़ाया। नार्थक्लिफ समाचारको पवित्र समझते थे। उसे छिपाना उनकी दृष्टिमें पाप था। देखा जाता है कि राजनीतिक क्षेत्रमें कोई उथल-पुथल हो तो उसमें कुछ पत्र पैसे लेकर पक्ष-पात करते और असत्यका प्रकाशन करते हैं। नार्थक्लिफ सत्यके प्रकाशनके पक्षमें थे। उनके सम्बन्धीकी प्रतिष्ठा पर आघात पहुँचाने वाला समाचार भी उनके पत्रमें प्रकाशित होकर ही रहता था। उनके यहां सम्बन्ध और पक्षपातकी भावना बिलकुल ही नहीं काम करती थी।

अपने समाचार-पत्रमें काम करनेवालोंकी सुविधाको वे विशेष रूपसे देखते थे जिससे अच्छा पत्र निकालनेमें उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हो। उत्तमता, विश्वसनीयता और विश्वहित

उनके मुख्य सिद्धांत थे। किसी भी पत्रकारके लिए ये तीनों सिद्धांत आवश्यक हैं। नार्थक्लिफमें पत्रकारोंके जो गुण थे वे आदर्श पत्रकारिताके लिए सर्वदा आवश्यक समझे जायंगे।